द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

सम्पादक
कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 2003
फाल्गुन 1924

ISBN 81-7450-156-8

PD 5T DRH

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2003

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी,फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016

108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे
हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

सी.डब्लू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप
पनिहटी, कोलकाता 700 114

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश
उत्पादन : डी. साई प्रसाद
अरुण चितकारा
चित्र : पी.के. सेनगुप्ता
आवरण : बालकृष्ण

रु. 40.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट, 132, मौहम्मदपुर नई दिल्ली 110 066 द्वारा मुद्रित।

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम–पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिक–विज्ञान–मानविकी–शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपम् संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमवर्गीयच्छात्राणां कृते प्रमुखेभ्यः गद्य–पद्य नाटक–ग्रन्थेभ्यः प्रतिनिधिभूतान् पाठ्यांशान् संकलय्य यथोचितं सम्पाद्य, वृक्षारोपणमहत्त्व, भूकम्पविभीषिका महापुरुष विषयकांल्ललितनिबन्धमयान् च पाठान् विरच्य भूमिका–टिप्पणी– प्रश्नाभ्यास–योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते **प्रज्ञा (द्वितीयो भागः)** नाम पाठ्यपुस्तकम्। अत्र संस्कृतसाहित्यस्य विविधविधानां गद्य–पद्य–नाटकानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलाना विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। छात्राः संस्कृते निहित जीवनोपयोगिज्ञान संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयुः तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेत् एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत–शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः

नवदेहली
फरवरी, 2003

1. प्रो विद्यानिवास मिश्र
पूर्व कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
उत्तर प्रदेश

2. प्रो आद्याप्रसाद मिश्र
पूर्व कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
उत्तर प्रदेश

3. डॉ राजेन्द्र मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
उत्तर प्रदेश

4. प्रो मानसिंह
सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्ष
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
हरियाणा

5. डॉ योगेश्वर दत्त शर्मा
रीडर, संस्कृत
हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

6. श्रीमती सन्तोष कोहली
अवकाशप्राप्त उपप्रधानाचार्या
सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्क्लेव
रोहिणी, दिल्ली

7. डॉ विजय शुक्ल
शोध अधिकारी
इ गाँ रा क केन्द्र
जनपथ, नई दिल्ली

8. श्रीमती सत्या महे
पी जी टी, संस्कृत
रा क व मा. विद्यालय
शकूरपुर न 1, दिल्ली

9. डॉ छविकृष्ण आर्य
पी जी टी, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली

10. डॉ पुरुषोत्तम मिश्र
टी जी टी, संस्कृत
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल
विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

11. डॉ सुगन्ध पाण्डेय
टी जी टी, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, बी.एच.ई.एल कैम्पस, हरिद्वार

12. श्रीमती लता अरोरा
टी जी टी., संस्कृत,
केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर–IV,
आर के पुरम्, नई दिल्ली

13. श्रीमती रेखा झा
टी जी टी, संस्कृत
दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल
सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

14. श्रीमती आभा झा
टी जी टी, संस्कृत
सर्वोदय, कन्या उ. मा विद्यालय
जे–ब्लाक, साकेत, नई दिल्ली

15. डॉ रामप्रकाश शर्मा
टी जी. टी., संस्कृत,
केन्द्रीय विद्यालय,
एयरफोर्स स्टेशन, बवाना, दिल्ली

16. श्रीमती उर्मिल खुंगर
सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर, संस्कृत

17. डॉ कृष्णचन्द्र त्रिपाठी
रीडर, संस्कृत

18. डा. कमलाकान्त मिश्र **(संयोजक)**
प्रोफेसर, संस्कृत

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। श्रद्धावश लोग इसे देववाणी या सुरभारती भी कहते रहे है जिसका अर्थ है देवताओं की भाषा। पुरातन काल से ही यह भारतीय संस्कृति, सभ्यता एव चिन्तन का मूल आधार मानी जाती है। धर्म, दर्शन, भूगोल, राजनीति एवं इतिहास का मूलस्रोत होने के साथ ही साथ संस्कृत भारतवर्ष का गौरव एव प्राण है। दर्शन एव साहित्य के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं वास्तु विज्ञान के मौलिक ग्रन्थ भी इसमे उपलब्ध हैं। यह मानवता के कल्याण के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सारी पृथ्वी एक परिवार है) की घोषणा करती है। इसमें कहा गया है --

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाक् भवेत्।।

संस्कृत साहित्य में सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, परस्पर सहयोग, त्याग एवं विश्वबन्धुत्व की भावनाओं का अजस्र स्रोत प्रवहमान है। इसीलिए यह जनमानस की संयोजिका भी है। इसमें वैदिक काल से ही साहित्य का सृजन हो रहा है जो आज भी निरंतर गतिमान है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे जितने ग्रन्थ इसमें लिखे गए हैं उतने किसी अन्य प्राचीन भाषा में नहीं मिलते है। जिन दिनों लिखने के साधन विकसित नहीं थे उन दिनों मे भी इसकी रचनाएँ मौखिक परम्परा से चलती रही हैं।

आधुनिक काल के भारतीय साहित्य का अधिकांश भाग संस्कृत साहित्य की देन है। इसीलिए इसे भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका भी कहा जाता है। संस्कृत के व्याकरण एवं वाक्य-रचना का प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं पर स्पष्ट परिलक्षित है। यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत का विशिष्ट योगदान है। अतः भारतीय भाषाओं को विकसित करने, राष्ट्रीयता को सशक्त

करने तथा विश्वबन्धुत्व की भावना को पुष्ट करने के साथ ही साथ भारत की आत्मा को समझने के लिए संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है।

संस्कृत भाषा में उपलब्ध वाङ्मय अत्यंत विशाल एवं समृद्ध है। इसके साहित्य को दो भागों में रखा जा सकता है — (1) वैदिक वाङ्मय, तथा (2) लौकिक साहित्य। वैदिक वाङ्मय वैदिक भाषा मे तथा लौकिक साहित्य संस्कृत मे प्राप्त होता है। वैदिक वाङ्मय के विकास का समय 6000 ई. पू. से 800 ई. पू. तक माना जाता है। इस अवधि में विरचित वाङ्मय के अन्तर्गत **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक** तथा **उपनिषद्** ग्रन्थ आते हैं। संहिताओं में वैदिक मन्त्रों का संग्रह है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** संहिता कहलाते हैं। संहिताओं मे जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्डपरक व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को **ब्राह्मण ग्रन्थ** कहा जाता है। चारों संहिताओ में सकलित मंत्रों की व्याख्या अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थो में की गई है। **ऐतरेय** तथा **कौशीतकि** ऋग्वेद से सम्बन्धित, **शतपथ** तथा **तैत्तिरीय** यजुर्वेद से सम्बन्धित, **ताण्ड्य** तथा **षडविंश** सामवेद से एवं **गोपथ** अथर्ववेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ है। ऋषियो के वैदिक कर्मकाण्ड से सम्बद्ध चिन्तनप्रधान ग्रन्थ **आरण्यक** कहे जाते हैं।

वैदिक साहित्य के ज्ञान-प्रधान अश को उपनिषद् कहते हैं। वैदिक वाङ्मय के अन्तिम भाग होने के कारण इन्हें '**वेदान्त**' भी कहते है। इनमें आत्मा, जीव, ईश्वर तथा ब्रह्म विषयक प्रौढ ज्ञान का विवेचन है। प्रसिद्ध उपनिषद् 12 हैं किन्तु कालान्तर में शताधिक उपनिषदो की रचना हुई। वैदिक साहित्य से सम्बद्ध शास्त्रों को वेदाङ्ग कहा जाता है। यास्क के मतानुसार वैदिक मंत्रों को समझने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए वेदाङ्गों की रचना की गई। वेदाङ्ग छ: हैं — **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष।** उच्चारण शास्त्र को **शिक्षा** कहते हैं। यज्ञ सम्बन्धी **विधान** प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ **कल्प** कहे जाते हैं। वेदो के मुख को **व्याकरण** कहा गया है। इसमें पदों की व्युत्पत्ति बतलाई गई है। वैदिक मंत्रों के शब्दार्थ को समझाने वाले ग्रन्थ **निरुक्त** हैं। पद्यबद्ध वैदिक मत्रों के नियामक वेदाङ्ग **छन्द** हैं और काल, ग्रह, नक्षत्रादि का निर्धारण करने वाला वेदाङ्ग **ज्योतिष** है।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु।।

वेदाङ्गों को वेदपुरुष के अङ्ग के रूप में इस प्रकार कल्पित किया गया है – शिक्षा को वेदपुरुष की **नासिका**, कल्प को हाथ, ज्योतिष को **आँख**, निरुक्त को **कान**, छन्द को **पैर** तथा व्याकरण को **मुख** कहा गया है।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।।

वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य के बीच की कड़ी **पुराण** माने जाते हैं। पुराणो में वैदिक प्रतीक तथा पुरातन घटनाओं का वर्णन मिलता है। सामान्यरूप से व्यास को सभी पुराणों का रचयिता माना गया है। सम्भवतः पुराण साहित्य के समस्त रचनाकारों को **व्यास** कहा गया है। पुराण का लक्षण है –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

अर्थात् सृष्टि, प्रलय, वंशावली, मन्वन्तर (अर्थात् किस मनु का समय कब रहा तथा उस काल की प्रमुख घटनाएँ क्या थी) तथा राजाओं की वंश परम्परा का वर्णन ही पुराणों के वर्ण्य विषय रहे हैं। पुराणों को इतिहास के रूप मे भी देखा जा सकता है जिसका उद्देश्य समाज में सद्वृत्तियों की प्रेरणा प्रदान करना है। 18 मुख्य पुराण तथा 18 उपपुराण हैं। मुख्य पुराण –

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापल्लिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

अर्थात्

मकार से दो पुराण – **मत्स्य एवं मार्कण्डेय।**
भकार से दो पुराण – **भविष्य और भागवत।**
'ब्र' से तीन पुराण – **ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त एवं ब्रह्म।**
वकार से चार पुराण – **वामन, वराह, विष्णु एवं वायु।**
अकार से एक पुराण – **अग्नि पुराण।**
नकार से एक पुराण – **नारद पुराण।**

पकार से एक पुराण — **पद्म पुराण।**
लि से एक पुराण — **लिङ्गपुराण।**
गकार स एक पुराण — **गरुड़ पुराण।**
कूकार से एक पुराण — **कूर्म पुराण।**
'स्क' से एक पुराण — **स्कन्द पुराण।**

इसके अतिरिक्त **नृसिंह, कालिका, साम्ब, पराशर** तथा **सूर्य** प्रमुख उपपुराण माने जाते हैं। पुराण साहित्य भी परवर्ती कवियों के उपजीव्य तथा प्रेरक रहे है।

संस्कृत साहित्य के विकास की परम्परा मे नए अध्याय का श्रीगणेश आदिकवि वाल्मीकि से होता है जिन्होने मर्यादापुरुषोत्तम राम के चरित्र को केन्द्रबिन्दु मानकर **रामायणम्** की रचना की। यह भारतीय संस्कृति का दर्पण ग्रन्थ है। इसका वर्णन सात काण्डो (बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध तथा उत्तर काण्डो) मे हुआ है। इसी तरह कौरवो एव पाण्डवों के जन्म से लेकर स्वर्गगमन तक की कथा का वर्णन करते हुए वेदव्यास ने महाभारत नामक महाग्रन्थ की रचना की, जिसमें मानव जीवन की प्रत्येक स्थिति का स्पष्ट चित्रण है। अनेक आख्यानो एव उपाख्यानों से युक्त इस महाग्रन्थ में वर्णित तत्कालीन समाज की जीवन पद्धति आज भी जनमानस को दिशानिर्देश करती है। इसकी सम्पूर्णता के विषय में कहा जाता है कि **"यन्न भारते तन्न भारते"** तथा **"यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्"** अर्थात् जो कुछ इसमे है वह अन्यत्र भी है किन्तु जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है। 18 पर्व मे विभक्त इस महाग्रन्थ मे एक लक्ष श्लोक है। इसको **शतसाहस्री** भी कहा जाता है। रामायण और महाभारत उपजीव्य ग्रन्थ हैं जिन्हें आधार मानते हुए परवर्ती कवियों ने अनेक रचनाएँ की है।

इसी क्रम मे कविकुलगुरु कालिदास के अभ्युदय से लेकर 19वी शताब्दी के पंडित अम्बिकादत्त व्यास तक अनेक कवियों एवं महाकवियों की असंख्य रचनाएं (महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नीतिकथा, चम्पू, नाटक तथा शास्त्रीय ग्रन्थो के रूप मे) प्रकाश में आयी। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक कोश, छन्द, व्याकरण दर्शन, राजनीति, नीति, शिल्प, रत्न, चिकित्सा एवं काव्य ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की गौरवमयी परम्परा भी संस्कृत वाङ्मय को समृद्ध बनाती हैं।

19वीं शताब्दी के अनन्तर भी संस्कृत कवियो एव उनकी कृतियों की विपुल ग्रन्थराशि निरन्तर प्रकाश में आ रही है जो संस्कृत वाड्मय को जीवन्त एवं समृद्ध कर रही है।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा 2000 के आलोक मे माध्यमिक स्तर पर (कक्षा 9 -10 के लिए) वैकल्पिक विषय के रूप में विकसित सस्कृत पाठ्यक्रम के अनुरूप कक्षा 10 के लिए **प्रज्ञा द्वितीयो भागः** का प्रणयन किया गया है। छात्रों के संस्कृत ज्ञान को पुष्ट करने, उनमे राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर नैतिक मूल्यों के विकास हेतु इसमें सस्कृत वाड्मय की प्रसिद्ध रचनाओं पञ्चतन्त्र, विदुरनीति (महाभारत), सुश्रुतसंहिता, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, भामिनीविलास, कादम्बरी तथा पञ्चरात्रम् से पाठ्यांश लिए गए हैं। **वन्दना** में ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद से मन्त्र सकलित हैं। संस्कृत कवियों के कतिपय सद्वचनों को **अमृतविन्दवः** नामक पाठ के अन्तर्गत संगृहीत किया गया है। **वृक्षारोपणमहत्त्वम्** नामक पाठ मे बृहदारण्यक उपनिषद् से दो मत्र उद्धरण के रूप में लेकर पाठ को विशेष उपयोगी बनाया गया है।

प्रस्तुत संकलन में कुल 12 पाठ रखे गए है जिनमें 9 पाठ उपर्युक्त ग्रन्थों से तथा तीन पाठ निबन्ध के रूप में समाविष्ट किए गए है। पाठ्यांशों को यथासंभव मूलरूप में ही लिया गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए उन्हें यथायोग्य सम्पादित कर सरल करने का प्रयास किया गया है। तीन पाठ (**स्वामी विवेकानन्दः**, **वृक्षारोपणमहत्त्वम्** तथा **भूकम्पविभीषिका**) ललित निबन्ध के रूप में लिखे गए हैं। संस्कृत वाड्मय के जिन ग्रन्थों से पाठ्याश लिए गए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. पञ्चतन्त्रम् – नीति की शिक्षा देने वाले संस्कृत कथा-ग्रन्थों में पञ्चतन्त्रम् का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी रचना विष्णुशर्मा ने महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरसिंह के तीन मूर्ख पुत्रो को छः मास में राजनीति और व्यवहार में पटु बनाने के लिए की है। मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक इसके पाँच तन्त्र या खण्ड हैं। इसमे कुल सत्तर कथाएं मिलती हैं। इस ग्रन्थ में कथाओ को परस्पर

गूँथकर इस प्रकार रखा गया है जिससे एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत हो जाता है। एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत करना इसकी प्रमुख विशेषता है। पञ्चतन्त्र का स्वरूप गद्य–पद्यात्मक है। सामान्य रूप से कथा गद्य में है तथा नैतिक शिक्षा पद्य में वर्णित है।

2. मुद्राराक्षसम् – विशाखदत्त द्वारा रचित इस नाटक में सात अंक हैं। **मुद्रा** के द्वारा राक्षस को वश मे करने के कारण इसका नाम मुद्राराक्षस है। नन्द राजाओं का विनाश करने के बाद चाणक्य चन्द्रगुप्त को राजसिंहासन पर आरूढ़ कराता है। अपनी कूटनीति के बल पर वह नन्दवंश के स्वामिभक्त अमात्य राक्षस को चन्द्रगुप्त का मंत्री बनने के लिए विवश कर देता है। इस कार्य मे चाणक्य की गुप्तचर व्यवस्था तथा राक्षस की मुद्रा से अंकित–एक लेख की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें चाणक्य की कूटनीति तथा राक्षस की साधारण नीति के बीच हुए राजनीतिक द्वन्द में चाणक्य की विजय होती है। चाणक्य के त्याग और राष्ट्रभक्ति का आदर्श अनुकरणीय है।

3. विदुरनीतिः (महाभारत) – संस्कृत साहित्य के उपलब्ध नीतिग्रन्थो में विदुरनीति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें महात्मा एवं ज्ञानी विदुर के लोकोपयोगी सद्विचारों एवं नीतियो का संग्रह है। इसमें नौ अध्याय हैं। महात्मा विदुर के वचन मानव-मात्र के दैनिक जीवन में आने वाली विसंगतियों का समाधान प्रस्तुत करते हैं। विदुरनीति वास्तव में महाभारत का ही अंश है। एक लाख श्लोकों में वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इसे **शतसाहस्रीसंहिता** तथा पंचम वेद भी कहा जाता है। यह धर्म, राजनीति तथा दर्शन का अद्भुत कोश है जिसमे कौरवों और पाण्डवों के बीच हुए युद्ध का सविस्तार वर्णन है। इसमें पाण्डवों की ओर से मन्त्रात्मक सहायता करने वाले कृष्ण की प्रमुख भूमिका थी। अतएव इस ऐतिहासिक काव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। यह ग्रन्थ 18 पर्वों में विभक्त है– (1) आदि, (2) सभा, (3) वन, (4) विराट, (5) उद्योग, (6) भीष्म, (7) द्रोण, (8) कर्ण, (9) शल्य, (10) सौप्तिक, (11) स्त्री, (12) शान्ति, (13) अनुशासन, (14) आश्वमेधिक, (15) आश्रमवासिक, (16) मौसल, (17) महाप्रस्थानिक, तथा (18) स्वर्गारोहण। इसके परिशिष्ट के रूप में **हरिवंश पर्व** है। इसकी पृष्ठभूमि पर आधारित आगे चलकर अनेक ग्रन्थों की रचनाएँ हुई हैं।

4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – यह महाकवि कालिदास की अमर नाट्यकृति है। सात अंकों वाले इस नाटक मे हस्तिनापुर नरेश दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। इसका चतुर्थ अंक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उसमें भी वर्णित चार श्लोक अतिविशिष्ट महत्त्व के हैं। अभिज्ञान शब्द का अर्थ है पहचान। दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त शकुन्तला को भूल जाता है। जिससे शकुन्तला को भारी कष्ट उठाना पडता है। अन्त मे अंगूठी (अभिज्ञान) के मिलने पर उसे शकुन्तला का स्मरण आ जाता है। सातवें अंक मे इन्द्र के निमन्त्रण पर राक्षसों का वध कर लौटते हुए दुष्यन्त मार्ग में मरीचि-आश्रम मे रुकते हैं। वहाँ सिंहशावक के साथ खेलने वाले बच्चे (भरत) के हाथ में ताबीज बाँधते है वही पर उनका शकुन्तला के साथ पुनर्मिलन होता है।

5. कादम्बरी – महाकवि बाण सस्कृत साहित्य के महानतम कवि हैं। काव्य तथा नाटक के क्षेत्र मे जो यश कालिदास को प्राप्त है वही यश गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को मिला है। उनकी कृति कादम्बरी सस्कृत साहित्य में रस, अंलकार, गुण, रीति का औचित्य पूर्ण प्रयोग की दृष्टि से उत्कृष्ट गद्य रचना है। इसमें कवि ने मानव जीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि रखी है। इसलिए आलोचको ने एक स्वर से कहा है कि बाण ने पूरे संसार को जूठा कर दिया है **(बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्)** इसमे कादम्बरी तथा चन्द्रापीड की प्रेमकथा का सरस वर्णन है। कल्पना आश्रित कथानक होने के कारण कादम्बरी कथा नामक गद्य–काव्य है।

6. भामिनीविलास – संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट कवि तथा काव्यशास्त्री पण्डितराज जगन्नाथ सर्वाधिक चर्चित साहित्यकार हैं। ये आन्ध्रप्रदेशीय तैलङ्ग ब्राह्मण थे। इन्होंने अपने सर्वविद्या कुशल पिता से ही शास्त्रों का अध्ययन किया था। मुगल नरेश शाहजहॉ ने अपने बडे पुत्र दाराशिकोह की संस्कृत शिक्षा के लिए इन्हें नियुक्त किया था तथा उन्हें **"पण्डित राज"** की उपाधि दी थी। "भामिनीविलास" पण्डितराज जगन्नाथ के मुक्तक पद्यों का सग्रह है। इसमें चार भाग (विलास) हैं, **अन्योक्ति या प्रास्ताविक, शृङ्गार, करुण** तथा **शान्तविलास**। कुछ विद्वानों ने इनकी पत्नी का नाम **"भामिनी"** माना है। भामिनी विलास के प्रथम भाग (अन्योक्तिविलास) में सिंह, हंस, कमल, मधुकर, चन्दन, मेघ तथा समुद्र आदि को लक्षित कर सुन्दर तथा भावपूर्ण अन्योक्तियॉ दी गयी हैं।

7. पञ्चरात्रम् – संस्कृत नाटककारो मे भास वह जाज्वल्यमान मणि हैं जिनकी कीर्ति–कौमुदी सुदूर दक्षिण से लेकर ध्रुव उत्तर तक एवं प्राची से प्रतीची तक सम्पूर्ण भारतखण्ड मे चमकती रही। इनके द्वारा रचित **पञ्चरात्रम्** का कथानक महाभारत से लिया गया है। महाभारतीय कथा को आधार बनाकर भास ने पञ्चरात्र की रचना की है, इसमें दुर्योधन के यज्ञ मे द्रोणाचार्य का आचार्यत्व तथा द्रोणाचार्य को दक्षिणा में पाण्डवों का राज्यार्धयापन का प्रस्ताव किन्तु शकुनि द्वारा न दिए जाने का प्रपञ्च, कौरवों द्वारा विराट की गायो का हरण, अभिमन्यु का कौरवों की ओर से युद्ध करना, छद्मवेश मे लडते हुए अर्जुन द्वारा कौरवों की पराजय तथा अभिमन्यु का भीम द्वारा हरण प्रभृति घटनाओ का तीन अकों में वर्णन है।

8. सुश्रुतसंहिता -- उपलब्ध आयुर्वेदीय सहिताओं में सुश्रुत संहिता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। चरक के समान आचार्य सुश्रुत की कीर्ति विदेशो मे भी फैली थी। इसमें छ: खण्ड– 1. सूत्रस्थान (46 अध्याय), 2. निदानस्थान (16 अध्याय), 3. शारीरस्थान (10 अध्याय), 4 चिकित्सास्थान (40 अध्याय), 5. कल्प स्थान (8 अध्याय), तथा 6. उत्तर तन्त्र (66 अध्याय) हैं जिनमें क्रमशः शल्यकर्म तथा यन्त्र एवं शस्त्र के प्रयोग, शल्य विषयक रोगों के प्रकार, स्वस्थकृत एवं सद्वृत्त, विषचिकित्सा तथा नेत्र, कर्ण, नासिका शिर के रोगों, बालग्रह-शान्ति तथा कायरोगो की चिकित्सा का वर्णन है। सुश्रुत-संहिता की ख्याति प्राचीन शल्य-चिकित्सा की प्रस्तुति के कारण बहुत अधिक हैं।

12 पाठों की यह पुस्तक दो सत्रों की परीक्षा के लिए विकसित की गई है। पुस्तक को रुचिकर बनाए रखने के लिए इसमें पद्य, नाटक, कथा तथा निबन्ध पाठों को विविधता के क्रम में समायोजित किया गया है। पाठों के साथ आवश्यक चित्र देकर पाठ्यवस्तु को रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है।
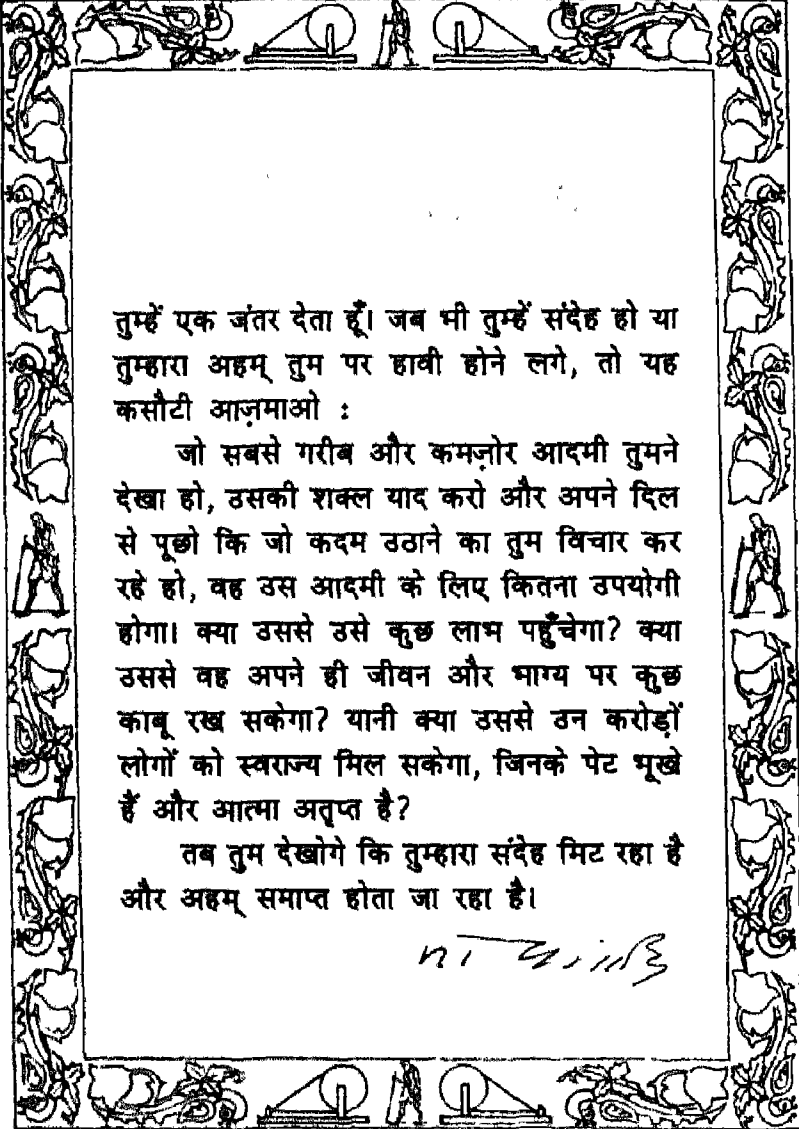
पाठों के आरम्भ मे पाठ संदर्भ दिया गया है, जिससे पाठ्यांशों के प्रसग से परिचित होकर छात्र पाठ को सरलता से हृदयंगम कर सकें। अर्जित ज्ञान के दृढीकरण एवं परीक्षण के लिए वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरीय तथा रचनात्मक अभ्यास–प्रश्न दिए गए हैं। छात्रों की संस्कृत में अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए प्रत्येक पाठ के साथ मौखिक प्रश्न दिए गए हैं। पाठों में आए नवीन एवं कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं। **'अस्माभिः किमधीतम्'** शीर्षक के अन्तर्गत पाठ के मुख्य बिन्दुओं को साररूप मे स्पष्ट

किया गया है। योग्यता विस्तार के अन्तर्गत ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार का सरल सस्कृत मे परिचय देकर छात्रों को (ज्ञान की अग्रिम दिशा की ओर) उन्मुख करने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक केअन्त में **शब्दार्थः** शीर्षक केअन्तर्गत समस्त कठिन शब्दों के (व्याकरणात्मक टिप्पणी सहित) सस्कृत तथा हिन्दी मे अर्थ (छात्रो मे शब्दकोश देखने की प्रवृत्ति को विकसित करने के उद्देश्य से) दिए गए हैं।

इस संकलन द्वारा छात्रों को यथासंभव सस्कृत की शिक्षा संस्कृत माध्यम से प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। फिर भी पाठ-परिचय तथा शब्दों के अर्थ हिन्दी में देकर सस्कृत शिक्षण को सुगम एव व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया गया है।

विगत वर्षों में संस्कृत अध्ययन-अध्यापन की परम्परा पर दृष्टिपात कर ऐसा अनुभव किया गया है कि इस स्तर पर संस्कृत अध्ययन के लिए व्याकरण एवं अनुवाद विधि का उपयोग हो रहा है, जिससे छात्रों को संस्कृत भाषा का अपेक्षित ज्ञान नहीं हो पाता है। विशेषरूप से वे अपने आपको तथा पठित विषय को संस्कृत में अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। एतदर्थ व्याकरण एवं अनुवाद विधि के स्थान पर प्रत्यक्ष विधि को उपयोग में लाना उपयोगी होगा। किन्तु उपलब्ध कालांशों एवं अध्ययन में लगने वाले समय को ध्यान मे रखते हुए प्रत्यक्ष विधि से संस्कृत पढना छात्रों को अरुचिकर होने के साथ ही साथ श्रमसाध्य एवं अव्यावहारिक हो सकता है। अतः छात्रों की अधिकाधिक सुगमता को ध्यान मे रखते हुए **प्रत्यक्ष, व्याकरण** एवं **अनुवाद** पद्धतियों की **समन्वित विधि** को अपनाकर सस्कृत का अध्यापन करना समीचीन होगा ताकि छात्रों के संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि इस संकलन को छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि छात्रों के लिए इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी सस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेगे।

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओ, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय मे सजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओ का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका सवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियो के सभी क्षेत्रो मे उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु।।

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

1. मेधावी लोग इन (आदित्य) को इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहा करते है। ये दिव्य पक्ष वाले (गरुड) और सुन्दर गमन वाले हैं। ये एक हैं तो भी इन्हें अनेक कहा गया है। इन्हें अग्नि, यम और मातरिश्वा कहा जाता है।

2. भारती जनों के साथ अग्निरूप भारती आये, देवों और मनुष्यों के साथ इळा आयें, अग्नि भी आयें। सारस्वत गणों (अन्तरिक्षस्थ वाक्) के साथ सरस्वती भी आयें। ये तीनों देवियाँ आकर इस (सम्मुखस्थ) कुश पर बैठें।

3. यह जो परम स्थान में स्थित वाग्देवी हैं, जो ब्रह्म के द्वारा रचित (तेजयुक्त) की गई हैं, जिससे घोर (महान्) परिणाम होता है, वह हमारे लिए शान्ति देवे।

4. जो प्रकाशवान् मन जाग्रत पुरुष से दूर गमन करता है तथा सोते हुए के समीप उसी प्रकार आगमन करता है और जो दूरगामी मन सभी ज्योतियों (इन्द्रियों) का एकमात्र प्रकाशक है, मेरा वह मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

प्रथमः पाठः
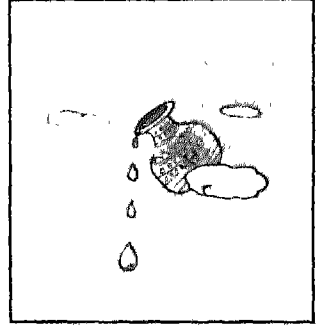
(संस्कृत कृतियों में उदात्त भावों एवं सार्वभौम सत्य को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। ऐसे पद्यों एवं पद्यांशों को सुभाषित कहते हैं। प्रस्तुत पाठ नौ सुभाषित पद्यों का संग्रह है, जिनमें मन, वचन तथा कर्म में सज्जनों का ऐक्य, स्वाभाविक मैत्री, श्रेष्ठ लोगों के मार्ग पर चलने में दुःखाभाव, विपत्ति आने से पूर्व ही उससे बचने के उपाय को जानना, श्रेष्ठ संगति का प्रभाव, गर्व न करना, सद्वचनों के पालन न करने से हानि, सतत् कार्यशील रहना, शरीर का पोषण करने वाले तथा मन एवं शरीर को दूषित करने वाले भावों का सरलता से बोध कराया गया है।)

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।।1।।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता।।2।।

मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरंगैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम्।।3।।

अनुगन्तुं सतां वर्त्म कृत्स्नं यदि न शक्यते।
स्वल्पमप्यनुगन्तव्यं मार्गस्थो नावसीदति।।4।।

चिन्तनीया हि विपदामादावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।।5।।

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः।।6।।

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटः घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।।7।।

सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम्।
विपत्सन्निहिता तस्य स नरः शत्रुनन्दनः।।8।।

शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्।
शनैर्विद्या शनैः वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः।।9।।

निर्गुणः	–	गुणहीनः	–	गुणरहित
वेत्ति	–	जानाति	–	जानता है
पिकः	–	कोकिल	–	कोयल
वायसः	–	काक	–	कौआ
करी	–	गजः	–	हाथी
वाचः	–	वचनानि	–	वाणी
साधूनाम्	–	सज्जनानाम्	–	सज्जनो की
एकरूपता	–	ऐक्यम्, अभेदः	–	समरूपता
अनुव्रजन्ति	–	अनुगच्छन्ति	–	पीछे–पीछे जाते हैं
तुरगाः	–	अश्वाः	–	घोडे
सुधियः	–	बुद्धिमन्तः	–	बुद्धिमान् लोग
समानशीलव्यसनेषु	–	समाचरणस्वभावेषु	–	एक–जैसे आचरण और स्वभाव वालों मे
सख्यम्	–	मैत्री	–	मित्रता
सताम्	–	सज्जनानाम्	–	सज्जनो का
वर्त्म	–	मार्गः	–	रास्ता

कृत्स्नम्	–	निखिलम्	–	सम्पूर्ण
अनुगन्तव्यम्	–	अनुसर्तव्यम्	–	अनुसरण करने योग्य, अनुकरण करना चाहिए
अवसीदति	–	दुःखी भवति	–	दुःखी होता है
प्रतिक्रिया	–	प्रतिकारम्	–	उपाय
कूपखननम्	–	कूपस्य खननम्	–	कुऑ खोदना
वह्निना	–	अग्निना	–	आग से
प्रदीप्ते	–	ज्वलिते	–	जलने पर
सुमनः सङ्गात्	–	पुष्पाणां ससर्गात्	–	फूलो के सग से
आरोहति	–	उपरि गच्छति	–	ऊपर चढ जाता है
शिरः	–	मूर्धानम्	–	सिर को
अश्मा	–	पाषाण.	–	पत्थर
सुप्रतिष्ठितः	–	आदृतः	–	सम्मानित
महद्भिः	–	महापुरुषैः	–	महापुरुषों द्वारा
घोषमुपैति	–	घोष, शब्द करोति	–	आवाज करता है
जल्पन्ति	–	व्यर्थ वदन्ति	–	व्यर्थ बोलते है
सुहृदाम्	–	मित्राणाम्	–	मित्रो की
भाषितम्	–	कथितम्	–	कही हुई बात
सन्निहिता	–	समीपस्था	–	समीप ही रहती है
पन्थाः	–	मार्ग	–	रास्ता
कन्था	–	जीर्ण वस्त्रम्	–	पुराना, कटा–फटा वस्त्र

- गुणी गुण बली च बल जानाति नान्य.।
- विचारे वचसि कर्मणि च सज्जनानाम् एकरूपता भवति।
- समानशीलव्यसनेषु एवं सख्यम्।

- स्वल्पम् अपि अनुसृतं सतां मार्गं मानवं कदापि न अवसादयति (दुःखयति)।
- आपदाम् प्रतिकार. पूर्वम् एव चिन्तनीय.।
- नीचोऽपि महतां सङ्गत्या उन्नति गच्छति।
- कुलीनो विद्वान् विनीतो भवति परन्तु गुणहीना. मूर्खाः आत्मानं व्यर्थ प्रशंसन्ति।
- य. मित्राणा हितकारीणि वचासि न अवधारयति स विपद्ग्रस्त. शत्रुसुखवर्धक. च भवति।
- पन्था· शनैः लङ्घनीयः, कन्था शनै. धारणीयः, पवर्तलघनं शनै· कर्तव्यं, विद्या वित्त च शनै· प्राप्तव्ये।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

क गुणं कः वेत्ति ?

ख. केषां चित्ते वाचि क्रियायाम् च एकरूपता भवति।

ग गवा सख्यं काभिः सह भवति ?

घ वह्निना प्रदीप्ते गृहे किं न युक्तम् ?

ङ. महद्भिः सुप्रतिष्ठितः क देवत्व याति ?

च सम्पूर्णकुम्भः किं न करोति ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. सख्यं केषु भवति ?

ख यदि सतां कृत्स्नं वर्त्म अनुगन्तु न शक्यते तर्हि वि कर्त्तव्यम् ?

ग. विपदाम् आदौ एव किं कर्त्तव्यम् ?

घ. कीटोऽपि सतां शिरः कथम् आरोहति ?

ङ. कुलीनः विद्वान कि न करोति ?

च. कानि पञ्च शनै. शनै ?

2. सन्धिं / सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–

क. निः	+	बलः	=	________
________	+	________	=	निर्गुणः
वाच.	+	तथा	=	________
________	+	________	=	गावश्च
________	+	________	=	तुरगास्तुरंगैः
आदौ	+	एव	=	________
________	+	________	=	अप्यनुगन्तव्यम्
पञ्च	+	एतानि	=	________
न	+	अस्ति	=	________

3. अधोलिखितवाक्येषु षष्ठ्यन्तानि पदानि प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

क. पिको ________ गुणं न वायस.।

ख. चित्ते वाचि क्रियायां च ________ एकरूपता।

ग. ________ वर्त्म स्वल्पम् अपि अनुगन्तव्यम्।

घ. कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति ________ शिरः।

ङ. हितकामानां ________ भाषितं यो न शृणोति सः शत्रुनन्दनः।

4. श्लोकानाम् अपूर्णः अन्वयः अधः दत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

क. सम्पूर्णकुम्भः ________ न करोति, अर्धः घट. नूनम् ________ । कुलीनः गर्वं न करोति, ________ मूढा. तु जल्पन्ति।

ख. य· ________ सुहृदां भाषितं न ________ तस्य विपत् ________ स नरः ________ (अस्ति)।

ग. विपदा ________ हि प्रतिक्रिया। वह्निना ________ प्रदीप्ते ________ न युक्तम्।

घ. गुणी गुणं ________ निर्गुणः न वेत्ति ________ बलं वेत्ति निर्बलः न वेत्ति। ________ गुणं पिकः (जानाति) न वायसः। सिंहमस्य बलं ________ न मूषकः।

5. पाठमाधृत्य तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत–

क यत्र सप्तमी विभक्तिः नास्ति –
वाचि, क्रियायाम्, अवसीदति, गृहे

ख. यत्र तृतीया विभक्तिः नास्ति –
मृगैः, तुरङ्गैः, शनैः, महद्भिः

ग यत्र इन् (णिनि) प्रत्ययः न प्रयुक्तः –
गुणी, विहीनः, करी, बली

घ यत्र लट्लकारः न विद्यते –
शृणोति, वाचि, याति, करोति

6. अ. मञ्जूषातः पर्यायपदानि विचित्य पदानां समक्षं लिखत–

काकः, कोकिलः, गजः, वेश्मनि, वचनम्, मूढः, मार्गः, अग्निः, धनम्, दुर्बलाः

क. गृहे ____________

ख करी ____________

ग. निर्बलाः ____________

घ. भाषितम् ____________

ङ वह्निः ____________

च वायसः ____________

छ. वित्तम् ____________

ज. पिकः ____________

झ मूर्खः ____________

ञ. पन्थाः ____________

आ. अधोलिखितेषु पदेषु मञ्जूषायाम् लिखिताः प्रत्ययाः प्रयुक्ताः इति उदाहरणमनुसृत्य प्रत्येकपदस्य पदपरिचयं लिखत–

प्रत्ययाः

ल्युट्, त्व, तव्यत्, क्त, अनीयर्

यथा – प्रदीप्त प्र उपसर्ग + दीप् धातु. + क्त प्रत्ययः

क खननम् ____________

ख भाषितम् ____________

ग देवत्वम् ______________________

घ चिन्तनीया ______________________

ङ. अनुगन्तव्यम् ______________________

च. सुप्रतिष्ठित· ______________________

छ. लब्धधनम् ______________________

7. **अधोलिखितवाक्यगतानि स्थूलपदानि निर्दिष्टवचनेषु परिवर्तयत–**

क. **गुणी** गुण **वेत्ति** (बहुवचने)

ख. **मृगाः मृगैः** सह **अनुव्रजन्ति** (एकवचने)

ग. सुधिय· **सुधीभिः** सह **अनुव्रजन्ति** (द्विवचने)

घ **सम्पूर्णकुम्भः** शब्द न **करोति** (बहुवचने)

ङ **चित्ते वाचि क्रियायां** च **सज्जनस्य** एकरूपता भवति। (बहुवचने)

[illegible]
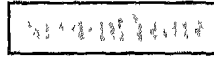
पाठपरिचयः

अस्मिन् पाठे नवश्लोकाः विविधग्रन्थेभ्य सङ्कलिताः। इमे श्लोकाः अमृततुल्याः सन्ति। ये जीवने एतेषा श्लोकानां सारं गृह्णन्ति तदनुसारम् च आचरन्ति ते अमरपद प्राप्नुवन्ति।

[illegible]

सत्सङ्गतिः

1 महाजनस्य ससर्ग· कस्य नोन्नतिकारक
पद्मपत्रस्थित वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।

2 चन्दन शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसगतिः।।

गुणप्रशंसा

1. गुणा. कुर्वन्ति दूतत्व दूरेऽपि वसतां सताम्।
   केतकीगन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदाः।।
2. गुणवज्जनसपर्कात् याति स्वल्पोऽपि गौरवम्।
   पुष्पाणामनुषङ्गेण सूत्र शिरसि धार्यते।

एकरूपता

1. मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
   मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।
2. अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
   तदेवाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः।।

सख्यम्

1. उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
   राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।
2. यस्य मित्रेण संभाषा यस्य मित्रेण संस्थितिः।
   मित्रेण सह यो भुङ्क्ते ततो नास्तीह पुण्यवान्।।

विद्या

1. विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्
2. विद्याविहीनः पशुभिः समानः
3. अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति।
   व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।।

भाषिकः पक्षः – अधोलिखितानां शब्दानां रूपाणि ध्यातव्यानि–

गुणी	–	गुणिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	गुण	+	इन्	=	गुणिन्
बली	–	बलिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	बल	+	इन्	=	बलिन्
करी	–	करिन्	+	प्रथमा एकवचनम्	कर	+	इन्	=	करिन्

विभक्तिप्रयोगे लिङ्गानुसारं शब्दानुसारं वा अन्तरं पश्यत।

वर्त्म	–	वर्त्मन् नपुंसकलिगे प्रथमा विभक्ति, वर्त्म वर्त्मनी वर्त्मानि,
अश्मा	–	अश्मन् " पुल्लिंग प्रथा विभक्ति, अश्मा अश्मानौ अश्मानः

मूर्खैः	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
तुरगैः	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
मृगैः	—	अकारान्त तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
गोभिः	—	गो " तृतीया बहुवचनम् (स्त्रीलिङ्ग)
सुधीभिः	—	सुधी " तृतीया बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)

सप्तमी विभक्तिः

वाचि	=	वाक् सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग)
आदौ	=	आदि सप्तमी (पुल्लिङ्ग)
गृहे	=	गृह सप्तमी (नपुसकलिङ्ग)
क्रियायाम्	=	क्रिया सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग)

षष्ठी विभक्तिः

सताम्	=	सत् षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
विपदाम्	=	विपद् षष्ठी बहुवचनम् (स्त्रीलिङ्ग)
साधूनाम्	=	साधु षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
सुहृदाम्	=	सुहृद् षष्ठी बहुवचनम् (पुल्लिङ्ग)
शिरः	=	शिरस् द्वितीया एकवचनम् (नपुंसकलिङ्ग)

द्वितीयः पाठः

लौहतुला

(प्रस्तुत कथा विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्रम्' नामक कथाग्रन्थ के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से सङ्कलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से मांगता है। "तराजू चूहों ने खा ली है" सेठ के मुख से यह सुनकर वह उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि "पुत्र को बाज उठा ले गया है।" इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी इन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।)

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयादेशान्तरं गमनमना व्यचिन्तयत् –

> यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ता स्ववीर्यतः।
> तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः।।

तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूताम् कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं

देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरमागत्य तं श्रेष्ठिनमुवाच —" भोः श्रेष्ठिन् ! दीयताम् मे सा निक्षेपतुला।" स आह – "भोः ! नास्ति सा, त्वदीया तुला भूषकैर्भक्षिता" इति।

जीर्णधन आह – "भोः श्रेष्ठिन् ! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति। ईदृगेवायं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वमात्मीयं शिशुमेनम् धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति।

सः श्रेष्ठी स्वपुत्रमुवाच – "वत्स ! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् गम्यतामनेन सार्धम्" इति।

अथासौ वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहच्छिलयाच्छाद्य सत्त्वरं गृहमागतः।

पृष्टश्च तेन वणिजा – "भोः ! अभ्यागत ! कथ्यतां कुत्र मे शिशुर्यस्त्वया सह नदीं गतः"? इति।

स आह – "नदीतटात्सः श्येनेन हृतः" इति। श्रेष्ठ्याह – मिथ्यावादिन् ! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति ? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।" इति।

स आह – भोः सत्यवादिन् ! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषकाः अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।" इति।

एवं विवदमानो तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच – भोः ! अब्रह्मण्यम् ! अब्रह्मण्यम् ! मम शिशुरनेन चौरेणापहृतः।" इति।

अथ धर्माधिकारिणस्तमूचुः – "भोः ! समर्प्यताम् ! श्रेष्ठिसुतः"।

स आह – "किं करोमि ? पश्यतो मे नदीतटाच्छ्येनेन अपहृतः शिशुः"। इति

तच्छ्रुत्वा ते प्रोचुः – "भोः ! न सत्यमभिहितं भवता – किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

स आह – भोः भोः ! श्रूयतां मद्वचः –

तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः।
राजंस्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।

ते प्रोचुः – "कथमेतत्"

ततः सः श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास। ततस्तैर्विहस्य द्वावपि तौ परस्परं संबोध्य तुला–शिशु–प्रदानेन सन्तोषितौ।

अधिष्ठाने	–	स्थाने	–	स्थान पर
विभवक्षयात्	–	धनाभावात्	–	धन के अभाव के कारण
स्ववीर्यतः	–	स्वपराक्रमेण	–	अपने पराक्रम से
लौहघटिता तुला	–	लौहनिर्मिता तुला	–	लोहे से बनी हुई तराजू
निक्षेपः	–	न्यासः	–	धरोहर
भ्रान्त्वा	–	भ्रमणं कृत्वा (देशाटनं कृत्वा)	–	पर्यटन करके
त्वदीया	–	तव, भवदीया	–	तुम्हारी
ईदृक्	–	एतादृशः	–	ऐसा ही
एनम्	–	एतम्/एनम्–पु द्वि एकवचने उभे एव रूपे भवतः।	–	एतत् शब्द पु मे द्वि एकव में एतत्/एनम् दोनों ही रूप होते हैं।
आत्मीयम्	–	आत्मन् शब्द – 'छ' तदर्थम् ईय प्रत्ययः	–	अपना
स्नानोपकरणहस्तम्	–	स्नानस्य उपकरणम्	–	जिसके हाथ में स्नान का उपकरण है।
		इति स्नानोपकरणम् स्नानोपकरणं हस्ते यस्य सः, तम्	–	उसको
भक्त्या	–	श्रद्धया	–	श्रद्धापूर्वक
मुक्त्वा	–	त्यक्त्वा	–	छोड़कर
वणिजा	–	व्यापारिणा	–	व्यापारी के द्वारा
श्येनः	–	हिंसक प्रवृत्तिकः पक्षिविशेषः	–	बाज

समर्पय	— देहि	— दो
विवदमानौ	— कलह कुर्वन्तौ	— झगडा करते हुए
तारस्वरेण	— उच्चस्वरेण	— जोर से
ऊचुः	— अवदन्	— बोले
अभिहितम्	— कथितम्	— कहा गया है।
मद्वचः	— मम वचनानि	— मेरे वचन
आदितः	— प्रारम्भतः	— आरम्भ से
निवेदयामास	— निवेदनमकरोत्	— निवेदन किया
विहस्य	— हसित्वा	— हँस कर
संबोध्य	— बोधयित्वा	— समझा बुझा कर बताता हूँ

अभ्यासे. किमधीतम् ?

- जीर्णधन नाम वणिक्पुत्र पूर्वपुरुषोपार्जिताम् तुलाम् कस्यचित् श्रेष्ठिनः गृहे निक्षेपरूपेण स्थापयित्वा देशान्तरम् अगच्छत्।
- सुचिरेण कालेन प्रत्यागत. स श्रेष्ठिनम् स्वतुलाम् अयाचत्।
- श्रेष्ठि अवदत् मूषकै भक्षिता तुला।
- श्रेष्ठिन· अनुमत्या जीर्णधन· तस्य पुत्रेण सह स्नानार्थं नदीमगच्छत्।
- स्नानानन्तरं श्रेष्ठिनः पुत्र गिरिगुहाया निगूह्य जीर्णधनः प्रत्यावृत.। स्वपुत्रविषये पृष्टे सति "तव पुत्र. श्येनेन हृत·" इत्युत्तरं श्रुत्वा श्रेष्ठी स्तब्धः जात.।
- श्रेष्ठी शिशो श्येनहरणम् अविश्वस्य न्यायार्थम् राजकुलं गतः। जीर्णधन. अपि तेनैव सह तत्र अगच्छत्।
- श्रेष्ठी शिशो श्येनहरणविषये जीर्णधनः च तुलाया मूषकभक्षणविषये धर्माधिकारिणे ज्ञापितवन्तौ।
- तयो· वृत्तान्त श्रुत्वा धर्माधिकारिभि. विहस्य द्वावेव तुला-शिशु प्रदानेन संतोषितौ।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**
   क. वणिक्पुत्रस्य नाम किम् आसीत् ?
   ख. तस्य गृहे कीदृशी तुला असीत् ?
   ग. स तुलाम् कस्य गृहे निक्षेपभूताम् अकरोत् ?
   घ जीर्णधनः केन सह स्नानाय अगच्छत् ?
   ङ. जीर्णधनः वणिक्शिशुम् कुत्र स्थापितवान् ?
   च. जीर्णधनश्रेष्ठिनौ विवदमानौ कुत्र गतौ ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   क. देशान्तरं गमनमना वणिक्पुत्र· किं व्यचिन्तयत् ?
   ख. स्वतुलां याचन्तं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत् ?
   ग. जीर्णधन. गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागत. ?
   घ स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् उवाच ?
   ङ. धर्माधिकारिभिः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं सन्तोषितौ ?
2. **स्थूलपदान्याधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   क. **जीर्णधन** : विभवक्षयात् देशान्तरं गमनमना व्यचिन्तयत्।
   ख. श्रेष्ठिन : शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।
   ग. श्रेष्ठी उच्चस्वरेण उवाच – **भोः अब्रह्मण्यम् अब्रह्मण्यम्**
   घ सभ्यैः तौ परस्परं सबोध्य **तुला** – **शिशु** – प्रदानेन सन्तोषितौ।
3. **अधः श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा अन्वयं पूरयत।**
   क. यत्र देशे अथवा स्थाने ———— भोगाः भुक्ता ———— विभवहीन. य. ———— सः पुरुषाधमः।
   ख. राजन् ! यत्र लौहसहस्रस्य ———— मूषकाः———— तत्र श्येनः ———— हरेत् अत्र सशयः न।

4. **तत्पदं रेखांकितं कुरुत यत्र**

क. ल्यप् प्रत्ययः नास्ति –
विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय

ख यत्र द्वितीयाविभक्ति. नास्ति –
श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्वरम्, कार्यकारणम्

ग. यत्र क्त प्रत्ययः नास्ति –
प्रस्थितः, आदितः, शङ्कित, आगत.

घ. यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति –
पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः, सभ्यानाम्

5. **सन्धिम् / सन्धिविच्छेदं पूरयत–**

श्रेष्ठ्याह = ________ + आह
________ = द्वौ + अपि
ईदृगेव = ________ + एव
________ = किञ्चित् + अत्र
बृहच्छिलया = ________ + शिलया
पितृव्योऽयम् = पितृव्य. + ________
मूषकैर्भक्षिताः = ________ + भक्षिता
________ = शिशुः + यः

6. क. **समस्तपदं विग्रहं वा लिखत–**

	विग्रहः	**समस्तपदम्**
क.	स्नानस्य उपकरणम्	________
ख.	________ ________	गिरिगुहायाम्
ग.	धर्मस्य अधिकारी	________
घ.	________ ________	विभवहीनाः

ख. यथानिर्दिष्टं वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

क श्येनः बालं न नयति। (कर्मवाच्ये)
ख. मूषकाः तुला न भक्षयन्ति। (कर्मवाच्ये)
ग अनेन चौरेण मम शिशु. अपहृतः। (कर्तृवाच्ये)

घ सत्यम् अभिहितम् भवता। (कर्तृवाच्ये)

ङ श्रेष्ठी सर्व वृत्तान्तं निवेदितवान्। (कर्मवाच्ये)

7. यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायतया "लौहतुला" इति कथायाः सारांशम् स्वभाषया लिखत।

वणिक्पुत्रः	स्नानार्थ
लौहतुला	अयाचत्
वृत्तान्तं	ज्ञात्वा
श्रेष्ठिनं	प्रत्यागतः
गत·	प्रदानम्

ग्रन्थपरिचयः

महाकविना विष्णुशर्मणा राज्ञः अमरशक्तेः पुत्रान् राजनीतिपारंगतान् कर्तुम् 'पञ्चतन्त्रम्' नाम कथाग्रन्थः विरचितः। अयं ग्रन्थः पञ्चतन्त्रेषु (भागेषु) विभक्तः –

1. मित्रभेदः 2. मित्रसंप्राप्तिः 3. काकोलूकीयम् 4. लब्धप्रणाशः 5. अपरीक्षितकारकम्

अस्मिन् ग्रन्थे अत्यंतसरलशब्देषु लघुकथाम् आश्रित्य गूढतत्त्वानाम् कथनम् लेखकस्य पाण्डित्य प्रदर्शयति।
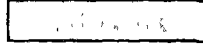
1 न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचित् रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।

2 आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
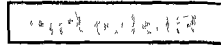
धातुः	क्त	क्तवतु (पु)	क्तवतु (स्त्री)	अनीयर्	तव्यत्	यत्	ल्युट्	तृच्	ण्वुल्
√ नी	नीतः	नीतवान्	नीतवती	×	नेतव्यम्	नेयम्	नयनम्	नेतृ	नायक.
√ प्रच्छ्	पृष्ट.	पृष्टवान्	पृष्टवती	×	प्रष्टव्यम्	×	प्रश्नम्	नेता	×
√ दा	दत्त.	दत्तवान्	दत्तवती	दानीयम्	दातव्यम्	देयम्	दानम्	(दाता)	×

तृतीयः पाठः

(प्रस्तुत नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित "मुद्राराक्षसम्" नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत किया गया है। नन्दवंश का नाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है। किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी स्वामिभक्ति पर दृढ रहता है। उसकी स्वामिभक्ति से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिए सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिए तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।)

चाणक्यः – **वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।**

शिष्यः – **तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इतः इतः श्रेष्ठिन् (उभौ परिक्रामतः)**

शिष्यः – **(उपसृत्य) उपाध्याय ! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।**

चन्दनदासः – **जयत्वार्यः ।**

चाणक्यः – **श्रेष्ठिन् ! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः ?**

चन्दनदासः – **(आत्मगतम्) अत्यादरः शङ्कनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्!**

आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन् ! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।

चन्दनदासः — आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।

चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन् ! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवताम— परिक्लेश एव।

चन्दनदासः — (सहर्षम्) आर्य ! अनुगृहीतोऽस्मि।

चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन् ! "स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।

चन्दनदासः — आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्यः — राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।

चन्दनदासः — आर्य ! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते ?

चाणक्यः — भवानेव तावत् प्रथमम्।

चन्दनदासः – (कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम्, शान्तं पापम् – कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः ?

चाणक्यः – अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।

चन्दनदासः – आर्य, अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्यस्य निवेदितम्।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन् ! अलमाशङ्कया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः – एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – पूर्वम् 'अनृतम्', इदानीम् "आसीत्" इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदासः – आर्य ! तस्मिन्समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – अथेदानीं क्व गतः ?

चन्दनदासः – न जानामि।

चाणक्यः – कथं न ज्ञायते नाम ? भो श्रेष्ठिन् ! शिरसि भयम्, अतिदूरे तत्प्रतिकारः।

चन्दनदासः – आर्य ! किं मे भयं दर्शयसि ? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्।

चाणक्यः – चन्दनदास ! एष एव ते निश्चयः ?

चन्दनदासः – बाढम् ; एष एव मे निश्चयः।

चाणक्यः – (स्वगतम्) साधु ! चन्दनदास साधु।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।

(प्रकाशम्) चन्दनदास, एष ते निश्चयः ?

चन्दनदासः – बाढम्।

चाणक्यः – (सक्रोधम्) दुरात्मन्, तिष्ठ वणिक् ! अनुभूयतां तर्हि नरपतिक्रोधः।
चन्दनदासः – सज्जोऽस्मि। अनुतिष्ठतु आर्यः आत्मनोऽधिकारसदृशम्।

मणिकारश्रेष्ठिनम्	–	सुवर्णकारं व्यापारिणम्	–	सुवर्ण व्यापारी
निष्क्रम्य	–	बहिर्गत्वा	–	निकल कर
उपसृत्य	–	समीप गत्वा	–	पास जाकर
प्रचीयन्ते	–	वृद्धिं प्राप्नुवन्ति	–	बढ़ते हैं
संव्यवहाराणाम्	–	व्यापाराणाम्	–	व्यापारों का
शङ्कनीयः	–	सन्देहास्पदः	–	शंका के योग्य
अखण्डिता	–	परिपूर्णा	–	परिपूर्ण
वणिज्या	–	वाणिज्यम्	–	व्यापार
प्रीताभ्यः	–	प्रसन्नाभ्यः	–	प्रसन्न
प्रतिप्रियम्	–	प्रत्युपकारम्	–	उपकार के बदले
अपरिक्लेशः	–	कष्टाभावः	–	दुःख का अभाव
अर्थसम्बन्धः	–	धनस्य सम्बन्धः	–	धन का सम्बन्ध
प्रष्टव्याः	–	प्रष्टुं योग्याः	–	पूछने योग्य
अवगम्यते	–	ज्ञायते	–	जाना जाता है
राजापथ्यकारिणः	–	नृपापकारकारिणः	–	राजाओं का अहित करने वाले
अलीकम्	–	असत्यम्	–	झूठ
अनार्येण	–	दुष्टेन	–	दुष्ट के द्वारा
पौराणाम्	–	नगरवासिनाम्	–	नगर के लोगों के
निक्षिप्य	–	स्थापयित्वा	–	रखकर
व्रजन्ति	–	गच्छन्ति	–	जाते है
प्रच्छादनम्	–	निगूहनम्	–	छिपाया जाना
नरपतिक्रोधः	–	राज्ञः (चन्द्रगुप्तस्य) कोपः	–	राजा (चन्द्रगुप्त) का क्रोध

- चन्दनदासः मणिकारश्रेष्ठी आसीत्।
- सः राज्ञो नन्दस्य मन्त्रिणः स्वकीय प्राणेभ्योऽपि प्रिय मित्रं राक्षसं विपत्तौ स्वगृहे अरक्षत्।
- चाणक्यः चन्दनदासम् अर्थलोभं दर्शयित्वा राक्षसस्य गृहजन समर्पयितुम् अकथयत्।
- चन्दनदासोऽर्थलाभाय राक्षसगृहजनं न समर्पयति।
- चाणक्यः चन्दनदासस्य त्यागभावनां, तस्य मित्रं प्रति कर्तव्यञ्च दृष्ट्वा स्वमनसि तं प्रशंसन् शिविना सह तस्य तुलना करोति।
- चन्दनदासः राक्षसजनान् न समर्पयिष्यति इति विज्ञाय चाणक्यः तस्मै क्रुध्यति राजभय च दर्शयति।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत--**
   - क. कः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति ?
   - ख. प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः के प्रतिप्रियमिच्छन्ति ?
   - ग. तृणानां केन सह विरोधः वर्तते ?
   - घ. कः राक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति ?
   - ङ. प्रस्तुतपाठे चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता ?

1. **प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत--**
   - क चाणक्यः चन्दनदासं कस्य गृहजनं समर्पयितुं कथयति ?
   - ख. "नरपतिक्रोधः" अत्र "नरपति" इति पदम् कस्मै प्रयुक्तम् ?
   - ग चाणक्यमतेन राक्षसस्य गृहजनसंवेदने (समर्पणे) चन्दनदासस्य कः निश्चयः आसीत् ?
   - घ. चन्दनदासः कस्य कीदृशं गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म ?

2. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

क. **आर्यस्य** प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

ख **शिबिना** विना इद दुष्कर कार्य क. कुर्यात्।

ग. प्राणेभ्योऽपि प्रियः **सुहृत्**।

घ प्रीताभ्य प्रकृतिभ्य. प्रतिप्रियमिच्छन्ति **राजानः**।

3. सन्धिं / सन्धिविच्छेदं कुरुत–

क यथा = कः + अपि = कोऽपि

प्राणेभ्यः + अपि = ————

———— + अस्मि = राज्जोऽस्मि

ख यथा = सत् + चित् = सच्चित्

शरत् + चन्द्र. = ————

कदाचित् + ———— = कदाचिच्च

4. यथानिर्देशं परिवर्तनं कुरुत–

क यथा – चन्द्रश्रियाधिक नन्दति प्रकृतिः। (बहुवचने)

चन्द्रश्रियाधिकं नन्दन्ति प्रकृतयः।

(i) प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः। (एकवचने)

(ii) अपि प्रचीयते सव्यवहाराणा वृद्धिलाभ. ? (बहुवचने)

ख यथा – अहं राक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि। (प्रथमपुरुषे)

स. राक्षसस्य गृहजनं न समर्पयति।

(i) अह न जानामि। (मध्यमपुरुषे)

(ii) त्वं राक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि (उत्तमपुरुषे)

5. अधोलिखितानि वचनानि कः कं प्रति कथयति–

	क	कं प्रति
यथा – वत्स ! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।	चाणक्य	शिष्यं प्रति
क. अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणा वृद्धिलाभाः।	————	————
ख. आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।	————	————

ग. राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव। ________ ________

घ. अनुभूयतां तर्हि नरपतिक्रोधः। ________ ________

6. अ. अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितपदानि आदाय पदानां समक्षं विलोमपदानि लिखत–

आर्य.,	आदरः,	प्रीतिम्,	अलीकम्,
पूर्वम्,	सन्तम्,	दोषः	

अनादरः ________

क्रोधम् ________

गुण. ________

असन्तम् ________

इदानीम् ________

अनार्यः ________

सत्यम् ________

आ. अधोलिखितानि अव्ययानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत–

निष्क्रम्य, निक्षिप्य, प्रविश्य, द्रष्टुम्, उपसृत्य

यथा – निष्क्रम्य – शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(i) ________

(ii) ________

(iii) ________

(iv) ________

(v) ________

[ध्यातव्य यत् क्त्वा – ल्यप् – तुमुन् प्रत्ययाना सयोजनेन रचितानि पदानि अव्ययानि भवन्ति।

यथा – श्रेष्ठिनम् चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।

अत्र द्रष्टुम (दृश + तुमुन्) इति पदम् अव्ययरूपेण प्रयुक्तम्।]

7. क. कीदृशस्तृणानाम**ग्निना सह** विरोध ?

ख. चन्दनदासः राक्षसस्य गृहजनं **स्वगृहे अरक्षत्।**

उपरिलिखितयोः वाक्ययोः

क. 'सह' शब्दयोगे तृतीया विभक्तिः।

ख. आधारार्थे च सप्तमी विभक्तिः प्रयुक्ता।

अत्र (क) भागे उपपदविभक्तिः प्रयुक्ता (ख) भागे च कारकविभक्तिः। विशिष्टपदानां योगे या विभक्तिः प्रयुज्यते सा 'उपपदविभक्ति' इति कथ्यते।

यथा – सह, समम्, साकम्, सार्धम्, इत्येतेषां पदाना योगे तृतीया विभक्तिः भवति। आधारार्थे च (आधारोऽधिकरणम्) सप्तमीविभक्तिः भवति।

ग अधस्तनम् उदाहरणद्वयम् अनुसृत्य कोष्ठके प्रदत्तपदानि प्रयुज्य च वाक्यानि रचयत–

यथा – मृगाः मृगैः सह धावन्ति।

(i) —————————— (समम्)
(ii) —————————— (सार्धम्)

यथा – सिंहः वने वसति।

(i) मत्स्याः —————————— निवसन्ति (जल)
(ii) वानराः —————————— निवसन्ति (वृक्ष)

कविपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' इति नाम्नः नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्तः आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्य पिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवी प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मावलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

ग्रन्थपरिचयः

"मुद्राराक्षसम्" सम्राट–चन्द्रगुप्तस्य शासनम् अधिकृत्य लिखितम् एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाङ्केषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्य राजनीतिककौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम कूटनीतीनाम् निदर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

1. **चाणक्य** – चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव 'कौटिल्य' इति नाम्ना प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व–जीवने उपयोगाय च अयं 'कौटिल्यः' इत्यपि कथ्यते।

    अस्य अन्यत् नाम चाणक्योऽपि वर्तते। चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् 'चाणक्यः' इति नाम्ना स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च 'चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तः "कौटिल्य-अर्थशास्त्रम्" इति नामकः अतिमहत्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

2. **चन्द्रगुप्तमौर्यः** – चन्द्रगुप्तः महापद्मनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शने अनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

3. **राक्षसः** – नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुर प्रधानामात्य आसीत्।

4. **चन्दनदासः** – कुसुमपुर नाम्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमः पात्रः मित्रञ्च आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवारं नगरात् बहिरगच्छत्।

1. अलम् **आशङ्कया।**

   अलम् **विवादेन।**

   अलम् **कलहेन।**

   अलम् **अतिभोजनेन।**

   उपरिलिखितेषु वाक्येषु अलम् योगे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता।

2 **अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः**

अत्यादरः	**शङ्कनीयः**
जन्तुशाला	**दर्शनीया**
याचकेभ्य. दानं	**दानीयम्**
वेदमन्त्राः	**स्मरणीयाः**

पुस्तकमेलापके पुस्तकानि **क्रयणीयानि।**

(i) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोग· योग्यार्थे भवति।

(ii) अनीयर्प्रत्यये 'अनीय' इति अवशिष्यते।

(iii) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।

यथा	**पुल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्
	(देववत्)	(लतावत्)	(फलवत्)

3 **उभ सर्वनामपदम्**

पुल्लिङ्गे	**नपुंसकलिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**
उभौ	उभे	उभे
उभौ	उभे	· उभे
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
"	"	"
"	"	"
उभयोः	उभयोः	उभयो.
"	"	"

चतुर्थः पाठः

(पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ छाया एवं औषधि प्रदान करने वाले पादपों एवं वृक्षो की उपयोगिता वर्तमान समय में पूर्वापेक्षया अधिक है। वैज्ञानिकों के अनुसार वृक्षों एवं वनस्पतियों के अभाव में मनुष्यों के लिए जीवित रहना असम्भव प्रतीत होता है। नाना-वाहनों तथा कल-कारखानों से निकलने वाले धुएँ से समस्त वायु ही विषैली हो रही है जिससे न केवल मानव–समूह अपितु सम्पूर्ण प्राणि-जगत् का जीवन संकट में पड़ता जा रहा है। पर्यावरण दिन-प्रतिदिन असंतुलित हो रहा है। यत्र-तत्र अनावृष्टि की समस्या भी बढती जा रही है। अतः आवश्यक है कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए जिससे प्रकृति संतुलित रहे और प्राणि-जगत् के साथ मानव-जीवन भी सुखमय हो सके।)

भूतले मानवानां समाज इव अन्येऽपि समवाया वर्तन्ते पशूनां पक्षिणां वृक्षाणां च। यथा मानवा गुणभेदेन आकारप्रकारदृष्ट्या अभिरुचिदिशा च भिद्यन्ते तथैव वृक्षा अपि। केषाञ्चिद् वृक्षाणां महत्त्वं गृहनिर्माणदृष्ट्या, केषाञ्चित्

औषधदृष्ट्या केषाञ्चिच्च फलपुष्पदृष्ट्या। मल्लिका, कर्णिकारः, यूथिका, पारिजात इत्येताः वनस्पतयः पूजादिनिमित्तं सौरभयुक्तानि पुष्पाण्येव प्रस्तुवन्ति। परन्तु कदलीरसालजम्बूनिम्बूकनारङ्गादितरवस्तुविविधस्वादमयानि फलान्याहरन्ति। एवमेव सरलदेवदारुनिम्बादिवृक्षा गृहनिर्माणार्थं काष्ठानि प्रयच्छन्ति।

वृहदारण्यकनाम्नि उपनिषदि वृक्षाणां महत्त्वं प्रतिपादयन् वृक्षपुरुषसाम्यम् अवलोक्यते। महर्षियाज्ञवल्क्येन उक्तम् –

यथा वृक्षोवनस्पतिस्तथैवपुरुषोऽमृषा।
तस्य लोमानि पर्णानि त्वगस्योत्पाटिका बहिः।।

त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि त्वच उत्पटः।
तस्मात्तदातृणात् प्रेति रसो वृक्षादिवाहतात्।।

वैज्ञानिकदृष्ट्या तु सिद्धमिदं यद्वृक्षेष्वपि चैतन्यं वर्तते। कामं तच्चैतन्यं मानवपशुपक्षिचैतन्यमिव व्यक्तं न दृश्यते तथापि एतद् वक्तुं शक्यते यद् वनस्पतयोऽपि सुखदुःखादिभावान् सम्यगनुभवन्ति।

कस्मिन् क्षुपे, कस्मिन् फले, पुष्पे वा को नु वर्तते औषधीयो गुणः इति विज्ञायैव ते ऋषयः चरकसुश्रुतादयः महनीयमायुर्वेदाख्यं शास्त्रं प्रतिष्ठापितवन्तः। वृक्षाणामभावे मानवजीवनं सर्वथा दुष्करं स्यात् यतो हि वनस्पतयो दूषितपवनं निगीर्य शुद्धं आक्सीजनाख्यं प्राणवायुम् विमु चन्ति यं गृहीत्वा प्राणिनः जीवितुं शक्नुवन्ति। एवं हि वृक्षाः मानवानां बन्धुभूताः प्रतीयन्ते।

अस्मादेव कारणात् वृक्षारोपणमस्माभिः करणीयं तिष्ठति। यदि भवनं परितः सन्ति वृक्षास्तर्हि शुद्धप्राणवायुरपि पुष्कलत्वेन अवाप्स्यते। सर्वेऽपि तत्र स्वस्थाः स्थास्यन्ति। तत्रापि गृहद्वारे निम्बरोपणमुपादेयं प्रतीयते। यतो हि निम्बपल्लवेषु तद्विमुक्तपवनेषु च भवन्ति विविधरोगापहारका गुणाः। पिप्पलवृक्षः सर्वाधिकं प्राणवायुं (आक्सीजनाख्यं) विसृजति इति रहस्यं जानन्ति वैज्ञानिकाः। अत एव पिप्पलच्छायायां शयाना जना नीरोगा जायन्ते।

वृक्षारोपणेऽन्यापि कापि प्रशस्ता दृष्टिर्वर्तते भारतीयानाम्। इयं दृष्टिः सर्वानपि वृक्षान् दैवीशक्तिसम्पन्नान् घोषयति। अश्वत्थे भगवतः नारायणस्य निवासः। निम्बवृक्षे भगवत्याः शीतलायाः। मन्दारवृक्षे गणपतिर्वसति। तुलस्यामपि विष्णुप्रिया वृन्दा। शमीवृक्षेऽग्निस्तिष्ठति। बिल्ववृक्षे लक्ष्मीः। एवमेव नवग्रहाणां प्रत्येकं निवासभूतः कोऽपि वृक्षः समुपदिष्टः। अनया देवदृष्ट्या सम्प्रेरिता अपि जना वृक्षारोपणं कृत्वा धन्यमात्मानं मन्यन्ते।

वृक्षाः खलु घर्मसन्तप्तेभ्यः छायासुखं बुभुक्षितेभ्यस्तृप्तिसुखं च प्रयच्छन्ति। अत एव सर्वैरपि वृक्षा आरोपणीयाः। यथोक्तं स्मृतिकारैः –

> दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः
> दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।

शब्दार्थाः

समवायाः	- समूहाः	– समूह
भिद्यन्ते	- पृथक् भवन्ति	अलग होते हैं।
मल्लिका	मल्लीपुष्पम्	- बेला
कर्णिकार	पुष्पविशेष	कनेर, कनैल
यूथिका	- यूथी	– जूही

पारिजातम्	—	हरसिंगाराख्य पुष्पम	-	हरसिंगार
क्षुपे	-	पादपे (लघुवृक्षे)	-	पौधे में
महनीयम्	—	महत्त्वपूर्णम्	—	महत्त्वपूर्ण
निपीय	—	पीत्वा	--	पीकर
अवाप्स्यते	—	लप्स्यते	—	प्राप्त की जाएगी
अश्वत्थे	—	पिप्पले	—	पीपल वृक्ष पर
मन्दारवृक्षे	—	तरुविशेषे	—	मन्दार के वृक्ष पर
विशदयद्भिः	—	विस्तारयद्भि	-	विस्तार करते हुए
पर्णानि	--	पत्राणि	-	पत्ते
उत्पटः	—	रसविशेष	-	(वृक्ष की छाल से निकलनेवाला) रस
उत्पाटिका	—	त्वचा	-	छाल
प्रतिपादयन्	—	विशेषेण कथयन्	—	बताते हुए
ह्रदः	—	सरः	--	सरोवर, तालाब
प्रस्यन्दि	—	वहति (निःसरति)	—	बहता है।
त्वक्	—	त्वचा	—	छाल, खाल

[illegible]

- वनस्पतयः मानवजीवनस्य प्राणभूता सन्ति।
- वृक्षा प्राणिभ्यः पत्राणि, पुष्पाणि, फलानि, औषधानि, काष्ठानि च यच्छन्ति।
- वनस्पतयः जीवनाय प्राणिभ्यः ऑक्सीजनाख्य प्राणवायुम् प्रयच्छन्ति।
- भारतीयसंस्कृतौ विभिन्नेषु वृक्षेषु विविधदेवीदेवाना च निवासः स्वीकृत ।
- उपनिषत्सु वृक्षपुरुषसाम्यम् अवलोक्यते।
- वैज्ञानिकै वनस्पतिष्वपि चैतन्यमस्ति इति साधितम्।
- वृक्षारोपणे एकतः प्राणिजगत् सुखं लभते अपरतश्च प्रदूषणसमस्यायाः निराकरणम् (समाधानम्) अपि भवति।
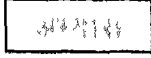
1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–
   - क. गृहनिर्माणार्थं काष्ठानि के प्रयच्छन्ति ?
   - ख. वृक्षाः केषाम् बन्धुभूताः सन्ति ?
   - ग. किं गृहीत्वा प्राणिनः जीवितुं शक्नुवन्ति ?
   - घ. गृहद्वारे कस्य वृक्षस्यारोपणमुपादेयं प्रतीयते ?
   - ङ. सर्वाधिकं प्राणवायुं कः विसृजति ?

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–
   - क. विविधस्वादमयानि फलानि केभ्य. वृक्षेभ्यः प्राप्यन्ते ?
   - ख. वैज्ञानिकैः किं साधितम् ?
   - ग. आहते सति वृक्षेभ्यः कि वहति ?
   - घ. वृक्षाः जनेभ्यः किं कि प्रयच्छन्ति ?
   - ङ. उपनिषत्सु वृक्षाणा तुलना कैः सह कृता ?

2. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–
   - क. वनस्पतय. **पुष्पाणि** प्रस्तुवन्ति।
   - ख. वृक्षाणाम् अभावे **मानवजीवनं** दुष्कर स्यात्।
   - ग. **निम्बपल्लवेषु** विविधरोगापहारका. गुणाः भवन्ति।
   - घ वृक्षाः **घर्मसन्तप्तेभ्यः** छायासुख प्रयच्छन्ति।
   - ङ. दशपुत्रसमो **द्रुमः** भवति।
   - च **ऋषयः** चरकसुश्रुतादयो महनीयमायुर्वेदं प्रतिष्ठापितवन्तः।

3. अधोलिखितेषु पदेषु सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–

   क **यथा** कृषिः + अपि = कृषिरपि

   (i) प्राणवायु. + अपि = ________

   (ii) सर्वैः + अपि = ________

ख यथा केषाञ्चिच्च = केषाञ्चित् + च

(i) तच्चैतन्यम् = ______ + ______

(ii) कुत्रचिच्च = ______ + ______

ग. यथा अन्येऽपि = अन्ये + अपि

(i) सर्वेऽपि = ______ + ______

(ii) वृक्षेऽस्मिन् = ______ + ______

घ यथा वृक्षास्तर्हि = वृक्षा. + तर्हि

(i) तरवस्तु = ______ + ______

(ii) अग्निस्तिष्ठति = ______ + ______

4. **अधोदत्तपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत–**

दोषाः ______

अस्वस्थाः ______

वृक्षे ______

उद्गीर्य ______

जडत्वम् ______

मनुष्याः ______

अनुपादेयम् ______

स्वल्पत्वेन ______

5. **क.** **उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–**

यथा करणीयम् = कृ + अनीयर्

दर्शनीयम् = ______ + ______

आरोहणीयम् = ______ + ______ + ______

रक्षणीयम् = ______ + ______

पठनीयम् = ______ + ______

ख. **उदाहरणमनुसृत्य 'ठक्' प्रत्ययं योजयित्वा रूपाणि लिखत–**

यथा विज्ञान + ठक् = वैज्ञानिक.

______ + ______ = ऐतिहासिक

पुराण + ठक् = ________

________ + ________ = दैनिक.

वेद + ठक् = ________

________ + ________ = औपनिषदिकः

6. **स्थूलपदानि संशोध्य वाक्यानि पुनः लिखत–**

क. वृक्षाः सौरभयुक्तानि पुष्पाणि **ददन्ति**।

ख. **वृक्षाणां** मानवजीवने वहवः उपयोगाः सन्ति।

ग. **लक्ष्मेः** निवासः बिल्ववृक्षे भवति।

घ. वैज्ञानिकैः वृक्षाणां विषये महत्वपूर्णा सूचना **दत्तम्**।

ङ. गावः क्षीरं शरीर पोषयति बुद्धिं च वर्धयति।

च. वृक्षारोपणं सर्वैरपि अस्माभिः **करणीयः**।

7. **वृक्षाणाम् चित्राणि दृष्ट्वा प्रतिवृक्षम् प्रतिपादपं प चवाक्यानि रचयत–**

निम्बतरुः

आम्रवृक्षः

कदलीपादपः

तुलसीपादपः

वृक्षारोपणमहत्त्वम्

प्रदूषणसमस्यायाः विषये अद्य सम्पूर्णः विश्वः चिन्तातुर. अस्ति। संयुक्त–राष्ट्रसंघेन अपि अस्मिन् विषये चिन्ता प्रकटिता। प्रदूषण–निवारणस्य उपायेषु 'वृक्षारोपणं' सर्वोत्कृष्टं मतम्।

प्रदूषणसमस्या तदैव उपस्थिता यदा मानवेन स्वार्थसिद्धये वृक्षकर्तनम् आरब्धम्। प्रकृतौ सन्तुलनस्थापनार्थं वृक्षरक्षणम् वृक्षारोपणम् च आवश्यकम्। इदम् सन्तुलनम् एव भूक्षरणात् अतिवृष्टेः अनावृष्टेः च रक्षितुम् समर्थम्। धूमानां विषाक्तवायूनां च शोषणस्य सामर्थ्यम् वृक्षेषु एव। येन वातावरणम् शुद्धम् पवित्रम् च भवति।

किं बहुना नष्टप्रायाणां पशुपक्षिणाम् जातीनाम् च रक्षा अपि अनेनैव सम्भवा। श्रीमद्भागवते अपि भगवान् कृष्णः वृक्षाणा महत्त्वं बलरामं प्रति निवेदितवान्

क. पश्यैतान् महाभागान् परार्थैकान्तजीवितान्–
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः।।

ख. पत्रपुष्पफलच्छाया मूलवल्कलदारुभिः
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते।।

अत्र अन्येऽपि श्लोकाः दृष्टव्याः

क. अहो ! एषां वर जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम्।
धन्या महीरुहा येभ्यो निराशा यान्ति नार्थिनः।।

ख. छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव।।

ग. बहुभिर्बत किं जातैः पुत्रैः धर्मार्थवर्जितैः।
वरमेको पथि तरुर्यत्र विश्रमते जनः।।

घ. अनेकफलप्रदो वृक्षो निरपेक्षो यतिप्रभः।
कर्त्तव्यं रोपणं तस्य वृक्षो रक्षति रक्षितः।।

√ मुच्' (त्यागे) लट्लकारः

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
मध्यमः	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उत्तमः	मुञ्चामि	मञ्चावः	मुञ्चामः

√ आप्' (प्राप्तकरणे) लट्लकार.

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	आप्नोति	आप्नुत.	आप्नुवन्ति
मध्यमः	आप्नोषि	आप्नुथ	आप्नुथ
उत्तम'	आप्नोमि	आप्नुव	आप्नुमः

√ दा' (दाने) लट्लकारः

पुरुषः	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमः	ददाति	दत्त'	ददति
मध्यम	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम.	ददामि	दद्वः	दद्मः

पञ्चमः पाठः

(व्यक्ति को सन्मार्ग पर ले जाने की विधि को नीति कहते हैं। "नीयते प्राप्यते धर्मोऽनया" इति नीतिः। "विदुरनीति" महाभारत का एक प्रसिद्ध तथा उपादेय प्रसङ्ग है। इसमें महात्मा विदुर ने राजा धृतराष्ट्र को लोक परलोक में कल्याण करने वाली बहुत सी बातें समझाई हैं। उद्योगपर्व के आठ अध्यायों (33वें से 40वें तक) में यही नीतिपरक श्लोक उपदेशात्मक ढंग से कहे गए हैं। प्रस्तुत पाठ में कठोर वचन, चारित्रिक महत्त्व, हानिलाभ की दृष्टि से कर्त्तव्य का निर्धारण, स्नेही जनों को सब कुछ स्पष्ट बता देना, छह सुख, समूह में रहना, मित्र बनाने का विधान, निर्दोष को दण्ड देने से उत्पन्न भय तथा हितकारी वचन से सम्बन्धित भावों वाले श्लोक संकलित किए गए हैं।

पाठ का उद्देश्य विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन के साथ–साथ उनमें नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था भी उत्पन्न करना है, जिन्हें वे अपने जीवन में उतार सकें।)

रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम्।
वाचा दुरुक्तं वीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम्।।1।।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते।।2।।

किन्नु मे स्यादिदं कृत्वा किन्नु मे स्यादकुर्वतः।
इति कर्माणि संचित्य कुर्याद्वा पुरुषो न वा।।3।।

शुभं वा यदि वा पापं द्वेष्यं वा यदि वा प्रियम्।
अपृष्टस्यास्य तद्ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम्।।4।।

आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः सद्भिर्मनुष्यैः सह संप्रयोगः।
स्वप्रत्ययावृत्तिरभीतवासः षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।5।।

एकः स्वादु न भु जीत एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात्।।6।।

मत्या परीक्ष्य मेधावी बुद्ध्या सम्पाद्य चासकृत्।
श्रुत्वा दृष्ट्वाथ विज्ञाय प्राज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत्।।7।।

न स रात्रौ सुखं शेते ससर्प इव वेश्मनि।
यः कोपयति निर्दोषं सदोषोऽभ्यन्तरे जनः।।8।।

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।9।।

रोहते	–	प्ररोहति	–	उगता है
विद्धम्	–	क्षतम्	–	बिधा हुआ, घायल
बीभत्सम्	–	भयावहम्	–	भयानक
मृजया	–	मार्जनेन, स्नानकृतशुद्ध्या	–	जल द्वारा शुद्धि से
वृत्तेन	–	सदाचारेण	–	सदाचार से
अकुर्वतः	–	न कुर्वतः	–	न करते हुए का

संचित्य	–	विचार्य	–	भली भांति सोच विचार कर
द्वेष्यम्	–	द्वेषयोग्यम्	–	द्वेष के योग्य
आनृण्यम्	–	ऋणस्य अभाव·	–	कर्ज का न होना
अविप्रवासः	–	विदेशे न वासः	–	अन्य देश मे वास न करना
स्वप्रत्ययावृत्तिः	–	आत्मविश्वासे सुदृढः	–	आत्मविश्वास मे सुदृढ
अभीतवासः	–	निर्भयं निवास.	–	निडर होकर रहना
असकृत्	–	न सकृत्	–	अनेकशः
विज्ञाय	–	ज्ञात्वा	–	जानकर
वेश्मनि	–	गृहे	–	घर में
कोपयति	–	क्रोधयति	–	क्रोधित करता है
अभ्यन्तरे	–	अन्तःकरणे	–	अपने अन्दर
पथ्यस्य	–	हितकारिवचनस्य	–	लाभकारी वचनों का
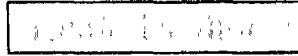
- मनुष्य· कदापि कटुवचनानि न ब्रूयात्।
- धर्मस्य सत्येन, विद्याया· योगेन, रूपस्य सम्मार्जनेन, कुलस्य च सदाचारेण रक्षा भवति।
- मनुष्यः गुणदोषान् परीक्ष्य एव कर्मणि प्रवृत्तः भवेत्।
- यस्य कस्यचिदपि शुभचिन्तक. नर. तस्य प्रीतिमप्रीतिम् अविचार्य सत्यं ब्रूयात्।
- जीवलोकस्य षड्सुखानि सन्ति।
- मानव. मिलित्वा चलेत्, मिलित्वा खादेत्, मिलित्वा च जीवनं यापयेत्।
- हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**
   - क. कैः विद्धं वनं रोहते ?
   - ख. विद्या केन रक्ष्यते ?
   - ग. जीवलोकस्य कति सुखानि ?

घ. एकः किं न भुञ्जीत ?

ङ. नरः कैः सह मैत्रीं समाचरेत् ?

1. **अधोलिखितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. जीवलोकस्य षड् सुखानि कानि कानि सन्ति ?

ख. केन क्षतः नरः न संरोहति ?

ग. एकाकी किं किं न कुर्यात् ?

घ. कः रात्रौ सुखं न शेते ?

ङ. कीदृशाः पुरुषाः लोके सुलभाः ?

2. **सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

क. (i) स्यादिदम् – स्यात् +

(ii) स्यादकुर्वतः – ________ + अकुर्वतः

(iii) ________ तत् + ब्रूयात् ________

(iv) गच्छेदध्वानम् = ________ + ________

ख. (i) सायकैर्विद्धम् – सायकैः + ________

(ii) दुरुक्तम् – ________ + उक्तम्

(iii) ________ सद्भिः + मनुष्यैः

(iv) प्राज्ञैर्मैत्रीम् = ________ + ________

ग. संयोगं कुरुत –

(i) वनम् + परशुना (ii) प्रियम् + अपृष्टम्

(iii) इदम् + कृत्वा (iv) आरोग्यम् + आनृण्यम्

(v) शुभम् + वा

3. **उदाहरणानुसारं लिखत–**

क. उदाहरणम् : **सर्पेण सहितः इति ससर्पः**

(i) दोषेण सहितः इति ________

(ii) तनयेन सहितः इति ________

(iii) ________ इति सरागः

(iv) ________ इति सक्रोधः

(v) शरीरेण सहितः इति ________

ख. उदाहरणम् : **परशुना हतम् इति परशुहतम्**

(i) वाचा क्षतम् इति ________________

(ii) दुष्टेन हतम् इति ________________

(iii) ________________ इति साधुरक्षितम्

(iv) ________________ इति वाक्यरक्षितम्

(v) धनेन हीन. इति ________________

4. अ. उचितपदैः अन्वयं पूरयत–

क सायकैः विद्धं ________ हतं वनं रोहते। वाचा वीभत्स ________ वाक्क्षतम् न ________ ।

ख. इदं ________ मे किन्नु स्यात् **किन्नु** अकुर्वत. मे इति **संचित्य** पुरुषो कुर्यात् या न वा।

ग. स· ________ ससर्प इव रात्रौ सुखं न ________ यः अभ्यन्तरे ________ निर्दोषं जनं कोपयति।

5. अधोलिखितानाम् वाक्यानाम् उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

	कर्मवाच्यम्	कर्तृवाच्यम्
यथा	योगेन विद्या रक्ष्यते।	योग· विद्या रक्षति।
(i)	वृत्तेन कुलं रक्ष्यते।	________________
(ii)	________________	सत्यं धर्मं रक्षति।
(iii)	मृजया रूप रक्ष्यते।	________________
(iv)	________________	परशु. वनं हन्ति।

6. अधोलिखितानां पदानां समानार्थकपदानि पाठात् चित्वा लिखत–

यथा बाणैः ________________ सायकै.

क. विद्धम् ________________

ख. चरित्रेण ________________

ग. विचिन्त्य ________________

घ. विदधीत ________________

ङ. अद्यात् ________________

च. प्राज्ञः ________________

छ. निरन्तरम् ________________

7. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत–

क. यत्र ल्यप् प्रत्ययः नास्ति ————

संचित्य, परीक्ष्य, द्वेष्य, विज्ञाय

ख. यत्र अस्मिन् पाठे द्वितीया विभक्तिः प्रयुक्ता ————

वनम्, विद्वम्, पराभवम्, कुलम्

ग. यत्र विधिलिङ्गः नास्ति ————

चिन्तयेत्, रक्ष्यते, जागृयात्, गच्छेत्।

कविपरिचयः

कौरवाणां मुख्यमंत्री विदुरः महान् नीतिवेत्ता, कुशलराजनीतिज्ञः महापुरुषः च आसीत्। कौरवेभ्यः, पाण्डवेभ्यः च परामर्शं ददन् अयं कदापि सत्यमार्गात् च्युतः न अभवत्। अनेन दत्तम् अप्रियं भाषणम् श्रुत्वा अपि धृतराष्ट्रः अस्मात् विमुखः नाभवत्।

ग्रन्थपरिचयः

विदुरनीतिः इति नाम ग्रन्थः महाभारतस्य उद्योगपर्वणः उद्धृतः अस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे नीतिवेत्ताविदुरेण लोकोपयोगी उपदेशः दत्तः यम् अनुसरन् नरः स्वजीवनयात्रायाम् आगताभिः समस्याभिः आत्मानम् उद्धर्तुं शक्नोति।
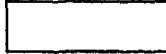
- जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
  स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।
- सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
  प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।।
- वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्
- सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
- वाक्सायकाः वदनान्निष्पतन्ति,

यैराहतः शोचति रात्र्यहनि।
परस्य वै मर्मसु ते पतन्ति,
तान् पण्डितो नावसृजेत् परेषु।।

1. √ रुह् धातोः लट् लकारे 'रोहति' इति एवं प्रयोगः भवति परमत्र श्लोके 'रोहते' इत्येवं प्रयुक्तः एतादृशः प्रयोगः आर्षप्रयोगः।

2. क. **कृ – विधिलिङ्गे रूपाणि**

प्र० पु० कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु·
न० पु० कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु० कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

ख. **√ ब्रू – विधिलिङ्गे रूपाणि**

प्र० पु० ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
न० पु० ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० पु० ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

ग. **√ जागृ – विधिलिङ्गे रूपाणि**

प्र० पु० जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
न० प० जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ० पु० जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

षष्ठः पाठः

स्वामी विवेकानन्दः

(भारतभूमि अनेक विचारकों एवं महापुरुषों की जननी है, यहाँ जन्म लेकर महापुरुषों ने अपने चिन्तनों एवं तदनुरुप कार्यो द्वारा समाज का बहुविध उपकार किया है। ऐसे ही महापुरुषों में स्वामी विवेकानन्द का नाम बड़े आदर से लिया जाता है जिन्होंने भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म की गरिमा का सम्पूर्ण विश्व में गौरव बढ़ाया। उठो जागो और श्रेष्ठतम लक्ष्य को प्राप्त करके जगाओ "**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत**" से जनमानस को प्रेरणा प्रदान करने वाले स्वामी विवेकानन्द के अनुसार सभी सम्प्रदायों के लोग अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए भी यदि प्राणियो के प्रति समत्वदृष्टि रखें और पूर्वाग्रह से दूषित न हों तो विश्व में कहीं भी साम्प्रदायिक कट्टरता कष्टदायी नहीं होगी।)

अनुपमोऽयमस्माकं भारतदेशः। बहवो महापुरुषाः धर्माचार्याश्च अत्राजायन्त स्वप्रयत्नैश्च समाजे व्याप्तानां कुरीतीनां विनाशं कृतवन्तः। तेष्वन्यतम आसीत् स्वामी विवेकानन्दः येन भारतस्य अध्यात्मगौरवं पाश्चात्यजगति प्रतिष्ठापितम्। विवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायां 1863 तमे वर्षे अभवत्। अस्य जननी भुवनेश्वरी पिता च विश्वनाथ आसीत्।

नरेन्द्रनामायं बालः शैशवादेव कुशाग्रबुद्धिः स्वभावाच्च चलः मनसोऽपि अशांतः चासीत्। अथ कदाचित् श्रीरामकृष्णपरमहंसानां स्पर्शमात्रेणैव अस्य चेतना जागृता। गच्छता कालेन परमहंसः एव नरेन्द्रस्य आध्यात्मिको गुरुः अभवत्। परतन्त्रभारतस्य दुर्दशां विचार्य परमहंसः देशस्य गौरवप्रतिष्ठार्थं नरेन्द्रमादिदेश। गुरोराज्ञां शिरसि निधाय विवेकानन्दः समग्रेऽपि राष्ट्रे पर्यटनमकरोत्। मोहनिद्राप्रसुप्तान् देशवासिनः यथाशक्ति प्रबोधितवान्।

1893 तमे वर्षे स्वामी विवेकानन्दः अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागो नाम्निनगरे समायोजिते विश्वधर्मसम्मेलने भारतस्य प्रतिनिधित्वमकरोत्। यावदेवासौ अमेरिकावासिनः 'बन्धवो' 'भगिन्यश्चेति' पदाभ्यां सम्बोधितवान् तावदेव समग्रमेव सभाभवनं करतलध्वनिना गु जायमानं जातम्। सप्ताहं यावत् महामेधावी विवेकानन्दः शून्यमवलम्ब्य स्वकीयं सारगर्भितं भाषणं कृतवान्। यस्मात् भारतेन विश्वगुरुपदम् पुनः लब्धम्। स्वज्ञानगरिम्णा समग्रमपि विश्वं वशीकुर्वन् विवेकानन्दः घोषितवान् – सर्वेऽपि जनाः पूर्वाग्रहं विहाय प्राणिषु समत्वदृष्टिम् अवधारयन्तु चेत् तर्हि स्वधर्मविशेषमनुपालयन्तोऽपि विश्वबन्धुत्वं स्थापयितुं शक्नुवन्ति।

यावज्जीवनं मानवसेवाव्रतमाचरन् असौ देशे-देशे, स्थाने-स्थाने च पीडितान् जनान् तुतोष। एतदर्थमेव स महात्मा रामकृष्णसेवासमितेः स्थापनाम् अकरोत्। एतादृशाणां महापुरुषाणां कृते सत्यमेव उक्तम् –

परोपकारैकधियः स्वसुखाय गतस्पृहाः।
जगद्धिताय जायन्ते मानवाः केऽपि भूतले।।

कन्याकुमारीसमीपस्थे समुद्रे निर्मितं विवेकानन्दस्य विश्वस्तरीयं स्मारकमण्डपं वर्तते यत् तस्य महापुरुषस्य राष्ट्रभक्तिं विश्वबन्धुत्वं
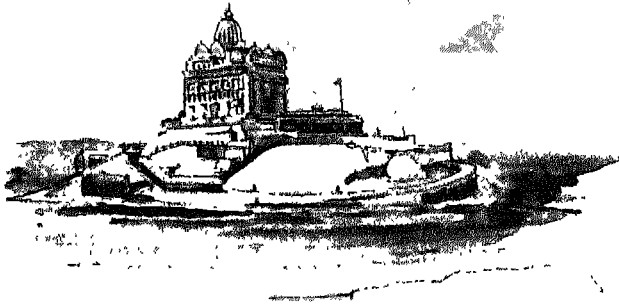
सर्वधर्मसमभावं च स्मारयति। उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत" इत्यस्ति तस्य महापुरुषस्य सन्देशानां सारांशः।

अनुपमः	–	अतुलनीय.	–	अद्वितीय
अध्यात्मगौरवम्	–	आध्यात्मिक महत्त्वम्	–	आध्यात्मिक महत्त्व को
जगति	–	संसारे	–	ससार में
कुशाग्रबुद्धिः	–	तीक्ष्ण बुद्धि	–	तेज बुद्धि वाला
पदाभ्याम्	–	शब्दाभ्याम्	–	दो शब्दो द्वारा
करतलध्वनिना	–	हरततलस्य शब्देन	–	ताली की आवाज से
गुञ्जायमानं जातम्	–	गुञ्जितम् अभवत्	–	गूंज उठा
स्वज्ञानगरिणा	–	स्वज्ञानस्य गौरवेण	–	अपने ज्ञान के गौरव से
वशीकुर्वन्	–	आत्मसात कुर्वन्	–	अपने अधीन करते हुए
पूर्वाग्रहं	–	पूर्वनिर्धारितविचारम्	–	पहले किए गए हठ को
विहाय	–	त्यक्त्वा	–	छोड़ कर
अवधारयन्तु	–	धारण कुर्वन्तु	–	धारण करें
निबोधत	–	जानीत	–	जानो
स्मारयति	–	स्मरण कारयति	–	याद करवाता है
गतस्पृहाः	–	इच्छारहिताः	–	इच्छाओं से रहित

[illegible]
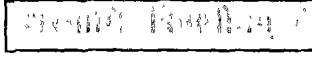
- भारतभूमि. महापुरुषाणा जन्मभूमिः।
- विवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे 1863 तमे वर्षे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायामभवत्।
- अस्य पितरौ भुवनेश्वरीविश्वनाथदत्तौ च आस्ताम्।
- विवेकानन्दः अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागो नगरे 1893 तमे वर्षे विश्वधर्मसम्मेलने भारतस्य प्रतिनिधित्वमकरोत्।
- सः घोषितवान् – संसारस्य सर्वे जनाः पूर्वाग्रहं त्यक्त्वा स्वधर्मस्य पालनं कुर्वन्तः विश्वबन्धुत्व स्थापयन्तु।
- सः श्रीरामकृष्णसेवासमितेः स्थापनां मानवहितायाकरोत्।
- "उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत" इति तस्य सन्देशानां सारः अस्ति।
- परोपकारार्थं समर्पितजीवनाः केऽपि विरला एव संसारे जायन्ते।

[illegible]

[illegible]
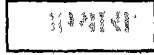
1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

    क. अस्माकं भारतदेश. कीदृश. ?

    ख. श्रीरामकृष्णपरमहंसस्य शिष्यः कः आसीत् ?

    ग. नरेन्द्रस्य पितुः नाम किमासीत् ?

    घ. विवेकानन्दस्य चेतना केषां स्पर्शमात्रेणैव जागृता ?

    ङ. अमेरिकाराष्ट्रस्य कस्मिन् नगरे विश्वधर्मसम्मेलनमायोजितमासीत् ?

[illegible]

1. **प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

    क. कीदृशोऽयं भारतदेशः ?

    ख. अमेरिकाराष्ट्रस्य शिकागोनगरे विवेकानन्देन अमेरिकावासिनः कथं सम्बोधिताः ?

    ग. विवेकानन्दस्मारकमण्डपं किं स्मारयति ?

    घ. विवेकानन्दस्य सन्देशानां सारः कस्मिन् वाक्ये निहितः अस्ति ?

2. **अधोलिखितेषु वाक्येषु स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

    क. **स्वामीविवेकानन्देन** भारतस्य अध्यात्मगौरवं पाश्चात्यजगति प्रतिष्ठापितम्।

    ख. शैशवावस्थायां नरेन्द्रः **कुशाग्रबुद्धिः** आसीत्।

ग. श्रीरामकृष्णपरमहंसानां स्पर्शमात्रेणैव **विवेकानन्दस्य** चेतना जागृता।

घ. विवेकानन्दः गुरोराज्ञां **शिरसि** अधारयत्।

ङ. स्वामी विवेकानन्दः **मोहनिद्राप्रसुप्तान्** जनान् प्रबोधितवान्।

3. सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं कुरुत–

क. यथा– यावत् + एव = यावदेव

(i) शैशवात् + एव = ________

(ii) ________ + ________ = स्वभावाच्च

ख. यथा– ततः + च = ततश्च

(i) स्वप्रयत्नैः + च = ________

(ii) ________ + ________ = भगिन्यश्च

4. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति–प्रत्ययविभागं कुरुत–

क यथा– प्रति + स्था + णिच् + क्त = प्रतिष्ठापितम्

____ + ____ + ____ + ____ = प्रबोधितवान्

ख. यथा– जन् + क्त = जातः

(i) जागृ + क्त = ________

(ii) ____ + मा + ____ = निर्मितम्

5. उदाहरणमनुसृत्य विलोमपदान् लिखत–

यथा – सन्तः – असन्तः

महायोगिन. ________

शिष्यः ________

वार्धक्यात् ________

शान्तः ________

सुखेन ________

मेधावी ________

स्वीकृत्य ________

6. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि कुरुत–

	विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
यथा–	स्वज्ञानस्य गरिमा तेन	स्वज्ञानगरिम्णा

सभाया· भवनम् ____________

विश्वस्य गुरुः ____________

विश्वस्य बन्धुत्वम् ____________

पूर्वस्य आग्रहम् ____________

राष्ट्रस्य भक्तिम् ____________

धर्मस्य समभावम् ____________

7. चित्रं दृष्ट्वा प चवाक्येषु संस्कृतभाषया वर्णयत–
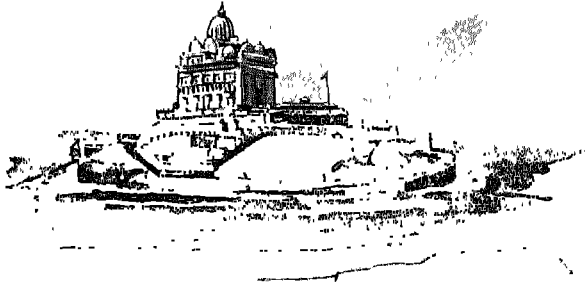
स्वामी विवेकानन्दः

(क) **भावपक्ष :** स्वामिविवेकानन्दस्य जन्म कलिकातानगरे जनवरीमासस्य द्वादशतारिकायाम् 1863 तमे वर्षे अभवत्। अस्य माता भुवनेश्वरी पिता च विश्वानाथदत्त आसीत्। श्रीरामकृष्णपरमहंस· अस्य गुरुः आसीत्। सः बाल्यकालादेव समस्याना समाधाने ईदृशानि तथ्यानि प्रस्तौति स्म यदन्ये जना· तत्समक्षं निस्तब्धाः भवन्ति स्म।

एषा महाविभूति· जुलाईमासस्य चतुर्तारिकायाम् 1902 तमे वर्षे पञ्चत्वं गता। यद्यपि अस्य पार्थिवशरीरम् अद्य नास्ति किन्तु अनेन प्रदत्ता· उपदेशा· अस्मान् सर्वदा प्रेरयिष्यन्ति। तस्य सन्देशः आसीत् – "त्वम् शुद्धस्वरुपो भव। उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! प्राप्य वरान्निबोधत ! त्वम् आत्मानम् दुर्बलं मन्यसे। भो ! सर्वशक्तिमान्, स्वस्वरूपं प्रकाशयत।

1. 'यत्' प्रत्ययप्रयोगः

चैतन्यम्	–	चेतन	+	यत्
वैदुष्यम्	–	विद्वस्	+	यत्
सौन्दर्यम्	–	सुन्दर	+	यत्
शरण्यः	–	शरण	+	यत्
पाथेयः	–	पथिन्	+	यत्
अतिथेयम्	–	अतिथि	+	यत्

2. अव्ययीभाव समासः।

1	यथाशक्ति	शक्तिम् अनतिक्रम्य	यथार्थे
2.	यथाबलम्	बलम् अनतिक्रम्य	यथार्थे
3	यथाकालम्	कालस्य अनुसारम्	यथार्थे
4.	उपगङ्गम्	गङ्गायाः समीपे	सामीप्यर्थे
5.	उपनदम्	नद्याः समीपे	सामीप्यर्थे
6.	अनुरथम्	रथस्य पश्चात्	पश्चादर्थे
7	निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम् अभावः	अभावार्थे

अस्मिन् पूर्वपदम् अव्ययं भवत्यपरं च सज्ञा। समासे कृते समस्तपद नपुसकलिंगे एकवचने च भवति।

ठक् प्रत्ययः

धार्मिकः	–	धर्म	+	ठक् (इक्)
व्यावहारिक	–	व्यवहार	+	ठक्
दैनिकः	–	दिन	+	ठक्
वार्षिक	–	वर्ष	+	ठक्
साप्ताहिक	–	सप्ताह	+	ठक्

1. तस्मिन् भवः इत्यर्थे 'ठक्' प्रत्यय प्रयुज्यते।
2. 'ठक्' प्रत्यय 'इक' इति आदेश भवति।

3 ठक् प्रत्यययोजनात् पूर्व धातुषु पदस्य प्रथमः ह्रस्वस्वर. दीर्घः जायते।

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	"	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	"	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	"	"
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	"	अमीषु

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	"	अमीभ्य.
पञ्चमी	अमुष्मात्	"	"
षष्ठी	अमुष्य	अमुयो.	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	"	अमीषु

अदस् (वह) पुल्लिंग

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	"	"
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमीभि·
चतुर्थी	अमुष्यै	"	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	"	"
षष्ठी	"	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	"	अमूषु

सप्तमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' के चिकित्सास्थान में वर्णित 24वें अध्याय से संकलित है। इसमें आचार्य सुश्रुत ने व्यायाम की परिभाषा बताकर उससे होने वाले शारीरिक सुगठन, विकसित होने वाली कान्ति, स्फूर्ति, नीरोगता तथा जठराग्नि की दीप्तता आदि लाभों की चर्चा की है। व्यायाम कितना किया जाय ? इसका समाधान करते हुए आचार्य सुश्रुत कहते है कि आधी शक्ति से व्यायाम करना सभी के लिए आवश्यक एवं लाभप्रद है।)

शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम्।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः।।1।।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा।।2।।

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते।।3।।

न चास्ति सदृशं तेन किंचित्स्थौल्यापकर्षणम्।
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात्।।4।।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च।।5।।
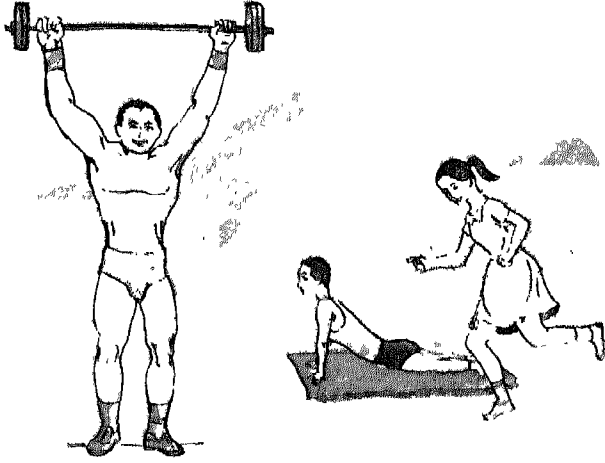
व्यायामस्विन्नगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च।
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः।
वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम्।। 6।।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते।। 7।।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम्।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः।। 8।।

सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः।
बलस्यार्धेन कर्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा।।9।।

हृदिस्थानास्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम्।।10।।

वयोबलशरीराणि देशकायाशनानि च।
समीक्ष्य कुर्याद्व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ।।11।।

आयासः	–	प्रयत्नः, प्रयासः, श्रमः	–	परिश्रम
विमृन्द्नीयात्	–	मर्दयेत्	–	मालिश करना चाहिए
समन्ततः	–	सर्वप्रकारेण	–	सभी तरह से
उपचयः	–	अभिवृद्धिः, अभ्युदयः	–	वृद्धि, उत्थान
गात्रम्	–	शरीरः	–	शरीर
मृजा	–	स्वच्छीकरणम्	–	स्वच्छ करना
क्लम्	–	श्रमजनितं शैथिल्यम्	–	थकान
पिपासा	–	पातुम् (जलम्) इच्छा	–	प्यास
उष्ण	–	तप्तः	–	गर्म
स्थौल्यम्	–	अतिमांसलत्वम्, पीनता	–	बहुत मोटापा
अपकर्षणम्	–	दूरीकरणम्	–	खीचकर दूर करना, कम करना
अर्दयन्ति	–	अर्दनं कुर्वन्ति	–	कुचल डालते हैं।
अरयः	–	शत्रवः	–	शत्रु, दुश्मन
सहसाक्रम्य	–	अकस्मात् आक्रमणं कृत्वा	–	अकस्मात् हमला करके
जरा	–	वार्धक्यम्	–	बुढापा
स्विन्नगात्रस्य	–	स्वेदेन सिक्तस्य	–	पसीने से लथपथ के
विदग्धम्	–	सुपक्वम्	–	भली प्रकार पके हुए
परिपच्यते	–	जीर्यते	–	पच जाता है।
अहन्	–	दिवसः	–	दिन
पुम्भिः	–	पुरुषैः	–	पुरुषों के द्वारा
वक्त्रं	–	मुखं	–	मुँह
अशनानि	–	आहाराः/भोजनानि	–	भोजन
सुविभक्तता	–	शारीरिकम् सुगठनम्	–	शारीरिक सुगठन
वैनतेयः	–	गरुडः	–	गरुड़
उरगः	–	सर्पः	–	साँप

शरीरायासजननं कर्म व्यायाम इति कथ्यते।

व्यायामेन स्वास्थ्यवृद्धि सौन्दर्यवृद्धि, स्फूर्ति., अङ्गाना सुगठनम्, जठराग्ने दीपन, आलस्यहीनता च भवति।

व्यायामात् आरोग्य जायते, सहिष्णुता वर्धते, पीनत्वं हीयते।

अर्धशक्त्या एव व्यायाम. कुर्यात्। एतद्विपरीतं हानिकर भवति।

नियमितरूपेण व्यायाम कुर्वन् जन असमये वार्धक्यं न प्राप्नोति।

व्यायामिन पुरुष व्याधयः तथैव नायान्ति यथा वैनतेयस्य समीपम् सर्पाः नायान्ति।

i. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत–**

क. शरीरायासजननं कर्म किम् उक्तम् ?

ख. व्यायाम सदा कि कथ्यते ?

ग. स्थौल्यस्य अपकर्षणं कथं भवति ?

घ. कियत् बलेन व्यायाम कर्त्तव्य ?

ङ. के व्यायामिनं पुरुष न अर्दयन्ति ?

. **अधोलिखितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

क. व्याधयः कस्य सकाशं न उपसर्पन्ति ?

ख. परमम् आरोग्य कथम् उपजायते ?

ग. जरा कस्य सकाश सहसा न समधिरोहति ?

घ. पाठेऽस्मिन् उरगस्य तुलना केन सह कृता वैनतेयस्य च केन सह ?

ङ. व्यायामः कीदृशं जनं सुदर्शनं कुरुते ?

च. आत्महितैषिभि. कदा किम् कर्त्तव्यम् ?

2. उदाहरणमनुसृत्य यथास्थानाम् रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा–	पातुम्	इच्छा	पिपासा
	कर्त्तुम्	इच्छा	चिकीर्षा
क.	————	————	जिगमिषा
ख.	————	————	जिजीविषा
ग.	भोक्तुम्	इच्छा	————
घ.	————	————	पिपठिषा
ङ.	ज्ञातुम्	इच्छा	————
च.	————	————	तितीर्षा

3. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

क. **शरीरस्य** आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।
ख. **व्यायामात्** परमम् आरोग्यम् उपजायते।
ग. **बलस्यार्धेन** व्यायामः कर्त्तव्यः।
घ. **गात्राणां** सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।
ङ. **अरयः** व्यायामिनं न अर्दयन्ति।
च. **व्यायामशालिनं** जन व्याधयः न उपसर्पन्ति।

4. व्यायामेन के – के लाभाः सन्ति ? चतुर्षु वाक्येषु लिखत–

5. निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् प्रयोगं रिक्तस्थानेषु कुरुत–

सहसा, समन्ततः, अपि सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा

क. ———— व्यायामं कर्त्तव्यम् ।
ख ———— मनुष्यः सम्यक्रूपेण व्यायाम करोति, सः ———— स्वस्थः तिष्ठति।
ग. असुन्दराः ———— सुन्दराः भवन्ति।
घ. व्यायामेन ———— किञ्चित् स्थाल्यापकर्षणं नास्ति।
ङ. नापित ———— शरीर मर्दयति।
च. व्यायामिनं जनस्य सकाशम् ———— वार्धक्यम् न आयाति।

6. क. **समस्तपदानि / विग्रहं लिखत।**

क.	शरीरस्य आयासः	————
ख.	————	शरीरोपचयः
ग.	स्थौल्यस्य अपकर्षणम्	————
घ.	————	व्यायामनिरताः

ख. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् पृथक् कृत्वा लिखत।
यथा –

	सुदर्शनम्	सु + दर्शनम्
क.	उपजायते	______ + ______
ख.	अपकर्षणम्	______ + ______
ग.	अधिरोहति	______ + ______
घ.	प्रपद्यते	______ + ______
ङ.	सुविभक्तता	______ + ______

7. उदाहरणमनुसृत्य तरप् – तमप् प्रत्यययोगेन पदरचनां कुरुत।

		तरप्	तमप्
उदाहरणम्	उच्चः	उच्चतरः	उच्चतमः
क.	पथ्य	______	______
ख.	अधिकः	______	______
ग	गुरु	______	______
घ.	शीघ्रम्	______	______
ङ.	अल्पम्	______	______
च.	तीव्रम्	______	______
छ.	कुशलः	______	______
ज	बलवत्	______	______

क सुश्रुतः आयुर्वेदस्य 'सुश्रुतसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अस्मिन् ग्रन्थे शल्यचिकित्सायाः प्राधान्यमस्ति। सुश्रुतः शल्यशास्त्रज्ञस्य दिवोदासस्य शिष्य आसीत्। दिवोदासः सुश्रुतं वाराणस्या आयुर्वेदमपाठयत्। सुश्रुतः दिवोदासस्योपदेशान् स्वग्रन्थेऽलिखत्।

ख उपलब्धासु आयुर्वेदीयसंहितासु सुश्रुतसंहिता सर्वश्रेष्ठः शल्यचिकित्साप्रधानो ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे 120 अध्यायेषु क्रमेण सूत्रस्थाने मौलिकसिद्धान्तानां शल्यकर्मोपयोगियन्त्रादीनां, निदान स्थाने प्रमुखानां रोगाणां, शरीरस्थाने शरीरशास्त्रस्य चिकित्सास्थाने, शल्यचिकित्सायाः कल्पस्थाने च विषाणां प्रकरणानि वर्णितानि। अस्योत्तरतन्त्रे 66 अध्यायाः सन्ति।

(i) **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**

(ii) **लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।**
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

(iii) यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनम्, उचितश्च व्यवहारः आवश्यकोऽस्ति तथैव शरीरस्य स्वास्थ्याय व्यायामः अपि अत्यावश्यकः।

(iv) पक्षिणः आकाशे उड्डीयन्ते तेषां उड्डयनमेव तेषां व्यायामः। पशवोऽपि इतस्ततः पलायन्ते, पलायनमेव तेषां व्यायामः। शैशवे शिशुः स्वहस्तपादौ चालयति, अयमेव तस्य व्यायामः। व्यायामेन शरीरस्य अङ्गाना विकासो भवति। मनुष्यैः सुखपूर्वकं जीवनं यापयितुं नित्यं व्यायामः करणीयः।

व्यायामः (पु) = वि + आ + यम् + घञ् = पौरुष

अष्टमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ महाकवि भास-विरचित पञ्चरात्र नामक नाटक के द्वितीय अङ्क से सम्पादित कर उद्धृत है। दुर्योधनादि कौरव वीरों द्वारा आक्रमण करके राजा विराट की गायों का हरण कर लिया जाता है। विराट पुत्र उत्तर बृहन्नला को सारथी बनाकर कौरव सेना का सामना करने जाते हैं। कौरवों की तरफ से अभिमन्यु भी लड़ रहा होता है। इसी बीच पुत्र की सहायता के लिए उद्यत महाराज विराट को दूत से सूचना मिलती है कि भीष्म आदि महारथी युद्ध में परास्त हो गए हैं। केवल अभिमन्यु हीं लड रहा है। कुछ समय बाद दूत पुनः सूचना देता है कि पाकशाला के रसोइये बल्लभ द्वारा अभिमन्यु पकड़ लिया गया है। यह सुन कर राजा विराट अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु को आदर पूर्वक अपने समक्ष उपस्थित करने का आदेश देते हैं। इस पाठ में अभिमन्यु के साथ छद्मवेशी भीम तथा अर्जुन के साथ हुए वार्तालाप का वर्णन है।)

भटः – जयतु महराजः।

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः असि ?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं सौभद्रो ग्रहणं गतः।

राजा – कथमिदानीं गृहीतः ?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं बाहुभ्यामवतारितः।

राजा – केन ?

भटः – यः किलैष नरेन्द्रेण महानसे विनियुक्तः, तेन

बृहन्नला – (अपवार्य) एवम् ! आर्यभीमेन परिष्वक्तः, न तु गृहीतः।

राजा – तेन हि सत्कृत्य प्रवेश्यतामभिमन्युः। अथ केनायं प्रवेशयितव्यः ?

भगवान् – बृहन्नलया प्रवेशयितव्यः।

राजा – बृहन्नले ! प्रवेश्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – यदाज्ञापयति महाराजः। (आत्मगतम्) चिरस्य खल्वाकांक्षितोऽयं नियोगः लब्धः। (निष्क्रान्ता)

(ततः प्रविशति भीमः अभिमन्युना सह)

भीमसेनः – (स्वगतम्)

आदीपिते जतुगृहे स्वभुजावसक्ता,
मद्भ्रातरश्च जननी च मयोपनीताः।

सौभद्रमेकमवतार्य रथात्तु बालम्,
तं च श्रमं प्रथममद्य समं हि मन्ये।।
(प्रकाशम्) इतः इतः कुमार।

अभिमन्युः – भोः को नु खल्वेषः ? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अये ! अयमपरः कः ?
अयुज्यमानैः प्रमदाविभूषणैः, करेणुशोभाभिरिवार्पितो गजः।
लघुश्च वेषेण महानिवौजसा, विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।।

बृहन्नला – (अपवार्य) इममिहानयता किमिदानीमार्येण कृतम् ? प्रथमे युद्धे एव अभिमन्युः पराजयतां नीतः। नैतत् शोभनम्। पूर्वमेव पतिवियुक्ता सुभद्रा पुत्रवियुक्तापि कृता। अभिमन्युं प्रति वासुदेवोऽपि रुष्यति ? एवं स्वात्मभुजबलमेव त्वया दूषितः।

भीमसेनः – अर्जुन !

बृहन्नला – अथ किम् अथ किम् अर्जुनपुत्रोऽयम्।

भीमसेनः – (अपवार्य) जानामि यत् इममिहानयता नोचितं कृतं परं किं स्वपुत्रं शत्रुहस्ते त्यक्तुं युज्यते। अपि च दुःखे मग्ना द्रौपदी एनं पश्यतु। इति विचिन्त्य एवाहृतः अयम्।

बृहन्नला – आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्। वाचालयत्वेनमार्य।

भीमसेनः – (अपवार्य) बाढम्, (प्रकाशम्) अभिमन्यो !

अभिमन्युः – अभिमन्युर्नाम

भीमसेनः – रुष्यत्येष मया त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला – अभिमन्यो !

अभिमन्युः – कथं कथम् ! अभिमन्युर्नामाहम् ! भोः ! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते अथवा अहं शत्रुवशं गतः अत एव तिरस्क्रियते।

बृहन्नला – अभिमन्यो ! सुखमास्ते ते जननी ?

अभिमन्युः – कथं कथम् ? जननी नाम ? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे ?

बृहन्नला – अभिमन्यो ! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः ?

अभिमन्युः – कथं कथम् ? तत्रभवन्तमपि नाम्ना ! अथ किम् अथ किम्? कुशली भवतः संसृष्टः।

(उभौ परस्परमवलोकयतः)

अभिमन्युः – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते ?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।

पार्थ ! पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम्।
तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः।।

अभिमन्युः – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन ! अस्माकं कुले आत्मस्तवंकर्तुमनुचितम्! रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य मदृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम् ! किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः ?

अभिमन्युः – अशस्त्रः मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति अतः अशस्त्रोऽयं माम् व चयित्वा गृहीतवान्।

भीमसेनः – (आत्मगतम्)

धन्यः खल्वर्जुनो येन प्रत्यक्षमुभयं श्रुतम्।
पुत्रस्य च पितुःश्लाघ्यं संग्रामेषु पराक्रमः ।।

अश्रद्धेयम्	– न श्रद्धेयम्	– श्रद्धा के अयोग्य
सौभद्रः	– सुभद्रायाः पुत्रः अभिमन्युः	– सुभद्रा का पुत्र अर्थात् अभिमन्यु
आसाद्य	– प्राप्य	– पहुँच कर

निःशङ्कम्	– शङ्कया रहितम्	– बिना किसी हिचक के
विनियुक्तः	– अधिकृतः	– जिसे विशेष रूप में नियुक्त किया गया है।
महानसे	– पाकशालायाम्	– रसोई मे
परिष्वक्तः	– आलिङ्गितः	– जिसका आलिङ्गन किया गया है।
सत्कृत्य	– सत्कारं कृत्वा	– सत्कार करके
चिरस्य खलु	– सुचिरप्रतीक्षित.	– अत्यत चिरकाल से जिसकी प्रतीक्षा की जा रही हो।
नियोगः	– आज्ञा	– आदेश
लब्धः	– प्राप्तः	– प्राप्त किया।
जतु	– लाक्षा	– लाख
आदीपिते	– अग्निना प्रदीप्ते	– आग से जलने पर
उपनीताः	– स्थानान्तरं प्रापिताः	– दूसरे स्थान पर पहुँचाए गए।
भुजैकनियंत्रितः	– एकेनैव बाहुना संयत.	– एक ही हाथ से पकडा हुआ (पकड कर लाया हुआ)।
प्रमदा	– स्त्री	– स्त्री
विभूषणैः	– अलङ्करणैः	– गहनों से
करेणुः	– हस्तिनी	– हथिनी
विभाति	– शोभते	– शोभित होता है।
वियुक्ता	– पृथक्भूता	– अलग हुई।
रुष्यति	– क्रुद्धः भवति	– क्रुद्ध होता है।
दूषितः	– भ्रष्टः, विकृतः, दोषयुक्त.	– दोषयुक्त
वाचालयतु	– वक्तुं प्रेरयतु	– बोलने को प्रेरित करे।
पितृव्यः	– पितुः भ्राता	– चाचा
संसृष्टः	– सम्बन्धी	– सम्बन्धी
अवलोकयतः	– पश्यतः	– देखते है
ऋते	– विना	– बिना
वाक्शौण्डीर्यम्	– वाचनिकं वीरत्वम्	– वाचनिक वीरता।
पदातिः	– पद्भ्याम् अतति	– पैदल चलने वाला
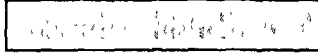
- भटः प्रविश्य महानसे विनियुक्तेन सूदेन अभिमन्योः हरणवार्ताम् राज्ञे विज्ञापयति।
- बृहन्नला भीमसेनश्च अभिमन्युमधिकृत्य वार्तालापं कुरुतः।
- अभिमन्युना सह वक्तुकामा बृहन्नला तस्य मातुः सुभद्रायाः कृष्णस्य च कुशलं पृच्छति।
- स्वापहरणात् क्रुद्धः अभिमन्युः बृहन्नलाभीमसेनाभ्यां सह वार्ता कर्तुं नेच्छति।
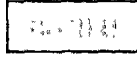
1. एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत–

क. अस्मिन् नाट्यांशे भटेन कस्य हरणं ज्ञापितम् ?

ख. अभिमन्युः केन गृहीतः ?

ग बृहन्नलायाः वेशे वस्तुतः कः आसीत् ?

घ प्रथमे युद्धे एव कः पराजयतां नीतः ?

ङ. अभिमन्योः कुले किं कर्तुम् अनुचितम् आसीत् ?

1. संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत–

क. अभिमन्युः कथं गृहीतः आसीत् ?

ख बृहन्नला भीमसेनम् अभिमन्युं वाचालयितुं किमर्थं कथयति ?

ग भीमसेनः अर्जुनं किमर्थं धन्यं मन्यते ?

घ. भीमसेनः किं विचार्य अभिमन्युं गृहीतवान् ?

ङ. अभिमन्युः आत्मानं कथं तिरस्कृतमिव अनुभवति ?

2. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

क. अभिमन्युः **बृहन्नलया** प्रवेशयितव्यः।

ख. भीमः **अभिमन्युना** सह प्रविशति।

ग **उभौ** परस्परमवलोकयतः।

घ. **अभिमन्युः** पदातिना गृहीतः।

ङ अभिभाषणकौतूहलं मे महत्।

3. **अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत–**

1. भोः ! को नु खल्वेष ? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।
(विस्मयः, हर्षः, जिज्ञासा)
2. इममिहानयता किमिदानीमार्येण कृतम् ?
(क्रोधः, नैराश्यम्, क्षोभः)
3. अभिमन्युर्नामाऽहम्
(आत्मप्रशंसा, स्वाभिमानः, दैन्यम्)
4. कथ मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगता कथां पृच्छसे ?
(लज्जा, क्रोधः, प्रसन्नता)

4. **म जूषातः अव्ययपदानि विचित्य अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत–**

क. भीमः अभिमन्युना ———— प्रविशति।
ख. ———— केनायं प्रवेशयितव्यः।
ग. पूर्वमेव पतिवियुक्ता सुभद्रा पतिवियुक्ता ———— कृता।
घ. प्रथमे युद्धे ———— अभिमन्युः पराजयता नीत।
ङ. भोः को नु ———— एषः।
च. अपूर्वः ———— ते हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः असि ?

इव,	एव,	खलु
सह,	अथ,	अपि

5. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु उचितां विभक्तिं प्रयुज्य वाक्यानि पूरयत–**

उदाहरण – भीमः – सह प्रविशति। (अभिमन्यु)
भीमः **अभिमन्युना** सह प्रविशति।

क. ———— सह सीता अपि वनम् अगच्छत्। (राम)
ख. पुत्रः अपि ———— साकम् आपणं गच्छति। (पितृ)
ग. ———— समम् राधा अपि भोजन पचति (लता)
घ. सः ———— प्रति गच्छति। (विद्यालय)
ङ. अहम् ———— प्रति गच्छामि। (गृह)

6. **उदाहणमनुसृत्य पदपरिचयं कुरुत–**

क.	त्यक्तुम्	–	त्यज् + तुमुन्।
	पठितुम्	–	________ + ________
	गन्तुम्	–	________ + ________
ख	समासाद्य	–	सम् + आ + सद् + णिच् + ल्यप्
	आदाय	–	________ + ________ + ________
	सम्पूज्य	–	________ + ________ + ________
ग.	विस्मितः	–	वि + स्मि + क्त
	पूजितः	–	________ + ________
	कृत.	–	________ + ________

अष्टमः पाठः

(प्रस्तुत पाठ महाकवि भास-विरचित पञ्चरात्रम् नामक नाटक के द्वितीय अङ्क से सम्पादित कर उद्धृत है। इसमें पिछले नाट्यांश के आगे की घटना का वर्णन है।

राजा विराट बृहन्नला से अभिमन्यु को उनके समक्ष शीघ्रता से लाने का निर्देश देते हैं। महाराज विराट को अपना नरेश न मानते हुए अभिमन्यु उन्हें प्रणाम नहीं करता है किन्तु पास में खड़े ब्राह्मणवेशधारी युधिष्ठिर को प्रणाम करता है। युधिष्ठिर अभिमन्यु को आशीर्वाद देते हैं। महाराज विराट अभिमन्यु के व्यवहार से किंचित् क्षुब्ध होकर उसके गर्व को अपनी आक्षेप भरी वाणी से शमन करने की चेष्टा करते हैं। इसी क्रम में भीमसेन से वीरतापूर्ण वाणी को सुनकर अभिमन्यु उनसे पूछता है कि आप कौन हैं ? जो मेरे मध्यम तात के समान वचन बोल रहे हैं। महाराज विराट द्वारा मध्यम तात के विषय में पूछने पर अभिमन्यु कहता है कि जिन्होंने जरासन्ध का वध किया है वही मेरे मध्यम तात हैं। इसी बीच राजकुमार उत्तर का प्रवेश होता है जिसके द्वारा सभी को अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर का भेद ज्ञात हो जाता है। अपने पितृचरणों को सम्मुख देख अभिमन्यु अत्यधिक प्रसन्न होता है और तुरन्त उन्हें प्रणाम करता है।)

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्युः – आः ! कस्य महाराजः ?

बृहन्नला — न, न ब्राह्मणेन सहास्ते।
अभिमन्युः — ब्राह्मणेनेति ? (उपगम्य) भगवन् ! अभिवादये।
भगवान् — एह्येहि वत्स।
शौण्डीर्यं धृतिविनयं दयां स्वपक्षे माधुर्यं धनुषि जयं पराक्रमं च।
एकस्मिन् पितरि गुणानवाप्नुहि त्वं शेषाणां यदपि रोचते चतुर्णाम्।।1।।
अभिमन्युः — अनुगृहीतोऽस्मि।
राजा — एह्येहि पुत्र ! कथं न मामभिवादयसि ? अहो ! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। अथ केनायं गृहीतः ?
भीमसेनः — महाराज ! मया।
अभिमन्युः — अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।
भीमसेनः — शान्तं पापम् ! धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
अभिमन्युः — मा तावद्भोः ! किं भवान् मध्यमः तातः यः तस्य सदृशं वचः वदति।
भगवान् — पुत्र कोऽयं मध्यमो नाम ?
अभिमन्यु — श्रूयताम् ! अथवा नन्वनुत्तरा वयं ब्राह्मणेषु। साध्वन्यो ब्रूयात्।
राजा — भवतु ! भवतु ! मद्वचनात् पुत्र ! कोऽयं मध्यमो नाम ?
अभिमन्युः — योक्त्रयित्वा जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना।
असह्यं कर्म तत् कृत्वा नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्।।2।।
राजा — न ते क्षेपेण रुष्यामि, रुष्यता भवता रमे।
किमुक्त्वा नापराद्धोऽहं, कथं तिष्ठति यात्विति।।3।।
अभिमन्युः — यद्यहमनुग्राह्यः —
पादयोः समुदाचारः, क्रियतां निग्रहोचितः।
बाहुभ्यामाहृतं भीमः, बाहुभ्यामेव नेष्यति।।4।।
(ततः प्रविशत्युत्तरः)
उत्तरः — तात ! अभिवादये।

राजा — आयुष्मान् भव पुत्र ! पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।
उत्तरः — पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

राजा — पुत्र ! कस्मै ?
उत्तरः — इहात्रभवते धनञ्जयाय।
राजा — कथं धनञ्जयायेति।
उत्तरः — अथ किम्
श्मशानद्धनुरादाय तूणी चाक्षयसायके।
नृपा भीष्मादयो भग्ना वयं च परिरक्षिताः।।5।।
राजा — एवमेतत्
उत्तरः — व्यपनयतु भवाञ्छङ्काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।

बृहन्नला – यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।

अभिमन्युः – इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु

न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम्।
दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः।।6।।

(भीमसेनमुद्दिश्य) भोस्तात !

अज्ञानात्तु मया पूर्वं यद्भवान् नाभिवादितः!
तस्य पुत्रापराधस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि।।7।।

(इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति)

श्लाघ्यम्	– प्रशंसायोग्यम्	– प्रशंसा योग्य
त्वर्यताम्	– शीघ्रतां करोतु	– शीघ्रता करें
उत्सिक्तः	– गर्वोद्धतः	– गर्व से उद्धत
दर्पप्रशमनं	– गर्वस्य शमनम्	– गर्व का शमन करना।
प्रहरणम्	– शस्त्रम्	– हथियार
योक्त्रयित्वा	– बद्ध्वा	– बाँधकर
क्षेपेण	– निन्दावचनेन	– निन्दा से
रमे	– प्रीतो भवामि	– प्रसन्न होता हूँ।
व्यपनयतु	– दूरीकरोतु	– दूर करें
आप्नुहि	– प्राप्नुहि	– प्राप्त करो / करें
तूणी	– तूणीरम्	– तरकस
क्षिप्ता	– आक्षेपिता	– आक्षेप किए जाने पर
दिष्ट्या	– भाग्येन	– भाग्य से
गोग्रहणम्	– धेनूनामपहरणम्	– गायों का अपहरण
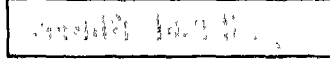
- राजसभायां प्रवेशानन्तर राज्ञा सह अभिमन्यो. वार्तालाप. भवति।
- भीमसेनेन बृहन्नलया च पृष्टः अभिमन्युः रोषवशात् सम्यक् उत्तर न ददाति।
- अभिमन्यु वार वारं स्वपितृव्यानां शौर्यस्य व्याख्यानं करोति।
- येन बाहुभ्या बध्वा जरासन्ध. हतः स एव मध्यम. तात।
- अह अत्र बाहुभ्याम् आनीत., मम तात भीमः माम् इतः बाहुभ्याम् नेष्यति।
- बृहन्नलावेषधरेण अर्जुनेनैव श्मशानाद्धनुरादाय भीष्मादयो नृपाः पराजिताः वय च रक्षिता।
- गोग्रहण भाग्येन सञ्जात येन स्वपितृन् दृष्टवानहम्।
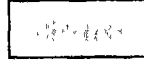
1. **एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत–**
   - क. बृहन्नलायाः वेशे वस्तुतः क· आसीत् ?
   - ख. कस्य भुजौ एव प्रहरणम् ?
   - ग. भीमसेनः जरासन्धं केन बद्धवान् ?
   - घ. चतुर्णां पितृणां कति गुणः वर्णिताः ?

1. **संस्कृतभाषया पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत–**
   - क. के पूजिताः ?
   - ख. उत्तरः कः आसीत् ?
   - ग. अभिमन्युः कस्य शौर्यस्य व्याख्यानं करोति ?
   - घ. स्वरहस्यप्रकटिते सति बृहन्नलया किमुक्तम् ?
   - ङ. अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः इति क. उक्तवान् ?
2. **स्थूलापदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   - क. उत्सिक्तः खलु **अयं क्षत्रियकुमारः**।
   - ख. नन्वनुत्तरा वयं **ब्राह्मणेषु**।

ग. धनु. दुर्बलैः गृह्यते।

घ. इहात्रभवन्तो मे पितर.।

ङ पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

3. **अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत–**

1. पादयोः समुदाचारः क्रियतां निग्रहोचितः।
   (शोकः, हर्षः, आत्मविश्वासः)
2. बाहुभ्यामाहृतं, भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।
   (दृढविश्वासः, उत्साहः, निराशा)
3. धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते, मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।
   (शौर्य. वाक्सयमः, उत्साह.)
4. दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्त पितरो येन दर्शिता.।
   (धृति., क्षमा, हर्ष.)

4. **उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–**

उदाहरण	येन पितरः दर्शिता.	यः पितॄन् दर्शितवान्।
क	केन अय गृहीतः ?	______________
ख	पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।	______________
ग	भवद्भि. वयं परिरक्षिताः।	______________
घ.	भवान् शंकां व्यपनयतु।	______________
ङ	वय ब्राह्मणेषु अनुत्तराः जाताः।	______________

5. **उदाहरणनुसारं कोष्ठकप्रदत्तशब्देन सह समुचिताम् – उपपदविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

उदाहरण – किं **भवते** पितॄणां गुणाः रोचन्ते ? (भवत्)

क ________ मोदकाः अतीव रोचन्ते। (अस्मद्)

ख ________ सह सः विराजते। (ब्राह्मण)

ग. भवान् कथ न ________ अभिवादयति ? (अस्मद्)

घ. पिता ________ विश्वसिति (पुत्र)

ङ ________ पूजा अनिवार्या ? (किम् पुल्लिङ्ग)

च अह ________ न अपराद्धः। (युष्मद्)

K

कविपरिचयः

संस्कृतनाटककारेषु महाकवेः भासस्य नाम अग्रगण्यम् अस्ति। अस्य नाटकानाम् प्रकाशनम् सर्वप्रथमं विशेषानुसन्धानेन 1902 तमे वर्षे टी गणपतिशास्त्रिणा एव कृतम्। अस्य कवेः त्रयोदशनाटकानि सन्ति येषां नामानि –

दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, उरुभङ्गम्, मध्यमव्यायोगः, पञ्चरात्रम्, अभिषेकनाटकम्, बालचरितम्, अविमारकम्, प्रतिमानाटकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम्, चारुदत्तम् च सन्ति।

ग्रन्थपरिचयः

अयं नाट्यांशः महाकविभासविरचितात् 'पञ्चरात्रम्' इति नाम नाटकात् गृहीतः। महाभारतस्य विराटपर्वे पाण्डवानाम् अज्ञातवाससमये दुर्योधनः एकं यज्ञं करोति। यज्ञस्य समाप्त्यनन्तरं दुर्योधनः आचार्यद्रोणाय गुरुदक्षिणां दातुमिच्छति। गुरुः पाण्डवानां राज्याधिकारं गुरुदक्षिणारूपेण इच्छति। अनेन क्रोधितः शकुनिः विरोधं करोति। अस्मिन् प्रसङ्गे दुर्योधनः कथयति यदि गुरुद्रोणः पाण्डवानाम् अज्ञातवासं पञ्चरात्रिषु प्रकटयन्तु तर्हि तेषां दायाद्यं दातुं शक्यते। अत एव अस्य नाटकस्य नाम 'पञ्चरात्रम्' इत्यस्ति।

अस्मिन् नाटके स्वकीये यज्ञे विराटराज्ञः अनुपस्थितिकारणात् रुष्टः दुर्योधनः तस्य गोधनं हर्तुं विराटनगरम् आक्रामति तत्र अभिमन्युः अपि कौरवपक्षात् युद्धक्षेत्रं गच्छति यत्र भीमसेनः छद्मवेषेण अभिमन्योः हरणं करोति।

क. अतदर्हताम् – जरासन्धवध – अनर्हत्वम् (dreadful dead) जरासंधं हत्वा भीमेन श्रीकृष्णाय शत्रुवधस्य अवसरः नैव प्रदत्तः

ख. जरासन्धः – कृष्णः जरासंधस्य जामातुः कंसस्य बधमकरोत् येन जरासंधस्य पुत्रीवैधव्यं प्रापिता। अनेन क्रुद्धः जरासन्धः सर्वेषां यदुवंशीयानां विनाशस्य प्रतिज्ञां कृतवान्। एतदर्थम् सः वारंवारम् मथुरायाम् आक्रमणमकरोत् कृष्णम् च अष्टादशवारं गृहीतवान् परं यथाकथञ्चित् कृष्णः ततः पलायितः। अस्मिन्नाटके भीमसेनः कथयति यत् धनुः दुर्बलैः गृह्यते मम तु भुजौ एवं प्रहरणम् एतादृशः एव भावः अन्येषु अपि नाटकेषु दृश्यते। तद्यथा –

(i) अयं तु दक्षिणो बाहुरायुधं सदृश मम – मध्यमव्यायोग.
(ii) भीमस्यानुकरिष्यामि शस्त्रं बाहुर्भविष्यति। मृच्छ
(iii) वयमपि च भुजायुद्धप्रधाना। अवि

ग. महाभारतानुसार भीमस्य जन्म युधिष्ठिरानन्तरम् अभवत्। तत्र अर्जुनः एव मध्यमः मन्यते परं महाकवि. भासः भीमम् एव मध्यमपाण्डवं स्वीकरोति।

(i) 'अलम्' इतिनिषेधार्थे तृतीयाविभक्तिः प्रयुज्यते।
(ii) पर्याप्ते अर्थे च चतुर्थी विभक्तिः।

यथा– अलम् स्वच्छन्दप्रलापेन।
अलम् विवादेन।
अलम् प्रमादेन।
अलम् कोलाहलेन।

अत्र 'अलम्' इतिशब्दस्य योगे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता।

अलम् भीमः **दुर्योधनाय** अलम्।
अलम् अर्जुनः **कर्णाय** अलम्।
अलम् लक्ष्मणः **मेघनादाय** अलम्।

अत्र 'अलम्' इति शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्तिः प्रयुक्ता।

1. कर्तृकर्मभाववाच्येषु क्रियारूपाणि अधोलिखितानि भवन्ति।

कर्तृवाच्ये	–	कर्मवाच्ये / भाववाच्ये
पठति	–	पठ्यते
लिखति	–	लिख्यते
खादति	–	खाद्यते
पिबति	–	पीयते
गायति	–	गीयते
हसति	–	हस्यते
शृणोति	–	श्रूयते

2. अव + लोकृ धातोः रूपाणि –

लट् लकारे

अवलोकयति	अवलोकयतः	अवलोकयन्ति
अवलोकयसि	अवलोकयथः	अवलोकयथ
अवलोकयामि	अवलोकयावः	अवलोकयामः

नवमः पाठः

[illegible]

(हमारे वातावरण में भौतिक सुख के साथ-साथ अनेकों प्रकार की आपदाएँ भी साथ-साथ लगी रहती हैं। प्राकृतिक आपदाएं जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। कभी किसी महामारी की आपदा, बाढ़ तथा सूखे की आपदा या तूफान के रूप में महा भयंकर प्रलय – ये सब हम अपने जीवन में देखते रहते है। ऐसी ही एक प्राकृतिक आपदा है – भूकंप। जिसके बारे में इस पाठ में दृष्टिपात किया गया है। इस पाठ के माध्यम से यह बताया गया है कि किसी भी आपदा में बिना किसी घबराहट के, हिम्मत के साथ किस प्रकार हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं।)

2001 तमे वर्षे गणतन्त्रदिवसपर्वणि यदा समग्रमपि भारतराष्ट्रं नृत्यगीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जरराज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं, विपन्नञ्च जातम्। भूकम्पस्य दारुणविभीषिका समस्तमपि गुर्जरक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपदं ध्वंसावशेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु मृत्तिकाक्रीडनकमिव खण्डखण्डम् जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युद्दीपस्तम्भाः। विशीर्णाः गृहसोपानमार्गाः। फालद्वये विभक्ता भूमिः। भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वारजलधाराभिः महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता

सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं करुणकरुणं क्रन्दन्ति स्म। हा दैव ! क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।

इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छभूकम्पस्य। एतादृशी एव भयावहघटना कतिपयवर्षपूर्वं गढवालक्षेत्रे महाराष्ट्रे चापि घटिता। किञ्च, समग्रमपि विश्वमिदानीमातंकितं दृश्यते भूकम्पैः। विचित्रमिदम् पृथिव्याः कम्पनं येन हसन्, गायन्, नृत्यन् सुखेन जीवंश्च लोको नेत्रनिमीलनावधौ एव श्मशानतामुपयाति।

प्राक्तनयुगेऽपि भूकम्पा अजायन्त। देवराज इन्द्र एव प्रथमं व्यथमानां प्रकुपितां प्रचलन्तीं च पृथ्वीं शान्तामकरोदित्याह ऋग्वेदः। पृथ्वी कस्मात्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमाना बृहत्यः पाषाणशिला यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनं च। तदेव भयावहकम्पनं धराया उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिस चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या पर्वताग्रमुखं विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूमभस्मावृतं जायते तदा गगनम्। सेल्सियशतापमात्राया अष्टशताङ्कतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पार्श्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति। आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिर्निहन्यन्ते पिपीलिका इव विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम। यद्यपि तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते, प्रकृतिसमक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पु जीकरणीयम् अन्यथा एवं कृते हि असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति। वस्तुतः शान्तानि एव प चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

[illegible]

नृत्यगीतवादित्राणाम्	–	नृत्यगीतवाद्यानाम्	–	नाच गाने एवं बाजो के
पर्याकुलम्	–	व्याकुलम्	–	व्याकुल
विपर्यस्तम्	–	अस्तव्यस्तम्	–	अस्त-व्यस्त
क्रन्दनविकलम्	–	क्रन्दनेन विकलम्	–	क्रन्दन से व्याकुल
विपन्नम्	–	विपत्तियुक्तम्	–	विपत्तिग्रस्त
परिवर्तितवती	–	परिवर्तनं कृतवती	–	परिवर्तित कर दिया
मृत्तिकाक्रीडनकमिव	–	मृत्तिकायाः क्रीडनकमिव	–	मिट्टी के खिलौने के समान
बहुभूमिकानि	–	बहव्य. भूमिकाः	–	बहुमंज़िले मकान
उत्खाताः	–	उत्पाटिताः	–	उखड गए
विद्युद्दीपस्तम्भाः	–	विद्युतः दीपाः तेषाम् स्तम्भाः (तत्पुरुष)	–	बिजली के खम्भे

विशीर्णाः	–	नष्टाः	–	बिखर गए
फालद्वये	–	खण्डद्वये	–	दो खण्डो मे
निस्सरन्तीभिः	–	आगच्छन्तीभिः	–	निकलती हुई ; बाहर आती हुई
दुर्वार	–	दुःखेन निवारयितु योग्यम्	–	जिनको हटाना कठिन है।
महाप्लावनम्	–	महत् प्लावनम्	–	विशाल बाढ
प्राणिनः	–	प्राणवन्तः	–	प्राणवान् प्राणी
नेत्रनिमीलनावधौ	–	नेत्रनिमीलनस्य अवधौ	–	नेत्र बन्द करने में लगने वाला समय (क्षण भर में)
श्मशानताम्	–	श्मशानभावम्	–	श्मशान जैसी दशा को
विचारणीयम्	–	विचारयोग्यम्	–	विचार करने योग्य
अजायन्त	–	उत्पन्नाः जाताः	–	उत्पन्न हुए
बृहत्यः	–	महत्यः	–	विशाल, बडी
क्वथयति	–	उत्तप्तं करोति	–	उबालती है, तपाती है
विदार्य	–	विदीर्णं कृत्वा	–	फाडकर
उच्छलन्तीभिः	–	उपरि गच्छन्तीभि.	–	उछलती हुई
उद्‌गिरन्तः	–	प्रकटयन्तः	–	प्रकट करते हुए
योगक्षेम	–	अप्राप्तस्य प्राप्ति योगः योगस्य रक्षणं इति क्षेम	–	अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त का रक्षण।

[illegible]

- गणतंत्रदिवससमारोहे गुर्जरराज्यस्य कच्छजनपदे विशेषतः भुजनगरे महाविनाशकारी भूकम्प. जातः।
- भूमिगर्भात् बहिः आगच्छन्तीभिः जलधाराभिः महाप्लावनस्य दृश्यम् उपस्थापितम्।
- अनेके जनाः अस्या दारुणविभीषिकायां मृताः परं केचन ईशकृपया रक्षिताः।
- भूकम्पस्य अन्याः घटनाः गढवालप्रदेशे, महाराष्ट्रप्रदेशे अपि घटिताः।
- भूकम्पेन नेत्रनिमीलिनावधौ हसन् खेलन् च जगत् श्मशानतां नीयते।
- विशालपाषाणशिलाना त्रुटनेन स्खलनं भवति, स्खलनेन च कम्पनम्। एतस्य एव कम्पनस्य

धरायाः उपरितले आगते महत्कम्पनं भवति, येन महाविनाशः सम्भवति।

- ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते।
- यद्यपि भूकम्परोद्धुं कश्चित् सुनिश्चितोपायः नास्ति तथापि बहुतलात्मकभवनानां निर्माणं परित्यज्य, महाजलाशयानां निर्माणं त्यक्त्वा, पञ्चभूतानां नैसर्गिकसतुलने विघातं विहाय भूकम्पं किञ्चित् न्यूनं कर्तुं शक्यते।

[illegible]

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकैनैव पदेन वदत–**
   - क. समस्तराष्ट्रं केषाम् उल्लासे मग्नं आसीत् ?
   - ख. भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत् ?
   - ग. पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते ?
   - घ. समग्रो विश्वः कैः आतंकितः दृश्यते ?
   - ङ. केषां पर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते ?
   - च. कीदृशानि भवनानि धराशायिनः जायन्ते ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   - क. पृथिव्याः प्रकोपः कथं विचित्रः प्रतिभाति ?
   - ख. पृथ्वी कथं प्रकम्पते ?
   - ग. भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कानि च तत्वानि कल्पन्ते ?
   - घ. गणतन्त्रदिवसपर्वणि गुर्जरप्रदेशः कीदृशो जातः ?
2. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**
   - **अ. परसवर्णसन्धिनियमानुसारम्**
     - (i) किञ्च = ________ + च
     - (ii) ________ = नगरम् + तु
     - (iii) विपन्नञ्च = ________ + ________
     - (iv) ________ = किम् + नु

(v) भुजनगरन्तु = ——— + ———

(vi) ——— = सम् + चय.

आ. विसर्गसन्धिनियमानुसारम्

(i) शिशवस्तु = ——— + ———

(ii) ——— = विस्फोटैः + अपि

(iii) सहस्रशोऽन्ये = ——— + अन्ये

(iv) विचित्रोऽयम् = विचित्रः + ———

(v) ——— = भूकम्पः + जायते

(vi) वामनकल्प एव = ———

3. क. विपरीतार्थपदानां मेलनं कुरुत–

	अ		ब
(i)	पर्याकुलम्	(i)	शान्तचित्ताम्
(ii)	विपन्नम्	(ii)	अशान्तानि
(iii)	क्षणेनैव	(iii)	विनाश्य
(iv)	निस्सरन्तीभिः	(iv)	अनाकुलम्
(v)	ध्वस्तभवनेषु	(v)	सुचिरेणैव
(vi)	प्रकुपिताम्	(vi)	सम्पन्नम्
(vii)	निर्माय	(vii)	प्रविशन्तीभिः
(viii)	शान्तानि	(viii)	नवनिर्मितभवनेषु

ख. समानार्थकपदानां मेलनं कुरुत–

(i)	पर्याकुलम्	(i)	संत्रोट्य
(ii)	उद्गिरन्तः	(ii)	समीपस्थम्
(iii)	प्रकुपिताम्	(iii)	खण्डद्वये
(iv)	क्षणेनैव	(iv)	क्रोधयुक्ताम्
(v)	विशीर्णाः	(v)	व्याकुलम्
(vi)	पार्श्वस्थम्	(vi)	अचिरेणैव
(vii)	विदार्य	(vii)	नष्टाः
(viii)	फालद्वये	(viii)	प्रकटयन्तः

4. क. **प्रत्ययं संयोज्य विभज्य वा लिखत—**

(i) परिवर्तितवती = परि + √ ———— + ———— = (स्त्री)

(ii) विशीर्णा = ———— + √ ———— + क्त (स्त्री)

(iii) ———— = √ जन् + क्त (नपुं)

(iv) धृतवान् = ————

(v) ———— = √ व्यथ् + शानच् (स्त्री)

(vi) हसन् = ———— + ————

(vii) गायन् = ———— + ————

(viii) ———— = प्र + √ चल् + शतृ (स्त्री)

ख. **पाठात् समस्तपदानि विचित्य लिखत - समासनामोल्लेखमपि कुरुत—**

यथा— महत् च तत् कम्पनम् - महाकम्पनम् - कर्मधारयः समास.

(i) दारुणा च सा विभीषिका ———— ————

(ii) ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु ———— ————

(iii) गृहस्य सोपानमार्गा. ———— ————

(iv) प्राक्तने च तस्मिन् युगे ———— ————

(v) पर्वतस्य अग्रमुखम् ———— ————

(vi) महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन् ———— ————

(vii) महाविनाशः ———— ————

(viii) महाप्लावनम् ———— ————

(ix) भैरवविभीषिका ———— ————

5. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—**

(i) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं **ध्वंसावशेषेषु** परिवर्तितवती।

(ii) ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं **करुणकरुणम्** क्रन्दन्ति स्म।

(iii) एतादृशी एव भयावहघटना **गढवालक्षेत्रे महाराष्ट्रे** चापि घटिता।

(iv) तदिदानीम् **भूकम्पकारणं** विचारणीयं तिष्ठति।

(v) **वैज्ञानिकाः** कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।

(vi) **विवशाः** प्राणिनः आकाशे उच्छलन्तीभिः शिलाभिः पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।

(vii) **प्रकृतिसमक्षम्** अद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव।

(viii) शान्तानि **प चतत्त्वानि** योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते।

6. भूकम्पविषयमवलम्ब्य अधोलिखितशब्दानां सहायतया प चवाक्यमितं अनुच्छेदमेकं लिखत–

सहायकाः शब्दाः

प्रकम्पते, भीषणः परिणामः, भवनानि प्रकृतेः असंतुलनम्, क्षणमात्रेण, विस्फोटनेन, क्षति, जायन्ते, ध्वस्तानि, भवन्ति

7. अधः भूकम्पशमनस्य कृते केचन उपायाः दत्ताः। उचितानाम् उपायानां समक्षं 'आम्' अनुचितानाम् उपायानां समक्षं च 'नैव' इति लिखत–

(i) बहुभूमिकभवनाना निर्माणं करणीयम् । ( )

(ii) बृहन्मात्रं नदीजलं तटबन्धं निर्माय एकस्मिन्नेव स्थले न पुञ्जीकरणीयम् ( )

(iii) प्रकृतेः असन्तुलनाय प्रयासो विधेयः। ( )

(iv) प्रकृतेः सन्तुलनाय प्रयासो विधेयः। ( )

(v) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि महाविनाशम् उपस्थापयन्ति। ( )

(vi) भूकम्पशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायः ( )

[illegible]

क. भूकम्पपरिचयः

भुवः कम्पनं भूकम्पः इति कथ्यते। सः बिन्दुः भूकम्पस्य उद्गमकेन्द्रं कथ्यते यस्मात् बिन्दोः कम्पनस्य उत्पत्तिर्जायते। धरातलोपरि सः एव बिन्दुः भूकम्पस्य अधिकेन्द्रम् इत्युच्यते। ततः कम्पनतरङ्गरूपेण विविधदिक्षु अग्रेसरति। एताः तरङ्गा सर्वासु दिक्षु तथैव विस्तृताः भवन्ति यथा कस्मिंश्चित् शान्तसरोवरे पाषाणखण्डक्षेपणेन तरङ्गाः उत्पद्यन्ते।

पृथिव्याः धरातले कानिचित् क्षेत्राणि एतादृशानि सन्ति यत्र भूकम्पाः प्रायेणैवागच्छन्ति। उदाहरणार्थम् प्रशान्तमहासागरं परितः प्रदेशाः, हिमालयप्रदेशः गङ्गाब्रह्मपुत्रोपत्यकाः च। एतेषु क्षेत्रेषु अनेकशः भूकम्पाः आगताः येषु केचन तु अत्यधिकाः भयावहाः विनाशकारिणः च आसन्।

क. भूकम्पविषये प्राचीनमतम्

प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्वग्रन्थेषु भूकम्पोल्लेखः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पाः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म यथा – वराहसंहितायाम् –

क्षितिकम्पमाहुरेके महान्तर्जलनिवासिसत्त्वकृतम्
भूभारखिन्नदिग्गजनिःश्वाससमुद्भवं चान्ये।
अनिलोऽनिलेन निहितः क्षितौ पतन् सस्वनं करोत्यन्ये
केचित् त्वदृष्टकारितमिदमन्ये प्राहुराचार्याः।।

मयूरचित्रे

कदाचित् भूकम्प श्रेयसेऽपि कल्पते। एतादृशाः अपि उल्लेखाः अस्माकं साहित्ये समुपलभ्यन्ते यथा वारुणमण्डलमौशनसे –
प्रतीच्यां यदि कम्पेत वारुणे सप्तके गणे,
द्वितीययामे रात्रौ तु तृतीये वारुणं स्मृतम्।
अत्र वृष्टिश्च महती शस्यवृद्धिस्तथैव च
प्रजा धर्मरताश्चैव भयरोगविवर्जिताः।।

मयूरचित्रे

उल्काभूकम्पदिग्दाहसम्भवः शस्यवृद्धये।
क्षेमारोग्यसुभिक्षायै वृष्टये च सुखाय च।
भूकम्पसमा एव अग्निकम्पः, वायुकम्पः, अम्बुकम्पः इत्येवमऽन्येऽपि भवन्ति।

दशमः पाठः

शुकनासोपदेशः

(प्रस्तुत पाठ बाणभट्ट–विरचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश खण्ड से संकलित है। यहाँ महाकवि बाण द्वारा युवराज पद पर अभिषिक्त होने के ठीक पूर्व राजकुमार चन्द्रापीड का शुकनास के पास आना तथा शुकनास के शब्दों में राजकुमार को युवावस्था सहित अनेकों प्रकार के लक्ष्मीमदों से सावधान रहने के लिए दिए गए उपदेशों का अत्यन्त ही सुन्दर एवं जीवनोपयोगी वर्णन प्रस्तुत किया गया है।)

अथ समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं समागतं चन्द्रापीडं शुकनासः सविस्तरमुवाच – "तात चन्द्रापीड ! विदितवेदितव्यस्य अधीतशास्त्रस्य ते नाल्पमपि उपदेष्टव्यमस्ति, परं लक्ष्मीमदः परमदारुणोऽयम्। अभिनवयौवनत्वम्, अप्रतिमरूपत्वम् अमानुषशक्तित्वंचेति महतीयंखल्वनर्थपरम्परा सर्वा। अविनयानाम् एकैकम् अपि एषाम् आयतनं किमुत समवायः। अतः भवादृशाः अपि भवन्ति भाजनानि उपदेशानाम्।"

गुरूपदेश्च नाम पुरुषाणाम् अखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानं विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि ते तेषामुपदेष्टारश्च । आलोकयतु तावत् लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं लक्ष्मीः न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति न कुलक्रमम् अनुवर्तते न शीलं पश्यति न धर्ममनुरुध्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति।

कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च समारोपितसंस्कारः तथापि तरल हृदयम् अप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि, भवद्‌गुण सन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्। इदमेव च पुनः पुनः अभिधीयते। विद्वांसमपि सचेतनमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं खलीकरोति लक्ष्मीरिति। सवर्था कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौवराज्याभिषेकमङ्‌गलम् इति।
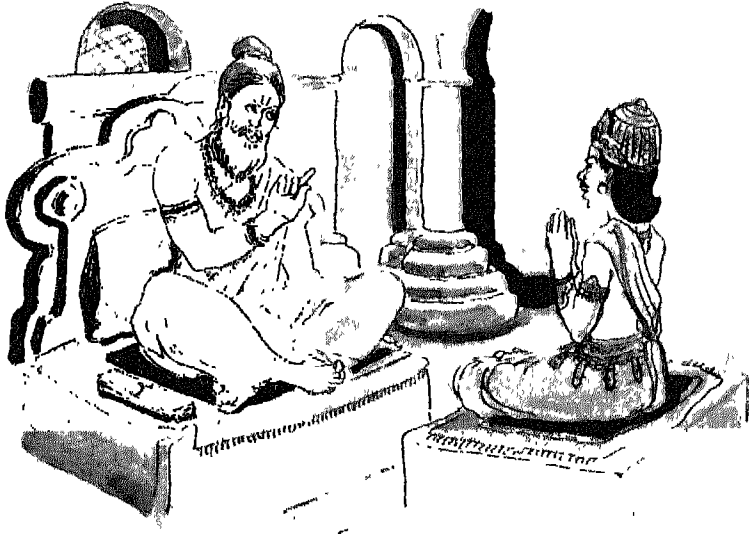
उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडः ताभिः उपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, स्वच्छीकृत इव, पवित्रीकृत इव, प्रीतहृदयो मुहूर्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम।

आगतम्	–	प्राप्तम्	–	पहुँचे हुए, आए हुए
विदितवेदितव्यस्य	–	ज्ञातशास्त्राभिप्रायस्य	–	शास्त्रो का अर्थ जिसे ज्ञात है उसका
अधीतसर्वशास्त्रस्य	–	पठितानि सर्वशास्त्राणि येन तस्य	–	जिसने समस्त शास्त्र पढ लिए हैं, उसका
उपदेष्टव्यम्	–	उपदेशयोग्यम्	–	उपदेश देने योग्य, कहने योग्य
दारुणः	–	भयावहः	–	भयंकर
अप्रतिमरूपत्वम्	–	अद्वितीय सौन्दर्यम्	–	अनूठा सौन्दर्य
अप्रतिबुद्धम्	–	बोधरहितम्	–	नादान, नासमझ
मदयन्ति	–	मदं जनयन्ति	–	अभिमान उत्पन्न करते है
मुखरीकृतवान्	–	वक्तुं प्रवर्तितवान्	–	बोलने के लिए प्रेरित किया है
वाग्भिः	–	वचनै.	–	वचनो के द्वारा
प्रक्षालित इव	–	धौत इव	–	धुला हुआ सा
प्रीतहृदयः	–	प्रसन्नहृदयः	–	प्रसन्न मन वाला
अविनयानाम्	–	अशिष्टतानाम्	–	अशिष्टताओ, अशालीनताओ का
आयतनम्	–	गृहम्	–	घर
समवायानाम्	–	समूहानाम्	–	समूहो का
अखिलमलप्रक्षालनक्षमः	–	समस्तमनोमालिन्य प्रक्षालने समर्थः	–	समस्त मनोमालिन्य धोने मे समर्थ अन्तःकरण के अंधकार को दूर करने में समर्थ
अजलं स्नानम्	–	जलरहितं स्नानम्	–	बिना जल का स्नान
विरलाः	–	अल्पसंख्यकाः	–	कम सख्या में
आलोकयतु	–	पश्यतु	–	देखिए
शीलम्	–	आचारम्	–	आचरण
वैदग्ध्यम्	–	निपुणताम्, विज्ञताम् कुशलताम्	–	विद्वत्ता को

- राजा तारापीड· चन्द्रापीडं युवराजपदे अभिषेक्तुम् इच्छति।
- शुकनासः स्वसमीपम् आगत चन्द्रापीडम् उपदेशयति।
- ऐश्वर्यशालिनः राजानः कदाचित् लक्ष्मीमदेन मदोन्मत्ता. स्वकर्तव्यं विस्मरन्ति अत शुकनास. चन्द्रापीडं प्रति लक्ष्म्या. दोषान् वर्णयति।
- गुरूपदेशेन प्रीतहृदयः चन्द्रापीड. स्वभवनं गच्छति।

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकैनैव पदेन वदत–

   क आस्मिन् पाठे कः कम् उपदेशयति ?

   ख. परमदारुणः कः भवति ?

   ग. कः पुरुषाणाम् अखिलमलप्रक्षालनक्षम. भवति ?

   घ. का परिचयं न रक्षति ?

   ङ. इय लक्ष्मीः विद्वांसमपि सचेतनमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषं किं करोति ?

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

   क. गुरूपदेश. कीदृशं स्नानम् कथितम् ?

   ख. धनानि कम् मदयन्ति ?

   ग लक्ष्मी कम् कम् खलीकरोति ?

   घ. चन्द्रपीडस्य क· गुण. शुकनासम् उपदेशाय मुखरीकृतवान् ?

   ङ. उपशान्तवचसि शुकनासे कीदृशः चन्द्रापीड. स्वभवनमाजगाम ?

2. क. उदाहरणमनुसृत्य 'त्व' प्रत्ययं पृथक् कृत्वा लिखत–

   यथा – अभिनवयौवनत्वम् अभिनवयौवन + त्व प्रत्यय

   (i) अप्रतिमरूपत्वम् ________

   (ii) अमानुषशक्तित्वम् ________

(iii) महत्त्वम् ____________

(iv) ईश्वरत्वम् ____________

ख. उदाहरणमनुसृत्य 'तल्' प्रत्ययं योजयित्वा लिखत–

यथा – विशेषज्ञ + तल् = विशेषज्ञता

____________ + ____________ = सरलता

उदार + तल् = ____________

____________ + ____________ = पूर्णता

स्वतत्र + तल् = ____________

____________ + ____________ = पवित्रता

ग. 'च्वि' – प्रत्ययः – अकृतम् (अभूततद्भावे च्वि) कृतम् करोति इत्यर्थे

यथा – अखल, खलं करोति इति खलीकरोति

एवमेव –

अकृष्णं कृष्णं करोति इति ____________

अमुखरं मुखर करोति इति ____________

अनिपुणं निपुण करोति इति ____________

____________________ इति स्वच्छीकरोति

____________________ इति पुष्टीकरोति

____________________ इति पवित्रीकरोति

3. तत्पदं रेखाङ्कितम् कुरुत–

क यत् नपुंसकलिङ्गे नास्ति –

आयतनम्, अल्पम्, अयम्, उपदेष्टव्यम्

ख यत्र 'क्त'–प्रत्ययः नास्ति –

आगतम्, तातम्, श्रुतम्, आलोकितम्

ग यत्र तृतीया विभक्तिः न प्रयुक्ता

पित्रा, प्रकृत्या, उपशान्तवयसि, वाग्भि.।

4. समुचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत–

क विदितवेदितव्यस्य ____________ ते न अल्पमपि उपदेष्टव्यमस्ति ।

ख. ____________ चेति महती इय खलु अनर्थपरम्परा।

ग कामं भवान् ____________ धीरः पित्रा च समारोपितसंस्कारः।

घ इय लक्ष्मी न वैदग्ध्य ———— । न श्रुत ———— ।

ङ. उपशान्तवचसि ———— चन्द्रापीडः पवित्रीकृत इव ———— आजगाम्।

5. **अधोलिखितवाक्यनि उचितघटनाक्रमेण पुनः लिखत–**

क. शुकनासः चन्द्रापीडं प्रथमं लक्ष्मीमेव आलोकयितुं कथयति।

ख. शुकनासोपदेशेन पवित्रीकृत इव चन्द्रपीडः प्रीतहृदय. स्वभवनमाजगाम।

ग. शुकनासः स्वोपदेशे गुरूपदेशस्य महत्त्वम् उद्भावयति।

घ. शुकनास समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं चन्द्रापीडं प्रति सविस्तरमुवाच।

ङ शुकनास. चन्द्रापीड प्रति लक्ष्म्याः दोषान् वर्णयति।

6. **मञ्जूषायां 'दत्तानां शब्दानां साहाय्येन शुकनासस्य विषये पञ्चवाक्येषु एकम् अनुच्छेदं लिखत–**

राज्ञः तारापीडस्य पुत्रः सर्वशास्त्राणा ज्ञाता, युवा, अद्वितीय सौन्दर्यम्, सर्वगुणसम्पन्नः, शुभचिन्तकः

7. **उदाहरणाम् अनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि रचयत–**

विदितं वेदितव्यं येन सः – विदितवेदितव्यम्

अधीत शास्त्र येन स. ————————

अप्रतिमं रूपं यस्य सः ————————

समुपस्थितः यौवराज्याभिषेक. यस्य सः ————————

योग्यताविस्तार

कविपरिचयः

महाकविः बाणभट्टः संस्कृत–गद्य साहित्यस्य अप्रतिम. कविरस्ति। तस्य वाचि साक्षात् सरस्वत्या निवासः आसीत्। अत एव एषा सूक्तिः प्रसिद्धा जाता–वाणी बाणो बभूव। संस्कृतवाङ्मये अधिकतरं साहित्यं पद्यमयमेवासीत् परन्तु महाकवि बाणभट्टेन प्रशस्तं रचनाद्वयं विधाय एका नूतना धारणा स्थापिता यत् "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" इति। कविवरेण बाणभट्टेन विरचतौ द्वावेव ग्रन्थौ – 'हर्षचरितम् कादम्बरी च ख्यातिप्राप्तौ जातौ।

ग्रन्थपरिचयः

ग्रन्थोऽयं कवि–कल्पिते कथानके आधारितः अस्ति।

अस्य कथा एकजन्मना सम्बद्धो न भूत्वा चन्द्रपीडस्य (नायकस्य) तथा पुण्डरीकस्य (तस्य मित्रस्य) जन्मत्रयसम्बद्धा अस्ति। आरम्भे विदिशायाः नृपस्य शूद्रकस्य वर्णनम् अस्ति। शुकः राजानं पूर्वजन्मन. आत्मकथां श्रावयति। तत. चन्द्रपीडस्य तथा तस्य मित्रस्य वैशम्पायनस्य कथा प्रारभ्यते। चन्द्रपीडः दिग्विजयप्रसङ्गे हिमालयं गच्छति तत्रैव कादम्बर्या सह तस्य साक्षात्कार भवति। चन्द्रापीडः पितुरादेशेन उज्जयिन्यां आहूते सति कादम्बर्या. वियोगेन पीडित भवति। अनन्तरं पत्रलेखया कादम्बर्याः कुशलसमाचारं श्रुत्वा प्रसीदति।

भावविस्तारः

यौवनं धनसम्पत्ति. प्रभुत्वमविवेकिता
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।। (पञ्चतन्त्रम्)
वयोरूपं विभूतीनामेकैकं मदकारणम् (महाकवि कालिदासस्य)

एकादशः पाठः

आर्तत्राणाय वः शस्त्रम्

(प्रस्तुत पाठ कविकुलगुरु कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अंक से गृहीत है। इस पाठ में राजा दुष्यन्त के वनप्रवेश की कथा है। राजा दुष्यन्त वन में आखेट करने जाते हैं और जैसे ही एक मृग पर बाणों से संधान करने के लिए प्रत्यंचा खींचते हैं वैसे ही एक ब्रह्मचारी सामने आकर राजा को रोकते हुए कहता है – हे राजन् ! रुको ! आश्रम में शिकार वर्जित है। राजा का शस्त्र तो दीनदुखियों की आततायियों से रक्षा के लिए एवं शत्रुओं के विनाश के लिए होता है न कि निरपराध वन्य जीवों के विनाश के लिए।)

(ततः प्रविशति मृगानुसारी सशरचापहस्तो राजा सूतश्च)

सूतः – (राजानं मृगं चावलोक्य) आयुष्मन् !

कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके।
मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्।।

राजा – सूत ! दूरमधुना सारङ्गेण वयमाकृष्टाः। अयं पुनरिदानीमपि –

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा

पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।।

(सविस्मयम्) तदेष कथमनुपततः एव मे प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तः।

सूतः – आयुष्मन् ! उद्घातिनी भूमिरिति मया रश्मिसंयमनाद् रथस्य मन्दीकृतो वेगः। तेन मृग एष विप्रकृष्टान्तरः संवृत्तः। सम्प्रति समदेशवर्तिनस्ते न दुरासदो भविष्यति।

राजा – तेन हि मुच्यन्तामभीषवः।

सूतः – यदाज्ञापयत्यायुष्मान्।

राजा – (सहर्षम्) सत्यम्। नूनमतीत्य हरितो हरींश्च वर्तन्ते वाजिनः। तथा हि–

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत्।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो –
र्न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्।।

सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानम् (इति शरसन्धानं नाटयति)

(नेपथ्ये)

भो भो राजन् ! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

सूतः – (आकर्ण्यावलोक्य च) आयुष्मन् ! अस्य खलु ते बाणपथवर्तिनः कृष्णसारस्यान्तरे तपस्विन उपस्थिताः।

राजा – (ससंभ्रमम्) तेन हि प्रगृह्यन्तां वाजिनः।

सूतः – तथा (इति रथं स्थापयति)

(ततः प्रविशति वैखानसः।)

वैखानसः –(हस्तमुद्यम्य) राजन् ! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे तूलराशाविवाग्निः।
क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते।।

तत् साधुकृतसंधानं प्रतिसंहर सायकम्।
आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि।।

राजा — एष प्रतिसंहृतः (इति यथोक्तं करोति।)

वैखानसः —सदृशमेतत् पुरुवंशप्रदीपस्य भवतः।
जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवं गुणोपेतं चक्रवर्तिनमाप्नुहि।।

आर्तत्राणाय	— दुःखितानां रक्षणाय	— दु:खियों की रक्षा के लिए
वः	— युष्माकम् (पुरुवंशिराज्ञाम्)	— तुम्हारा
सूतः	— सारथिः	— सारथि, रथ चलाने वाला
कृष्णसारे	— मृगविशेषे	— कृष्णसार जाति के विशेष प्रकार के हरिण पर
अधिज्यकार्मुके	— आरोपितं गुणं धनुर्येन तस्मिन्	— धनुष पर बाण चढ़ाए हुए पर

चक्षुः ददत्	– दृष्टिपात कुर्वन्	– दृष्टिपात करते हुए
पिनाकिनम्	– महादेवम्	– शिव को
सारङ्गेण	– मृगेण	– हिरण द्वारा
अनुपतति	– पश्चात् आगच्छति	– पीछे आ रहे
ग्रीवाभङ्गाभिरामम्	– ग्रीवायाः परिवर्तनेन मनोहरं जातम्	– गर्दन को मोडने से सुन्दर लग रहे
मुहुः	– पुनः पुनः	– बार-बार
स्यन्दने	– रथे	– रथ पर
भूयसा	– बहुतरेण	– अत्यधिक
पूर्वकायम्	– शरीरस्य पूर्वभागम्	– शरीर के अगले हिस्से में (पिछले हिस्से को समेटता हुआ)
दर्भैः	– कुशैः	– कुशो से
अर्धावलीढैः	– अपूर्णचर्वितैः	– आधी चबाई हुई
श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः	– धावनपरिश्रमेण उद्घाटितात् मुखात् पतद्भिः	– दौड़ने के श्रम के कारण हुई थकावट से खुले मुख से गिरी हुई
कीर्णवर्त्मा	– व्याप्तमार्गः	– रास्ते को व्याप्त करता हुआ
उदग्रप्लुतत्वात्	– उन्नतप्लवनात्	– ऊँची कूद के कारण
वियति	– आकाशे	– आकाश में
स्तोकम्	– न्यूनम्	– थोड़ा
उर्व्याम्	– पृथिव्याम्	– पृथ्वी पर
उद्घातिनी	– विषमा	– ऊँची-नीची, ऊबड-खाबड
सविस्मयम्	– साश्चर्यम्	– बड़े आश्चर्य के साथ
प्रयत्नप्रेक्षणीयः	– काठिन्येन दर्शनीयः	– कठिनाई से दृष्टिगोचर होने योग्य
रश्मिसंयमनात्	– अभीषूणाम् आकर्षणात्	– लगामो के खीचने से
विप्रकृष्टान्तरः	– अतिदूरवर्ती	– बहुत दूर तक खींचा चला आया है।
सम्प्रति	– अधुना	– अब
समदेशवर्तितः	– समतलभूमौ स्थितः	– समतल भूमि पर स्थित
दुरासदः	– दुःखेन प्राप्यः इति	– जो कठिनाई से प्राप्त हो।
अभीषवः	– प्रग्रहाः	– लगाम
मुच्यन्ताम्	– शिथलीक्रियन्ताम्	– ढीली कर दें

अतीत्य	– अतिक्रम्य	– अतिक्रमण करके
हरीन्	– इन्द्रस्य अश्वान्	– इन्द्र के घोडों को
हरितः	– आदित्यस्य अश्वान्	– सूर्य के घोडो को
वाजिनः	– अश्वा.	– घोडे
आलोके	– दर्शने	– देखने में
विपुलताम्	– विशालताम्	– विशाल रूप को
कृतसंधानम्	– अविभक्तम्	– जुड़ी हुई
वक्रम्	– कुटिलम्	– टेढा
समरेखम्	– अकुटिलरेखम्	– सीधा (प्रतीत होता है)
पार्श्वे	– समीपे	– पास मे
रथजवात्	– रथवेगात्	– रथ के तेज चलने के कारण
व्यापाद्यमानम्	– हन्यमानम्	– मारे जाते हुए को
नाटयति	– अभिनयं करोति	– अभिनय करता है
शरसन्धानम्	– बाणस्य आरोहणम्	– बाण चढाने (का)
हन्तव्यः	– व्यापादयितव्य.	– मारा जाना चाहिए / मारने योग्य
बाणपथवर्तिनः	– बाणचालनस्य मार्गे स्थिताः	– बाण चलाने के मार्ग में स्थित
संसभ्रमम्	– विचलतया	– घबराहट के साथ
प्रगृह्यन्ताम्	– रश्मयः रुन्ध्यन्ताम्	– लगामो को रोकिए
वैखानसः	– तपस्वी	– तपस्वी
उपयम्य	– उद्यम्य	– उठाकर, रोककर
सन्निपात्यः	– मोक्तव्यः	– छोडना, गिराना चाहिए
मृदुनि	– सुकोमले	– कोमल पर
तूलराशौ	– कार्पाससमूहे	– कपास के ढेर पर
हरिणकानाम्	– अतिचंचलम्	– बहुत चंचल
निशितनिपाताः	– तीक्ष्णप्रहाराः	– तीखे प्रहार वाले
वज्रसाराः	– वज्रतुल्यकठोराः	– वज्र के समान सुदृढ, कठोर
साधुकृतसन्धानम्	– सम्यक्तया विहित धनुष्यारोपणं यस्य तम्	– अच्छी प्रकार के धनुष पर चढाए हुए (बाण) को
अनागसि	– निरपराधे	– निरपराध पर
प्रतिसंहृतः	– प्रत्यावर्तितः	– रोक लिया गया है
गुणोपेतम्	– गुणैः युक्तम्	– गुणवान्
आप्नुहि	– लभस्व	– प्राप्त करो

- राजा दुष्यन्तः आखेटाय सशरचापहस्त वनं प्रविशति।
- मृगमनुसरन् राजा आश्रमपदम् आगच्छति।
- राजा स्वघोटकाना तुलनाम् इन्द्रस्य अश्वैः सह करोति।
- तापसकुमार राजानं मृगवधात् निवारयति स्मारयति च "आर्तत्राणाय वः शस्त्रम् न च हन्तुम् अनागसि।"

1. **एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत--**
   क. कः मृगं हन्तुम् उद्यतः अस्ति ?
   ख. उद्घातिनी भूमिं दृष्ट्वा सूतेन कथं रथवेगः मन्दीकृतः ?
   ग. मृदुनः मृगशरीरस्य तुलना केन सह कृता ?
   घ क. राजान मृगवधात् वारयति ?

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत--**
   क. उदग्रप्लुतत्वात् मृग. कीदृशः प्रतिभाति ?
   ख. हरिणकानां जीवितं कीदृशं कथितम् ?
   ग. राज्ञ. शस्त्र कुत्र प्रहर्तुं न भवितव्यम्।
   घ. पुरोर्वंशे कस्य जन्म आसीत् ?
   ङ. शराः कीदृशा. कथिताः ?
2. **उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत--**

क यथा-- चक्षुस्त्वयि = चक्षुः + त्वयि

(i) समदेशवर्तिनस्ते = ________ + ________

(ii) ________ = शराः + ते

ख. यथा-- पुनरिदानीम् = पुन. + इदानीम्

(i) मुहुरनुपतति = ________ + ________

(ii) ________ = भूमिः + इति

(iii) दर्भैरर्धावलीढैः = ________ + ________ + ________

(iv) ________ = पुरोः + वंशे

ग. यथा– पश्च + अर्धेन = पश्चार्धेन

(i) ———— + ———— = प्लुतत्वाद्वियति

(ii) यत् + आलोके = ————

(iii) ———— + ———— = यद्वक्रम्

3. क. अधोलिखितानि कथनानि कः कस्य कृते कथयति ?

		कः	कस्य कृते
क	आयुष्मन् ! उद्घातिनी भूमिरिति मया रथस्य वेगः मन्दीकृत.।	————	————
ख.	तेन हि मुच्यन्तामभीषवः।	————	————
ग	सदृशमेतत् पुरुवशप्रदीपस्य भवतः।	————	————
घ.	एषः प्रतिसहृतः।	————	————
ङ.	आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यः न हन्तव्यः	————	————

4. ख. उदाहरणमनुसृत्य पदरचनां कुरुत–

यथा– क तेन प्रकारेण **तथा**

ख. येन प्रकारेण ————

ग. अन्येन प्रकारेण ————

घ. सर्व प्रकारेण ————

ङ उभयेन प्रकारेण ————

5. स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि ?

क. **मया** रश्मिसंयमनात् रथस्य वेगः मन्दीकृत.। ....

ख. न **मे** दूरे किंचित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्। ....

ग. सूत । पश्य **एनं** व्यापाद्यमानम्। ....

घ सदृशमेतत् **भवतः**। ....

ङ. यथा **त्वया** उक्तं तथा प्रतिसंहृत. एष.। ....

6. पाठमाधृत्य अधोलिखितश्लोकानाम् अन्वयेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–

क. कृष्णसारे ———— त्वयि च चक्षुः ———— मृगानुसारिण साक्षात् ———— पश्यामि इव।

ख. रथजवात् यत् ———— सूक्ष्मं तत् सहसा विपुलतां ————, यत् अर्धे विच्छिन्नं तत् ———— भवति, यत् प्रकृत्या वक्रं तत् अपि ———— समरेखम्, क्षणम् अपि ———— न मे दूरे न पार्श्वे अस्ति।

ग. अस्मिन् मृदुनि ———— तूलराशौ अग्निरिव अयं बाण. न खलु न खलु ————। बत ! क्व हरिणकानाम् अतिलोलं ———— क्व च निशितनिपाताः ———— ते शरा।

घ. यस्य ———— पुरोः लय इदं ————, एवं गुणोपेतम् ———— पुत्रम् अवाप्नुहि।

7. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च निर्देशानुसारं परिवर्तयत–
   - क. त्व चक्रवर्तिनं पुत्रम् आप्नुहि। (बहुवचने)
   - ख. स यथोक्त करोति। (द्विवचने)
   - ग. वयं सारङ्गेण आकृष्टाः। (एकवचने)
   - घ. राजा शरसन्धानं नाटयति। (बहुवचने)
   - ङ. सूत. रथं स्थापयति। (द्विवचने)

कविपरिचयः

कालिदासः संस्कृतवाङ्मये कविशिरोमणिः वर्तते। तस्य विषये कथितम् –

"पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव।।"

तस्य जन्मकाल. ईसापूर्वं प्रथमशताब्दी सिध्यते। तेन लिखिताः सप्तग्रन्था· सन्ति येषां विभाजनम् एवं क्रियते –

द्वे महाकाव्ये – • कुमारसंभवम्
• रघुवंशम्

द्वे गीतिकाव्ये – • ऋतुसंहारम्
• मेघदूतम्

त्रीणि नाटकानि – • मालविकाग्निमित्रम्
• विक्रमोर्वशीयम्
• अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थपरिचयः

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' महाकविकालिदासस्य विश्वविख्याता रचना वर्तते। अस्मिन् नाटके सप्ताङ्काः सन्ति। अत्र दुष्यन्तशकुन्तलयोः प्रणय–गाथा वर्णिता।

प्रस्तुतपाठांश. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटकस्य प्रथमाङ्कात् सकलितः। पुरुवंशी राजादुष्यन्त आखेटाय वनात् वनम् आगच्छन् ऋषिकण्वस्य आश्रमे प्रविशति। सः आश्रमस्य मृगं हन्तुं प्रयतते पर एकः तपस्वी तं निवारयति कथयति च – "राज्ञां शस्त्रं आर्तत्राणाय न तु विनाशाय।" तद् वचन श्रुत्वा राज्ञा स्वशस्त्र प्रतिसह्वतम्। येन प्रसन्नः जातः वैखानस. तस्मै चक्रवर्तिनं पुत्रस्य प्राप्तेः आशीर्वादं ददाति।

भावपक्षः

आर्तानामिह जन्तूनामार्तिच्छेद करोति यः।
शङ्खचक्रगदाहीनो द्विभुजः परमेश्वर.।।

पुरुवंशः – प्राचीनकाले भारतस्य राज्ञां वशद्वयम् आसीत् – सूर्यवंशः चन्द्रवशश्च। विवस्वत. पुत्र· ईक्ष्वाकुः सूर्यवंशस्य संस्थापकः आसीत्। अत्रे· पुत्र सोम. चन्द्रवंशस्य संस्थापकः आसीत्। एतयोः उभयोः वशयोः दत्तौ वंशवृक्षौ दृश्यताम् –
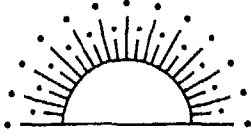
सूर्यवंशस्य वंशवृक्षः

चन्द्रवंशस्य वंशवृक्षः

अत्रि.
सोम.
↓
बुधः
↓
पुरुरवा
↓
आयुः
↓
नहुष.
↓
ययाति.
↓
(तस्य पञ्चपुत्रेषु द्वौ प्रसिद्धौ)

↓

↓ पुरु. (पुरुवंश.)

↓ यदुः (यदुवशः)

अस्मिन्नेव पुरुवंशे कालान्तरे चक्रवर्तीसम्राट् दुष्यन्तः सबभूव।

अस्मिन्नेव यदुवंशे कालान्तरे भगवान्विष्णु. कृष्णरूपेण अवतीर्ण·।

भावविस्तार

1. सन्निपात्य : सम् + नि + पत् + णिच् + यत्

   यत् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति। अत्र तकारस्य लोपः भवति।

   यथा– क. अस्माभिः सुपात्राय दान देयम्।

   ख. पिपासितेन जलं पेयम्।

   ग. सर्वै सावधानैः भूत्वा राष्ट्रगान गेयम्

2. अनागसि अविद्यमानम् आग यस्मिन् तस्मिन्।

   आगः = अपराधः

   अनाग. = निरपराध.

   अत्र "अनागस्" शब्दस्य सप्तमी एकवचनम् अस्ति।

3 हरित हरींश्च = हरित् शब्दस्य अर्थः सूर्यस्य अश्वा.।

   हरि शब्दस्य अर्थ. इन्द्रस्य अश्वाः।

   निरुक्ते उक्तम् – "हरी इन्द्रस्य हरित आदित्यस्य।

   अतएव सूर्यस्य 'हरिदश्वः' इन्द्रस्य च 'हरिहयः' कथ्यते।

द्वादशः पाठः

(अन्योक्ति अर्थात् किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा प्रत्यक्ष रूप में करने की अपेक्षा किसी अन्य को माध्यम बनाकर करना। कवि की ऐसी ही अभिव्यक्ति को अन्योक्ति कहते हैं जहां किसी प्रतीक या बहाने से किसी के गुण की प्रशंसा या दोष की निन्दा की गई होती है। ये उक्तियाँ बड़ी मार्मिक होती हैं। प्रस्तुत पाठ में इसी प्रकार की सात अन्योक्तियों का सङ्कलन प्रस्तुत किया गया है। जिनके द्वारा राजहंस, कोकिल, बादल, मालाकार, सरोवर तथा चातक के माध्यम से सांसारिक प्राणियों को सद्वृत्तियों एवं सत्कर्मों की प्रेरणा दी गई है।)

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।
न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना।।1।।

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता-
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि।
रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः।।2।।

तावत् कोकिल विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन्।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति ।।3।।

तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाघे
मालाकार व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन।। 4।।

आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गा
भृङ्गा रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।
सङ्कोचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु।। 5।।

आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त–
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा
रिक्तोऽसि यज्जलद ! सैव तवोत्तमा श्रीः।। 6।।

एक एव खगो मानी वने वसति चातकः।
पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्।। 7।।

[illegible]

सरसः	–	तडागस्य	–	तालाब का
बकसहस्रेण	–	बकानां सहस्रेण	–	हजारों बगुलों से
परितः	–	सर्वतः	–	चारों ओर
तीरवासिना	–	तटनिवासिना	–	तटवासी के द्वारा
कोकिल	–	हे पिक !	–	हे कोयल
विरसान्	–	रसहीनान्, नीरसान्	–	रसहीनों को

यापय	–	व्यतीत कुरु	–	बिताओ
वनान्तरे	–	अन्यस्मिन् वने	–	दूसरे वन मे
मिलदलिमालः	–	भ्रमरपंक्त्यायुक्तः	–	भँवरों के पक्ति से युक्त
रसालः	–	आम्रः	–	आम का वृक्ष
समुल्लसति	–	प्रफुल्लो जायते	–	प्रफुल्लित होता है
आश्वास्य	–	परितोष्य	–	संतुष्ट करके
पर्वतकुलम्	–	पर्वतानां कुलम् , गिरिसमूहम्	–	पहाडो के समूह को
तपनोष्णतप्तम्	–	सूर्यस्य तापेन तप्तम्, सूर्यतापसन्तप्तम्	–	सूरज की गर्मी से तपे हुए को
उद्दामदावविधुराणि	–	उन्नतकाष्ठरहितानि	–	ऊँचे काष्ठो (वृक्षों) से रहित को
नानानदीनदशतानि	–	नानाः नद्यः, नदाना शतानि च	–	अनेक नदियो और सैकडों नदों को
मृणालपटली	–	मृणालसमूहः	–	कमलनाल का समूह
निपीतानि	–	निःशेषेण पीतानि	–	भलीभाँति पिए हुए
अम्बूनि	–	जलानि	–	पानी
नलिनानि	–	कमलानि	–	कमलो को
भविता	–	भविष्यति	–	होगा
कृतोपकारः	–	कृत. उपकारः येन स॰	–	प्रत्युपकार किया हुआ
तोयैः	–	जलैः	–	जलो के द्वारा
भीमभानौ	–	भीमः भानुर्यस्मिन् स. (निदाघः)	–	भीषण सूर्य से युक्त (ग्रीष्मकाल में)
निदाघे	–	ग्रीष्मकाले	–	अत्यधिक ग्रीष्मकाल मे
मालाकार	–	हे मालाकार !	–	हे माली !
प्रावृषेण्येन	–	अतिवृष्टिकारकेण	–	अत्यधिक वर्षा करने वाले के द्वारा
वारिदेन	–	जलदेन	–	बादल के द्वारा
धारासारान्	–	धाराणाम् प्रवाहान्	–	धाराओ का प्रवाह
वाराम्	–	जलानाम्	–	जलों के

विश्वतः	—	सर्वतः	—	चारो ओर
विकिरता	—	(जल) वर्षयता	—	(जल) बरसाते हुए
आपेदिरे	—	प्राप्तवन्तः	—	प्राप्त कर लिया
अम्बरपथम्	—	आकाशमार्गम्	—	आकाश–मार्ग को
पतङ्गाः	—	खगाः	—	पक्षी
भृङ्गाः	—	भ्रमराः	—	भँवरें, भौंरे
रसालमुकुलानि	—	आम्रमञ्जरीः	—	आम की मंजरियो को
अञ्चति	—	गच्छति	—	जाने पर
सङ्कोचम् अ चति	—	सङ्कोचं गच्छति, शुष्के जाते	—	संकुचित होने पर या सूख जाने पर
मीनः	—	मत्स्यः	—	मछली
पुरन्दरम्	—	इन्द्रम्	—	इन्द्र को
मानी	—	स्वाभिमानी	—	स्वाभिमानी

- सरोवरस्य यादृशी शोभा राजहसेन विद्यते तादृशी बकाना सहस्रेणापि न भवति।
- हे कोकिल ! तावत् त्वम् अन्यस्मिन् वने दिवसान् यापय यावत् आम्रवृक्षः न समुल्लसति।
- हे जलद ! तप्त पर्वतकुल समाश्वास्य, उन्नत–वृक्षरहितानि वनानि, अनेकनदीः, नदशतानि च जलैः पूरयित्वा त्वम् अधुना रिक्तो जातः। इदमेव त्वदीय वैशिष्ट्यम्।
- हे राजहस ! यस्मात् सरोवरात् त्वया कोमलानि मृणालानि भक्षितानि, सुन्दराणि कमलानि सेवतानि, मधुराणि जलानि च पीतानि, स्वकीयेन केन कर्मणा तस्योपकाराणां प्रत्युपकारं करिष्यसि।
- हे मालाकार ! त्वया आतपे अल्पैरपि जलै करुणया वृक्षस्य यथा पुष्टिः कृता तथा जलदेन वारिधाराप्रवाहेणापि न सम्भवति।
- सरसि शुष्के सति पतङ्गाः (खगाः) आकाशपथं गच्छन्ति, भ्रमराः रसालमञ्जरीः आश्रयन्ते पर दीनो मीन कां गतिं प्राप्नोतु इति चिन्तनीयं वर्तते।
- पिपासितो मानी चातको पानाय जलं केवलं इन्द्रं याचते सः प्राणान् त्यजति परम् अन्यत् जल न गृह्णाति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **एकेनैव पदेन उत्तरं वदत–**

    क. सरसः शोभा केन भवति ?

    ख. मृणालपटली केन भुक्ता ?

    ग. भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते ?

    घ पतङ्गाः कम् आपेदिरे ?

    ङ. चातकः कं याचते ?

    च. कः खगः मानी भवति ?

लिखितः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

    क. कोकिलः कदा पर्यन्तं वनान्तरे वसति ?

    ख. कानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति ?

    ग. राजहंसेन कस्य अम्बूनि पीतानि कानि च निषेवितानि ?

    घ. मालाकारः कया भावनया कस्य च पुष्टिम् करोति ?

    ङ. मानिनि चातके किं वैशिष्ट्य वर्तते ?

    च. मीनः कदा दीनां गतिं प्राप्नोति ?

2. **अधोलिखितानां श्लोकांशानां उचितं मेलनं कुरुत–**

अ	ब
(i) एकेन राजहंसेन	(क) सैव तवोत्तमा श्रीः
(ii) यावन्मिलदलिमालः	(ख) च पूरयित्वा
(iii) रिक्तोऽसि यज्जलद ।	(ग) भीमभानौ निदाघे
(iv) नानानदीनदशतानि	(घ) कोऽपि रसालः समुल्लसति
(v) भुक्ता मृणालपटली	(ङ) या शोभा सरसो भवेत्
(vi) तोयैरल्पैरपि करुणया	(च) वने वसति चातक
(vii) एक एव खगो मानी	(छ) भवता निपीतानि

3. अधोलिखितपदेभ्यः प्राक् पाठमाश्रित्य उपयुक्तविशेषणपदानि लिखत–

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि
________	बकसहस्रेण
________	दिवसान्
________	श्री
________	निदाघे
________	तोयैः
________	मीनः
________	गतिम्
________	खगः

4. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–

क. यथा– अन्य + उक्तयः = अन्योक्तयः
(i) ________ + ________ = तवोत्तमा
(ii) तपन + उष्णतप्तम् = ________
(iii) ________ + ________ = कृतोपकारः

ख. यथा– पिपासितः + अपि = पिपासितोऽपि
(i) ________ + ________ = कोऽपि
(ii) रिक्तः + असि = ________
(iii) ________ + ________ = मीनोऽयम्

ग. यथा– सरसः + भवेत् = सरसो भवेत्
(i) ________ + ________ = पिपासितो वा
(ii) खगः + मानी = ________
(iii) ________ + ________ = मीनो नु

घ यथा– मुनिः + अपि = मुनिरपि
(i) तोयैः + अल्पैः = ________
(ii) ________ + ________ = अल्पैरपि
(iii) तरोः + अस्य = ________

5. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि कुरुत–

	विग्रहपदानि	समस्तपदानि
यथा–	नीलं च तत् कमलम्	= नीलकमलम्
(i)	राजा चासौ हंसः च	= ________ ________
(ii)	भीमः चासौ भानुः च	= ________ ________
(iii)	अम्बरमेव पन्थाः	= ________ ________
(iv)	उत्तमा चेयम् श्रीः	= ________ ________

6. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत–

	प्रत्ययान्तपदानि	= प्रकृतिः + प्रत्ययः
यथा–	निपीतम्	= नि + पा + क्त
(i)	भुक्ता	= ________ + ________
(ii)	रिक्तः	= ________ + ________
(iii)	पिपासितः	= ________ + ________
(iv)	निषेवितम्	= ________ + ________
(v)	कृतः	= ________ + ________

7. पाठमनुसृत्य अधोलिखितमूलशब्दानां यथानिर्दिष्टेषु विभक्तिवचनेषु रूपाणि लिखत

	मूलशब्दाः	विभक्तिवचने	शब्दरूपाणि
यथा–	राजहस	तृतीयैकवचने	राजहसेन
क.	विरस	द्वितीयाबहुवचने	________
ख.	करुणा	तृतीयैकवचने	________
ग.	तरु	षष्ठ्यैकवचने	________
घ.	तोय	तृतीयैकवचने	________
ङ	सरोवर	षष्ठ्यैकवचने	________
च.	भानु	सप्तम्यैकवचने	________
छ.	तीरवासिन्	तृतीयैकवचने	________

अन्योक्तिविलासः

पाठपरिचयः

अन्येषां कृते या उक्तयः कथ्यन्ते ता उक्तयः अत्र पाठे सङ्कलिता वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे तृतीयश्लोकम् अतिरिच्य ये श्लोकाः सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य "भामिनीविलासः" इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। तृतीयः श्लोकः महाकविमाघस्य रचना वर्तते।

कविपरिचयः

पण्डितराज जगन्नाथः संस्कृतसाहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च कविः आसीत् 'शाहजहाँ' नामक देहलीस्थ नृपः स्वज्येष्ठं पुत्रं दाराशिकोहं पाठयितुं जगन्नाथम् आमन्त्रितवान्। पण्डितराजजगन्नाथस्य त्रयोदशाः कृतयः प्राप्यन्ते। ते च सन्ति (1) गङ्गालहरी (2) अमृतलहरी (3) सुधालहरी (4) लक्ष्मीलहरी (5) करुणालहरी (6) आसफविलासः (7) प्राणाभरणम् (8) जगदाभरणम् (9) यमुनावर्णनम् (10) रसगङ्गाधरः (11) भामिनीविलासः (12) मनोरमाकुचमर्दनम्, तथा (13) चित्रमीमांसाखण्डनम्। एतेषु ग्रन्थेषु 'भामिनीविलासः' इति प्रमुखं गीतिकाव्यम्।

महाकविमाघः – महाकविमाघस्य एका एव कृतिः प्राप्यते "शिशुपालवधम्" इति।

अधोदत्तानि विविधविषयकाणि श्लोकानि अपि पठनीयानि स्मरणीयानि

हंस –

हंसः श्वेतः बकः श्वेतः को भेदो बकहंसयोः।
नीरक्षीरविभागे तु हंसो हंसः बको बकः।।

एकमेव पर्याप्तम् –

एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम्।
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति रासभी।।

पिकः –

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

कृतघ्न –

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च चोरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता लोके कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।।

चातकवर्णनम् –

यद्यपि सन्ति बहूनि सरांसि,
स्वादुशीतलसुरभिपयांसि।
चातकपोतस्तदपि च तानि,
त्यक्त्वा याचति जलदजलानि।।

(i) अव्ययपदानि पठनीयानि स्मरणीयानि च

क पतङ्गाः अम्बरपथं **परितः** समाश्रयन्ते।

ख. हे कोकिल ! **तावत्** विरसान् दिवसान् यापय **यावत्** रसालः समुल्लसति।

ग. त्वया **यत्र** नलिनानि निषेवितानि।

घ. अल्पैः **अपि** तोयैः निदाघे तरोः पुष्टिः भवति।

ङ एक **एव** चातकः वने वसति।

उपरिदत्तेषु वाक्येषु अव्ययपदानि रेखाङ्कितानि। अव्ययस्य लक्षणं वर्तते ।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

(ii) अकारान्तपुल्लिङ्गं शब्दानां सम्बोधन पदं ध्यानेन पश्यन्तु अवगच्छन्तु च –

क हे कोकिल !

ख. हे जलद !

ग. हे राजहंस !

घ हे मालाकार !

सकारान्तपदानां सम्बोधनम् इत्थं भविष्यति।

क. हे सरस् ! (सरः !)

ख. हे नभस् ! (नभः !)

ग. हे पयस् ! (पयः !)

(iii) क्तिन् प्रत्ययः

क. अन्येभ्यः कथिताः **उक्तयः** अन्योक्तयः कथ्यन्ते। (वच् + क्तिन्)

ख सर्वे विश्व**शान्तिम्** इच्छन्ति। (शम् + क्तिन्)

ग. हे प्रभो ! मे **सन्मतिः** दीयताम्। (मन् + क्तिन्)

घ. भामिनीविलासः पण्डितराजजगन्नाथस्य **कृतिः** अस्ति। (कृत् + क्तिन्)

नियमः (i) क्तिन् प्रत्ययस्य प्रयोगः भाववाचकसंज्ञापदनिर्माणार्थं भवति।

(ii) धातुभ्यः सह स्त्रीलिङ्गे 'क्तिन्' प्रत्ययः भवति।

(iii) 'क्तिन्' प्रत्ययस्य 'ति' इति शेषः तिष्ठति।

(iv) 'पथिन्' शब्दस्य रूपं पठतु स्मरतु च।

विभक्तयः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थान
द्वितीया	पन्थानम्	"	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि.
चतुर्थी	पथे	"	पथिभ्य
पञ्चमी	पथः	"	"
षष्ठी	"	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	"	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थान

परिशिष्टम्

अ

अकुर्वतः	–	न कुर्वतः नञ् तत्पु. कृ + शतृ, प., ष वि ए व। न करते हुए।
अखण्डिता	–	न खण्डिता नञ् तत्पु स्त्रीलि प्र वि, ए. व। परिपूर्णा। परिपूर्ण।
अखिल मल– प्रक्षलनेक्षमः	–	समस्त मनोमालिन्यप्रक्षालने समर्थ। समस्त मनोमालिन्य को धोने में समर्थ।
अञ्चति	–	अञ्च् + शतृ (सप्त. ए व)। गच्छति। जाने पर।
अजायत	–	जन् + लङ् प्र. पु. ए व, उत्पन्नः अभवत्, पैदा हुआ।
अतीत्य	–	अति + इण् + ल्यप् अव्य। अतिक्रम्य। अतिक्रमण करके।
अधिज्यकार्मुके	–	पुं स वि. ए व। धनुष चढाए हुए पर।
अधीतसर्वशास्त्रस्य	–	पठितानि सर्वशास्त्राणि येन, तस्य, बहुव्री। जिसने सभी शास्त्र पढ लिए हैं उसका।
अध्यात्मगौरवम्	–	अध्यात्मं च तत् गौरवम्, कर्मधारय, आध्यात्मिक महत्त्वम्। आध्यात्मिक महत्त्व को।
अनागसि	–	अनागस्, स वि एक. व। निरपराधे। निरपराध पर।
अनार्येण	–	न आर्येण, नञ् तत्पु, तृ वि ए व, दुष्टेन। दुष्ट के द्वारा।
अनुगन्तव्यम्	–	अनु + गम् + तव्यत्, नपु, प्र वि ए व। अनुसर्तव्यम् अनुसरण करने योग्य
अनुपतति	–	अनु + पत् + शतृ + सप्त वि, ए व। पश्चात् आगच्छति। पीछे आ रहे।
अनुपमः	–	नास्ति उपमा यस्य स बहुव्री. (विशे), अतुलनीय। अद्वितीय।
अनुव्रजन्ति	–	अनु + व्रज् + लट् प्र पु ब व। अनुगच्छन्ति। पीछे–पीछे जाते हैं।
अनृण्यम्	–	न ऋण्यम्, नञ् तत्पु। ऋणस्य अभावः। ऋणरहितता।

अपकर्षणम्	–	अप + कृष् + ल्युट्, नपु प्र वि ए व। दूरीकरणम्। खीचकर दूर करना।
अपरिक्लेश:	–	न परिक्लेशः, नञ् तत्पु, पु प्र वि, ए व। कष्टाभाव। दुःख का अभाव।
अप्रतिबुद्धम्	–	अ + प्रति + बुध् + क्त, द्वि वि ए व। बोधरहितम्। नादान, नासमझ।
अप्रवासी	–	न प्रवासी, नञ् तत्पु, अप्रवासिन् पु प्र वि ए. व। प्रवासरहित, अपने स्थान (घर) पर ही निवास करने वाला।
अभिहितम्	–	अभि + धा + क्त, नपु., प्र वि ए व.। कथितम्। कहा गया है।
अभीतवासः	–	न भीतवास, नञ् तत्पु, पु प्र वि ए व। निर्भयं वास.। निडर होकर रहना।
अभीषवः	–	अभीषु, पु प्र वि ब व, प्रग्रहा, लगाम।
अभ्यन्तरे	–	अभि + अन्तरे, स ए व। अन्तःकरणे। अपने अन्दर।
अरयः	–	अरि, पु. प्र वि ब व। शत्रव। शत्रु,दुश्मन।
अर्थसम्बन्धः	–	अर्थस्य सम्बन्धः, ष तत्पु, पु प्र वि ए व। धनस्य सम्बन्ध। धन का सम्बन्ध।
अर्दयन्ति	–	अर्द् + लट्। प्र पु ए. व। अर्दनं कुर्वन्ति। कुचल डालते हैं।
अर्धावलीढैः	–	अर्धानि अवलीढानि, तैः, विशे. अपूर्णचर्वितैः। आधी चबाई हुई।
अवगम्यते	–	अव + गम् + यक्+ ते। प्र पु ए व। ज्ञायते। जाना जाता है।
अवधार्या	–	अव + धृ + णिच् + ल्यप्, विशे, स्त्री प्र वि ए व। धारयितव्या। धारण की जानी चाहिए।
अवसीदति	–	अव + सीद् + लट् प्र पु ए व, दुःखी भवति। दुःखी होता है।
अवाचयत्	–	वच् + णिच्, लङ्, प्र पु ए व। अपाठयत्। पढवाया।
अवाप्स्यते	–	अव + आप् + लृट्, प्र पु ए व। लप्स्यते। प्राप्त की जाएगी।
अविनयानाम्	–	न विनयः, तेषाम नञ् तत्पु, पु ष वि. ब व। अशिष्टतानाम। अशिष्टताओं का।
अविप्रवासः	–	अ + वि + प्र + वस् + घञ्, पु प्र वि ए व। विदेशे न वास। अन्य देश मे वास न करना।
अश्मा	–	अश्मन्, पु., प्र वि ए व। पाषाण। पत्थर।
अश्वत्थे	–	अश्वत्थ, पु, स वि ए व.। पिप्पले। पीपल वृक्ष पर।
अलम्	–	अव्य, समर्थ। योग्य।

अलीकम् — अव्य, नपु, असत्यम्। झूठ।

असकृत् — न सकृत्, नञ् तत्पु। अनेकश। अनेक बार।

आ

आकर्ण्य — आ + कर्ण् + ल्यप्। श्रुत्वा। सुनकर।

आदाय — आ + दा + ल्यप्। गृहीत्वा। लेकर।

आदितः — आदि + तसिल्, प्रारम्भत। शुरू से।

आदिदेश — आ + दिश् + लिट्, प्र पु ए व। आज्ञापयत्। आदेश दिया।

आपेदिरे — आ + पद् + लिट् प्र पु ब. व। प्राप्तवन्त। प्राप्त कर लिया।

आप्नुहि — आप् ~ लोट, म पु ए व। लभस्व। प्राप्त करो।

आरोहति — आ + रुह् + लट्, प्र पु ए व। उपरि गच्छति। ऊपर जाता है।

आर्तत्राणाय — आर्तानाम् त्राणाय, ष तत्पु पु च. वि ए व। दुःखितानां रक्षणाय। दुःखियो की रक्षा के लिए।

आश्वास्य — आ + श्वस् + ल्यप्। अव्यय। परितोष्य। सन्तुष्ट करके।

आसाद्य — आ + सद् + णिच् + ल्यप्, अव्यय, प्राप्य, गत्वा, पहुँचकर

आहूय — आ + ह्वे + ल्यप्, अव्यय, आकार्य, बुलाकर।

उ

उच्चतरम् — उच्च + तरप् विशे, उन्नततरम्। (दो मे से) अधिक ऊँचा।

उच्छलन्तीभिः — उत् + छल् + शतृ, स्त्री तृ वि ब व। उछलती हुई।

उत्खाताः — उत् + खन् + क्त पु प्र. वि ब व। उत्पाटिता। उखाड दिए गए।

उत्सङ्गे — पु, स वि ए व। क्रोडे, अङ्के। गोद मे।

उत्सिक्तः — उत् + सिच् + क्त, पु प्र. वि ए व.। गर्वोद्धत। गर्व से उद्धत।

उद्घातिनी — नतोन्नता भूमि। ऊबड-खाबड धरती।

उदग्रप्लुतत्वात् — उदग्र च प्लुतत्व च तस्मात् प. वि ए. व.। उन्नतप्लवनात्। ऊँचे उछलने के कारण।

उद्यम्य — उठाकर।

उपसृत्य — उप + सृ + ल्यप्, समीप गत्वा। पास जाकर

उरगः — उरसा गच्छति। पु प्र वि ए व। सर्प। साप।

उवाच — वच् + लिट् प्र पु ए व। अवदत्, अकथयत्। बोला, कहा।

ऊ

ऊचुः	–	वच् + लिट् प्र. पु. ब. व.। अवदन्। बोले
उर्व्याम्	–	उर्वी स्त्रीलि., स. वि. ब. व.। पृथिव्याम्। पृथ्वी पर

ए

एकरूपता	–	एकरूप + तल्, स्त्रीलि, प्र वि. ए व। ऐक्यम्। समरूपता। एकरूपता।

क

कदर्थितम्	–	विशे. नपु. प्र. वि. ए. व.। तिरस्कृतम्। अपमानित।
कन्था	–	कम् + थन् + टाप् स्त्री प्र वि ए. व। जीर्ण वस्त्रम्। पुराना कटा फटा वस्त्र।
कर्णिकारः	–	संज्ञा, पु, प्र. वि ए व। पुष्प विशेषः। कनेर, कनैल।
करतलध्वनिना	–	करतलस्य ध्वनि तेन, ष तत्पु., पुं तृ वि. ए. व.। हस्ततलस्य शब्देन। ताली की आवाज से।
करी	–	करिन्, पुं प्र वि. ए व। गज.। हाथी।
करेणुः	–	पु. प्र. वि ए. व.। हस्तिनी। हाथी।
क्रन्दनविकलम्	–	क्रन्दनेन विकलम्, वि. तत्पु, नपुं प्र वि ए. व.। रोदनेन आकुलितम्। क्रन्दन से व्याकुल।
कीर्णवर्त्म	–	कीर्णं वर्त्म येन स, बहुव्री, पुं. प्र वि ए व। व्याप्तमार्ग। रास्ते को व्याप्त करता हुआ।
कुशाग्रबुद्धिः	–	कुशाग्रा बुद्धि यस्य स बहुव्री विशे तीक्ष्णबुद्धि। तेज बुद्धिवाला।
कूपखननम्	–	कूपस्य खननम् ष तत्पु नपु। प्र वि ए व। कूपस्य खननम्। कूआँ खोदना।
कृतोपकारः	–	कृत उपकारः येन स.। पुं प्र वि ए व। जिसने प्रत्युपकार किया है।
कृत्स्नम्	–	विशे नपु प्र वि ए व.। सम्पूर्णम्। सम्पूर्ण।
कृतसन्धानम्	–	कृत सन्धान येन तत् बहुव्री नपुं. प्र. वि ए. व। अविभक्तम्। जुडी हुई।
कृष्णसारे	–	पुं स. वि. ए. व.। मृगविशेष। कृष्णासार जाति के विशेष प्रकार के हिरण पर।
कोपयति	–	कुप् + णिच् + लट्, प्र पु ए. व। क्रोधयति। क्रोधित करता है।
क्लमः	–	क्लम + घञ्, पुं. प्र. वि ए व। श्रमजनित शैथिल्यम्। थकान।
क्वथयति	–	क्वथ् + णिच्, लट्, प्र पु ए व। उत्तप्त करोति। उबालती है। तपाती है।
क्षुत्क्षामकण्ठा	–	क्षुधया क्षामाः कण्ठाः येषां ते, बहुव्री, पु प्र वि. ब व। भूख से पीडित कण्ठ वाले।
क्षुपे	–	क्षुप, पु, स वि ए. व। पादपे। पौधे मे।

ग

ग्रीवाभङ्गाभिरामम् — ग्रीवाया भङ्गः तेन अभिरामम्, ष तत्पु पु द्वि वि ए व, ग्रीवाया परिवर्तनेन मनोहर जातम्। गर्दन के मोडने से सुन्दर लग रहे।

गुणोपेतम् — गुणै. उपेतम्, तृ तत्पु., गुणै. युक्तम्, गुणों से युक्त।

गुहायाम् — गुहा, स्त्री., स वि. ए व। गह्वरे। गुफा मे।

घ

घोषमुपैति — घोषम् + उपैति, उप + एति, लटलकारे, प्र पु ए व। घोषम् शब्दम् करोति। आवाज करता है।

च, छ, ज

चक्षुः ददत् — चक्षु + दा + शतृ, पु प्र. वि. ए. व। दृष्टिपात कुर्वन्। दृष्टिपात करते हुए।

चिकीर्षुः — कृ + सन् + उधातोर्द्वित्वम्। कर्त्तुम् इच्छुक। करने का इच्छुक।

छुरिकया — छुरिका, स्त्री., तृ वि ए. व। असिधेनुकया। चाकू से।

जगति — जगत्, नपु, स. वि ए व। ससारे। ससार मे।

जराम् — जरा, स्त्री., द्वि. वि. ए. व। वृद्धावस्थाम्। बुढापे को।

जीवन्तु — जीव्, लोट्, प्र पु. ब. व.। प्राणान् धारयन्तु। जीवित हो।

जल्पन्ति — जल्प्, लट्, प्र. पु. ब. व। व्यर्थं वदन्ति। व्यर्थ बोलते हैं।

त

त्याज्यः — त्यज्+ यत् पु. प्र. वि. ए व.। परित्यक्तव्य। छोडने योग्य।

तारस्वरेण — पु तृ. वि ए. व। उच्चस्वरेण। जोर से।

तुरगाः — तुरग, पु प्र. वि. ब व। अश्वाः। घोडे।

तूलराशौ — तूलराशि, पु स वि. ए व.। कार्पाससमूहे। कपास के ढेर पर।

तेपे — तप् + लिट् प्र. पु. ए व.। तपस्याम् अकरोत्। तपस्या करने लगा।

द

दर्भैः — दर्भ, तृ. वि ब व.। कुशैः। कुशों से।

दिष्ट्या — दिश् + क्तिन्, अव्यय। भाग्येन। भाग्य से।

दुरासदः — दूरेण आसदः, तृ तत्पु.। दुष्प्राप्य। जो कठिनाई से प्राप्त हो।

द्वेष्यम् — द्विष् + यत्, विशे., द्वेषयोग्यम्। द्वेष के योग्य।

न

नरपतिक्रोधः – नरपतेः क्रोधः ष तत्पु. प्र वि ए व.। राज्ञः (चन्द्रगुप्तस्य) कोपः। राजा चन्द्रगुप्त का क्रोध।

नाटयति – नट्, णिच्, लट्, प्र पु. ए व। अभिनयं करोति। अभिनय करता है।

निक्षिप्य – नि + क्षिप् + ल्यप्, अव्य। संस्थाप्य। रखकर

निधाय – नि + धृ + ल्यप्, अव्यय। अवधार्य। धारणकर।

निपीय – नि + पा + ल्यप्, अव्यय। पीत्वा। पीकर।

निबोधत – नि + बुध, लोट् म पु बहु. व। जानीत। जानो।

निर्गुणः – निर्गता गुणा यस्मात् स, बहुव्री. विशे. पु प्र. वि ए. व.। गुणहीनः। गुणहीन।

निर्जनम् – जनानाम् अभावः, निर्जनम् अव्ययी, नपुं. प्र वि. ए. व। जनैः रहितम्। सुनसान, एकान्त।

निदाघे – निदाघ पु स. वि. ए व। ग्रीष्मकाले। अत्यधिक ग्रीष्मकाल में।

निवेदयामास – नि + विद् + लिट् प्र पु. ए. व। निवेदनम् अकरोत्। निवेदन किया।

निवेश्य – नि + विश् + ल्यप्, अव्य। स्थापयित्वा। बिठाकर।

निशितनिपाताः – निशितः यः निपातः ते, बहुव्री पु. प्र. वि ब व। तीक्ष्ण प्रहारा। तीखे प्रहार वाले।

निष्क्रम्य – नि. + क्रम् + ल्यप्, अव्य। बहिर्गत्वा। बाहर जाकर।

निष्क्रान्तः – नि. + क्रम् + क्त, पुं. प्र. वि ए व। बहिर्गत, निर्गत.। बाहर निकल गया।

निसर्गः – निसर्ग पुं. प्र. वि. ए. व। प्रकृति। स्वभाव।

निस्सरन्तीभिः – निस् + सृ + शतृ, स्त्री. तृ. वि ब. व। आगच्छन्तीभिः। निकलती हुई।

निहतगौरवम् – निहितं गौरवं यस्य सः, तम्, बहुव्री। नष्टकीर्तिः। जिसका गौरव नष्ट हो गया हो।

नृत्यगीतवादित्राणाम् – नृत्यगीतवादित्रम् नपु ष वि ब. व। नृत्यं च गीत च वादित्र च। तेषाम्, द्वन्द्व नृत्य गीतवादित्राणाम्। नाच–गाने एवं बाजो का।

प

पथ्यस्य – पथिन् + यत् विशे. ष. वि ए व.। हितकारिवचनस्य। लाभकारी वचनों का।

पदाभ्याम् – पद नपुं. तृ च. वि. द्वि. व शब्दाभ्याम्। दो शब्दों द्वारा।

पनसम् – पनस नपुं. प्र. वि. द्वि. वि ए. व। फलविशेषः। कटहल।

परायणम् – परायण पुं. द्वि. वि ए. व। तन्मय। तल्लीन।

परिवर्तित - परि + वृत + णिच् + क्त पु परिवर्तन जातम्। बदल गया।

पर्याकुलम् - परित आकुलम्, परि + आकुलम् यण सन्धि। पर्याकुलम्। नपु ए व। व्याकुलम्। व्याकुल।

पारिजातम् - पारिजातम् नपु, प्र वि ए व। हरसिंगाराख्य पुष्पम। हरसिंगार।

पार्श्वे - अव्यय, समीपे। पास मे।

पिनाकिनम् - पिनाक धनु अस्ति अस्य इति, द्वि वि ए व। महादेवम्। शिवम।

पुम्भिः - पुम्, पु ,तृ वि ब व । पुरुषै। पुरुषो के द्वारा।

पूर्वकायम् - शरीरस्य पूर्वभागम्। शरीर केअगले हिस्से में (पिछले हिस्से को समेटता हुआ)।

पूर्वाग्रहः - पूर्व चासौ आग्रह, कर्मधारय। पूर्वनिर्धारितविचार । पहले किए गए हल को।

पौराणाम् - पुरे भवा इति पौरा। तेषाम् ष वि ब व। नगरवासिनाम्। नगर निवासियों के।

प्रगृह्यन्ताम् - प्र + ग्रह + यक् + लोट् प्र पु. ब. व.। रश्यम रुन्ध्यन्ताम्। लगामे खींचिए।

प्रचीयन्ते - प्र + चि + यत, प्र वि ब व। वृद्धि प्राप्नुवन्ति। बढते हैं।

प्रच्छादनम् - प्र + छद् + ल्युट्। निगूहनम्। छिपाया जाना।

प्रतिक्रिया - प्रति + क्रिया स्त्री प्र वि ए व। प्रतिकारम्। उपाय।

प्रतिप्रियम् - पु द्वि वि. ए व, प्रत्युपकारम्। उपकार के बदले मे प्रत्युपकार।

प्रतिसंहृतः - प्रति + सम् + हृ + क्त। प्रत्यावर्तित.। रोक लिया गया है।

प्रथाम् - प्रथा स्त्री द्वि वि ए व। प्रसिद्धिम्। प्रसिद्धि।

प्रदीप्ते - प्र + दीप् + क्त स वि ए. व। ज्वलिते। जलने पर।

प्रभृतय. - प्रभृति पु. प्र वि. ब व। इत्यादय.। इत्यादि।

प्रयत्नपेक्षणीयः - प्रयत्नेन प्रेक्षणीय (प्र + ईक्ष् + अनीयर्) पु प्र वि ए व.। काठिन्येन दर्शनीय। कठिनाई से दृष्टिगोचर।

प्रष्टव्याः - प्रच्छ् + तव्यत्, पु प्र वि ब व। प्रष्टुम् योग्या। पूछने योग्य।

प्रावृषेण्येन - प्रावृषेण्य पु तृ वि ए व , अतिवृष्टिकारकेण। अत्यधिक वर्षा करने वाले से।

प्रीताभ्यः - प्रीता स्त्री च प वि. ब व। प्रसन्नाभ्य। प्रसन्न।

ब

बत - बत अव्य., खेदे। खेदवाचक अव्यय

बाणपथवर्तिनः - बाणपथवर्तिन् प्र वि ब व। बाणचालनस्य मार्गे स्थिता. बाण चलाने के मार्ग मे स्थित।

बीभत्सम् – बीभत्स पु द्वि. वि ए व । भयावहम्। भयानक।
बृहत्यः – बृहती स्त्री, प्र. वि बहु. व । महत्य । विशाल, बडी।

भ

भक्त्या – भज् + क्तिन् स्त्री तृ वि. ए. व । श्रद्धया। श्रद्धापूर्वक।
भविता – भू + लुट् प्र पु. ए. व । भविष्यति। होगा
भाषितम् – भाष् + क्त, नपु., प्र वि. ए. व । कथितम्। कही हुई बात।
भिद्यन्ते – भिद् + यक् प्र पु. ब व । पृथक् भवन्ति। अलग होते हैं।
भूयसा – भूयस् तृ वि ए. व.। बहुतरेण। अत्यधिक

म

मद्वचः – मत् + वचः, वचस् नपु प्र वि. ए. व । मम वचनम्। मेरे वचन।
मणिकारश्रेष्ठिनम् – मणिकारस्य श्रेष्ठिनम् ष तत्पु सुवर्ण व्यापारिणम्। सोने के व्यापारी को।
मन्दारवृक्षे – मन्दारवृक्ष पु स. वि ए व । तरुविशेषे। मन्दार के वृक्ष पर।
महद्भिः – महत् पुं तृ वि. ए. व.। महापुरुषै.। महापुरुषो द्वारा।
महाप्लावनम् – महत् च तत् प्लावनम्, कर्मधारय। विशाल बाढ।
महोदधौ – महान् च असौ उदधिः, तस्मिन्। कर्मधा. पु. स. वि ए. व । महासागरे। महासागर पर।
मुच्यन्ताम् – मुच् + यक् + लोट् प्र पु ब व । शिथिली क्रियन्ताम्। ढीली कर दें।
मुमोच – मुच् लिट् प्र. पु ए व.। न्यक्षिपत्। स्थापितवान्। डाल दिया, रख दिया।
मुहुः – अव्य, पुन. पुन.। बार–बार।
मृजया – मृजा स्त्री तृ. वि ए. व । मार्जनेन, स्नानकृतशुद्ध्या। जल द्वारा शुद्धि से।
मृणालपटली – मृणालस्य पटली ष. तत्पु, प्र. वि. ए. व । मृणाल समूहः। कमलनाल का समूह।
मृदुनि – मृदु – विशे स. वि. ए. व । सुकोमले। कोमल

य

यास्यति – या + लृट् प्र पु. ए व । गमिष्यति। जाएगा, जाएगी।
यूथिका – सज्ञा, स्त्री., प्र वि. ए. व । यूथी, जूही। पुष्प विशेष।
योक्त्रयित्वा – युज् + ष्ट्रन + णिच् + क्त्वा, अव्यय, बद्ध्वा। बाँधकर।
योगक्षेम – अप्राप्तस्य प्राप्तिः योग । योगस्य रक्षण क्षेम । अप्राप्त की प्राप्ति योग और प्राप्त का रक्षण क्षेम है।

र

रथजवात्	--	रथस्य जव, ष तत्पु पु, प वि ए व । रथवेगात् । रथ के वेग से।
राजापथ्यकारिणः	--	राज्ञाम् अपथ्यकारिण, ष, तत्पु, ष वि ए व । नृपापकारकारिण । राजाओं का अहित करने वाला।
रोहते	--	रुह् + लट् प्र पु ए व । प्ररोहति। उगता है।

व

वक्रम्	--	वक्र -- नपु, प्र वि ए व विशे । कुटिलम टेढा।
वज्रसारा	--	वज्रसार, प्र वि ब व, विशे, वज्रतुल्यकठोरा । वज्र के समान कठोर।
वणिज्या	--	वणिज् + यत्, स्त्री, प्र वि ए व । वाणिज्यम्। व्यापार।
वणिजा	--	वणिज् - पु तृ वि ए व । व्यापारिणा। व्यापारी के द्वारा।
वः	--	युष्मद्, सर्व, ष वि ब व । युष्माकम्। तुम्हारा।
वर्त्म	--	वर्त्मन्, नपु, प्र वि ए व । मार्ग । रास्ता।
व्रजन्ति	--	व्रज् + लट्, प्र पु ब व । गच्छन्ति। जाते है।
वशीकुर्वन्	--	वश + च्वि + कृ + शतृ, पु। प्र वि ए व । वशे कुर्वन्। अपने वश मे करते हुए।
वाक्शौण्डीर्यम्	--	वाच शौण्डीर्यम, ष तत्पु, शौण्डीर + ष्यञ्, नपु, प्र वि ए व । वाचिक वीरत्वम्। वाचिक वीरता।
वाचः	--	वाच्, स्त्री, प्र वि ब व.। वचनानि। वाणी।
वाजिनः	--	पु, प्र वि ब व । अश्वा । घाडे।
वायस	--	सज्ञा, पु, प्र वि ए व । काक । कौआ।
विकरता	--	वि + कृ + शतृ तृ वि. ए व जल वर्षयता। जल बरसाते हुए।
विच्छायवदनः	--	विगता छाया यस्य वदनस्य स, बहुव्री, पु प्र वि ए व । मलिनमुख । मुरझाए हुए चेहरे वाला।
विचारयामास	--	वि + चर् + लिट्, प्र पु, ए व । अचिन्तयत्। सोचा, विचार किया।
विज्ञाय	--	वि + ज्ञा + ल्यप्, अव्य, ज्ञात्वा। जानकार।
विदार्य	--	वि + दृ + णिच्। अव्य । विदीर्ण कृत्वा। फाड़कर।
विद्धम्	--	विध् + क्त, नपु, द्वि वि ए व । क्षतम्। विंधा हुआ, घायल।
विधेहि	--	वि + धा + लोट्, म पु ए व । रचय। बनाओ।
विनियुक्तः	--	वि + नि + युज् + क्त, पु प्र वि ए व । अधिकृत । नियुक्त किया गया।

विप्रकृष्टान्तरः — विशेषेण प्रकर्षेण कृष्ट अन्तर, वि + प्र. + कृष् + क्त। अतिदूरवर्ती बहुत दूर तक खीच लाया गया।

विपर्यस्तम् — विपरि + अस्तम्, द्वि वि ए व। अस्तव्यस्तम्। अस्तव्यस्त।

विपुलताम् — विपुल + तल्, स्त्री. द्वि वि ए व.। विशालताम्। विशाल रूप को।

विभवक्षयात् — विभवस्य क्षय, तस्मात् ष तत्पु धनाभावात्। धन के अभाव के कारण।

विमृद्नीयात् — वि + मृद्, विधिलङ् प्र पु ए व., मर्दयेत्। मालिश करना चाहिए।

वियति — वियत्, नपु. स. वि. ए. व। आकाशे। आकाश में।

विरञ्चिः — पुं. प्र. वि ए व.। ब्रह्मा।

विवदमानौ — वि + वद् + शानच्, पु, प्र. वि द्वि व। कलह कुर्वन्तौ। झगड़ते हुए।

विशदयद्भिः — तृ. वि ब व। विस्तारयद्भि.। विस्तार करते हुए।

विशीर्णाः — वि. + श्रृ + क्त प्र. वि ब. व.। नष्टा.। बिखर गए।

विहस्य — वि + हस् + ल्यप्, अव्य.। हसित्वा। हँसकर।

वीक्ष्य — वि + ईक्ष् + ल्यप्, अव्य.। विलोक्य, दृष्ट्वा। देखकर।

वृत्तेन — वृत् + क्त, तृ वि. ए व। सदाचारेण। सदाचार से।

वेत्ति — विद् + लट्, प्र पु, ए. व.। जानाति। जानता है।

वेश्मनि — वेश्मन्, स. वि ए. व. (नपु) गृहे। घर में।

वैनतेयः — विनतायाः अपत्यम्, विनता + ढक्, पु. प्र. वि ए. व, गरुड.। गरुड।

वैखानसः — पु, प्र वि. ए. व। तपस्वी। तपस्वी।

व्यापाद्यमानम् — वि + आ + पद + णिच् + शानच्। पु द्वि वि. ए. व.। हन्यमानम। मारे जाते हुए को।

श

शङ्कनीयः — शङ्क + अनीयर्, पुं., प्र वि ए व। सन्देहास्पदः। शङ्का के योग्य।

शय्यातः — शय्या + तसिल्, पं. वि. ए. व.। पर्यङ्कात्। विस्तर से।

शरसंधानम् — शरस्य संधानम्, ष, तत्पु। वाणस्य आरोहणम्। बाण चढाने का।

श्येनः — श्येन, पु., प्र वि ए. व। हिंसक प्रवृतिक (पक्षिविशेषः) वाज।

श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः — धावनपरिश्रमेण उद्घाटिताल् मुखात् पतद्भि, दौड़ने के श्रम के कारण हुई थकावट से खुले मुख से गिरी हुई।

स

सख्यम् — सखि + यत वि नपु प्र वि ए व। मैत्री। मित्रता।

सताम् — सत् पु ष वि ब व। सज्जनानाम। सज्जनों का।

सधियः — धिया सहित, तृ. तत्पु विशे पु प्र वि ब व। बुद्धिमन्त। बुद्धिमान।

सन्निपात्यः — सम् + नि + पत + यत्, पु प्र वि ए व। मोक्तव्य। छोडना चाहिए।

सन्निहिता — सम् + नि + धा + क्त + टाप्, स्त्री प्र वि ए व। समीप स्थित। समीप ही रहती है।

समदेशवर्तिनः — समदेशे वर्तिन स तत्पु पु प्र वि ब व। समतल भूमौ स्थित। समतल भूमि पर स्थित।

समरेखम् — समा रेखा यस्य तम बहुव्री द्वि वि ए व। अकुटिलरेखम। सीधा प्रतीत होता है।

समर्पय — सम् + अर्प + लोट म पु ए व। देहि। दो।

समर्प्य — सम् + अर्प् + ल्यप् अव्य। दत्वा। देकर।

समवायाः — पु प्र वि ब व। समूहा। समूह।

सम्प्रति — सम् + प्रति अव्ययपद। अधुना। अब।

संबोध्य — सम् + बुध् + ल्यप् अव्य। बोधयित्वा।

संभ्रमम् — भ्रमेण सहितम् तृ तत्पु, विचलतया। घबराहट के साथ।

संव्यवहाराणाम् — सम् + व्यवहार पु ष वि ब व। व्यापाराणाम्। व्यापारो का।

समानशीलव्यसनेषु — समान शील व्यसन च तेषु स तत्पु समाचरणस्वभावेषु। एक जैसे आचरण और स्वभाव वालों मे।

समुल्लसति — सम् + उत् + लस् लट् प्र. पु ए व। प्रफुल्लो जायते। प्रफुल्लित होता है।

साधितम् — साध् + क्त नपु प वि ए व। कृतम्। कर दिया गया।

साधुकृतसंधानम् — साधुरूपेण कृत सधान येन। तम् बहुव्री। सम्यक्तया विहित। ठीक तरह से धनुष पर चढ़ाए हुए बाण को।

सारंगेण — सारग पु. तृ वि ए व.। मृगेण। हिरण द्वारा।

सुप्रतिष्ठितः — सुष्ठु प्रकारेण स्थित, पु प्र. वि ए व। सम्मानित। सम्मानित।

सुमनः सगात् — सुमनस सगात्, प तत्पु प वि ए व। पुष्पाणा संसर्गात्। फूलों के सग से।

सुहृदाम् — सुष्ठु हृदय यस्य स, सुहृत् बहुव्री. सु + हृत् ष. वि. ब. व। मित्राणाम। मित्रों की।

सेतुः – सेतु पु प्र वि ए ५ । बन्धः । पुल, बाँध।

सौधम् – सौध, पु. द्वि वि ए. व । श्वेतप्रासादम् धवलगृहम्। सफेद महल।

स्तोकम् – अव्ययपद न्यूनम्। थोडा।

स्थिरत्वम् – स्थिर + त्व अव्य.। स्थायित्वम्। स्थिरता को।

स्थौल्यम् – स्थूल + ष्यञ्, नपु, प्र. द्वि वि ए. व.। अति मांसलत्वम्। मोटापा।

स्मारयति – स्मृ + णिच् लट् प्र. पु ए व.। स्मरण कारयति। याद करवाता है।

स्यन्दने – स्यन्दन नपु स वि ए व । रथे। रथ पर।

स्वज्ञानगरिम्णा – स्वज्ञानस्य गरिम्णा, तृ. तत्पु । गरिमन् नपुं तृ वि ए व.। स्वज्ञानस्य गौरवेण। अपने ज्ञान के गौरव से।

स्विन्नगात्रस्य – स्विन्न गात्र यस्य तस्य बहुव्री पुं ष वि ए. व., स्वेदेन सिक्तस्य। पसीने से लथपथ शरीर वाले के ।

स्वप्रत्ययावृत्तिः – स्वप्रत्यये आवृत्ति, स तत्पु आ + वृत् + क्तिन्। आत्मविश्वासे सुदृढः। आत्मविश्वास से सुदृढ।

स्ववीर्यतः – स्वस्य वीर्यः, तस्मात् (तसिल्) ष तत्पु. स्वपराक्रमात्। अपने पराक्रम से।

ह

हन्तव्यः – हन् + तव्यत्, पुं, कर्मवाच्य। व्यापादितव्य.। मारने योग्य।

हरिणकानाम् – हरिण + कन् + ष वि ब व । हरिणशावकानाम्। हिरण के बच्चो का।

हरितः – हरित्, द्वि वि. ब. व आदित्यस्य अश्वान्। सूर्य के घोडो को।

हरीन् – हरि, पु., द्वि वि ब व । अश्वान्। घोडो को।